स्वदेश TODAY digital

रांची, रविवार
11.02.2024
वर्ष : 09, अंक : 41, पृष्ठ : 12
मूल्य : 4 रुपया
www.swadeshtoday.com

हिन्दी दैनिक
स्वदेश टुडे
देश की आवाज

कोल इंडिया मैराथन को लेकर तैयारी पूरी, सीसीएल सीएमडी ने कहा...
3

@swadeshtoday | @swadesh_today | swadesh_today | swadesh today | @swadesh_today | 8092174888 | 9031730388

लोकसभा चुनाव 2024 से पहले देश में लागू होगा सीएए : अमित शाह

एजेंसी

नई दिल्ली : भारतीय जनता पार्टी लोकसभा चुनाव की तैयारी में पूरे जोर-शोर से जुट गयी है। इस बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा है कि चुनाव से पहले पूरे देश में नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) लागू किया जायेगा। उन्होंने ये बातें ईटी नाउ ग्लोबल बिजनेस समिट के दौरान कही है। बता दें कि अप्रैल और मई महीने में चुनाव होने की संभावना है। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा - मैं साफ कर देना चाहता हूं कि सीएए किसी भी व्यक्ति की नागरिकता नहीं छीनेगा। इसका उद्देश्य केवल धार्मिक उत्पीड़न का सामना कर रहे पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों को नागरिकता देना है। यह वादा मूल रूप से कांग्रेस ने ही उनसे किया था। उन्होंने विपक्ष पर मुसलमानों को गुमराह करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि हमारे मुस्लिम भाइयों को सीएए को लेकर गुमराह किया जा रहा है और भड़काया जा रहा है। सीएए केवल पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के धार्मिक अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने के लिए है।

चार साल पहले से कानून बनकर है तैयार

बता दें कि हल ही में केंद्रीय मंत्री शांतनु ठाकुर ने दावा किया था कि अगले सात दिन के अंदर ही सीएए लागू कर दिया जायेगा। यह विधेयक दिसंबर 2019 में ही संसद में पास हो गया था। इसके बाद तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भी विधेयक को मंजूरी दे दी और इसके बाद यह कानून बन गया। यह कानून बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के धार्मिक अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने का भी प्रावधान करता है।

कानून लागू होते ही जानें क्या-क्या बदल जायेगा

इस कानून के मुताबिक तीन पड़ोसी देशों, बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आये धार्मिक अल्पसंख्यकों को नागरिकता दी जायेगी। जो लोग 2014 तक किसी प्रताड़ना के चलते भारत आये हैं उनको नागरिकता मिलेगी। इसमें हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई शामिल होंगे। बता दें कि यह विधेयक 2016 में ही लोकसभा में पास हो गया था, लेकिन राज्यसभा में पास नहीं हो पाया था। इसके बाद इसे 2019 में फिर से पेश किया गया। 10 जनवरी 2020 को राष्ट्रपति ने इसे मंजूरी दी थी। उसके बाद दो साल कोरोना का ही प्रकोप रहा। इस कानून के तहत 9 राज्यों के 30 से ज्यादा डीएम को भी विशेष अधिकारक दिये जायेंगे।

मोदी लगायेंगे हैट्रिक, अबकी बार 400 पार : अनुराग ठाकुर

बजट सेशन के अंतिम दिन केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर शनिवार को संसद में भगवा रंग में रंगे नजर आये। उन्होंने एक भगवा रंग की हुडी पहन रखी थी, जिसमें 'नमो हैट्रिक' लिखा हुआ था। केंद्रीय मंत्री ने मीडिया से बातचीत में दावा किया कि प्रधानमंत्री मोदी हैट्रिक लगायेंगे और भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनायेंगे। उन्होंने कहा कि इस बार नरेंद्र मोदी तीसरी बार चुनकर आयेंगे तो देश के गरीबों का और कल्याण करेंगे। लोकसभा चुनाव के बारे में अनुराग ठाकुर ने कहा कि पार्टी गरीबों के कल्याण और देश के विकास को लेकर जनता के बीच में जायेगी। अनुराग ठाकुर ने कहा राम मंदिर हमारे लिये आस्था का केंद्र था, है और रहेगा। राम जी का आशीर्वाद पहले भी था और आगे भी रहेगा। हमने तारीख की घोषणा की और राम मंदिर का निर्माण किया।

अयोध्या में ऐतिहासिक राम मंदिर के निर्माण पर संसद में संकल्प

लोकसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का रामबाण

एजेंसी

नई दिल्ली : राम मंदिर के ऐतिहासिक निर्माण और रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा पर लोकसभा में हुई चर्चा के बाद राम मंदिर से जुड़ा संकल्प सदन में पेश करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि अयोध्या में प्रभु श्री राम का मंदिर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना का प्रत्यक्ष प्रतीक है। बिरला ने सदन में राम मंदिर को लेकर संकल्प पढ़ते हुए कहा कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भगवान राम से जुड़े इस पावन अवसर पर पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने में अतुलनीय भूमिका निभायी है। उन्होंने श्री रामलला के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के अनुष्ठान के लिए पूरे समर्पित भाव से कठिन यम-नियमों का पालन किया। इस दौरान वे नासिक से लेपाक्षी और त्रिप्रयार से लेकर रामेश्वरम तक प्रभु श्रीराम से जुड़े महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों पर भी गये और राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया।

इस यात्रा ने देशवासियों को एक बार फिर विविधता में एकता की अपनी शक्ति का अनुभव कराया है, और इससे एक अद्भुत, आध्यात्मिक चेतना की जागृति समग्र जनमानस में हुई है। प्रस्ताव में कहा गया है कि प्राचीन पावन नगरी अयोध्या में प्रभु श्री राम की जन्मस्थली पर उनके भव्य-दिव्य मंदिर का निर्माण देश के लिए एक ऐतिहासिक और गौरवशाली उपलब्धि है। हम सभी सांसद पूरी एकता, श्रद्धा और भक्तिभाव से इस अवसर पर देशवासियों के उल्लास और उमंग में शामिल हैं, साथ ही इस प्रस्ताव के जरिये इसकी सराहना करते हैं। देश की विकास यात्रा में ये एक अविस्मरणीय क्षण है, जो भारत के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के कण-कण में प्रभु श्री राम, माता सीता और रामायण रचे-बसे हैं। हमारे लोकतांत्रिक मूल्य और सभी के लिए न्याय को समर्पित हमारा संविधान, रामराज्य के आदर्शों से प्रेरित रहा है। रामराज्य का आदर्श पूज्य बापू के भी हृदय में बसा था। ये हमारा परम सौभाग्य है कि हम सभी अयोध्या के मनोहारी मंदिर में रामलला के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के साक्षी बने हैं। अयोध्या में बन रहा प्रभु श्री राम का मंदिर सिर्फ पत्थरों का ढांचा भर नहीं है, बल्कि आस्था और भक्ति के अनंत भावों से परिपूर्ण है।

लोस में बोले पीएम : पांच साल रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म का रहा

संसद के बजट सत्र के आखिरी दिन पीएम मोदी ने मौजूद सभी सांसदों को धन्यवाद दिया और कहा कि आप सब हमारी ही टीम में हैं। पीएम मोदी ने कहा कि हम सबका प्रयास होगा कि हम आने वाले सालों में भारत को एक नये मुकाम तक पहुंचायेंगे। लोकसभा में पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये पांच साल देश में रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म के थे। ऐसा बहुत कम होता है कि रिफॉर्म और परफॉर्म दोनों हो और हम अपनी आंखों के सामने बदलाव देख सकें। देश 17वीं लोकसभा के माध्यम से इसका अनुभव कर रहा है और मेरा दृढ़ विश्वास है कि देश 17वीं लोकसभा को आशीर्वाद देना जारी रखेगा। पीएम मोदी ने कहा कि इन पांच सालों मे हमें बाहर भी काफी सम्मान मिला और शायद यहीं कारण है कि जी-20 जैसे कार्यक्रमों का भारत मेजबानी कर सका।

लोकसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित

लोकसभा की अंतिम बैठक शनिवार को समाप्त हुई और निचले सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गयी। इस 17वीं लोकसभा में कामकाज की उत्पादकता 97 प्रतिशत रही और अनुच्छेद 370 हटाने और महिला आरक्षण से संबंधित कई महत्वपूर्ण विधेयक पारित किये गये। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने 17वीं लोकसभा में बजट सत्र के अंतिम दिन अपने संबोधन में कहा कि इस लोकसभा में 97 प्रतिशत उत्पादकता रही जिसमें विशेष रूप से महिला सांसदों की भागीदारी रही। सदन की बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी और विभिन्न दलों के नेता उपस्थित थे। बिरला ने कहा - यह हमारे लिए गर्व का विषय रहा कि इस सत्र में नारी वंदन विधेयक पारित हुआ...यह महिला सशक्तिकरण में अभूतपूर्व उपलब्धि थी। उन्होंने कहा कि कई ऐतिहासिक विधेयक इस लोकसभा में पारित किये गये। बिरला का कहना था - हमने भारतीय चिंतन को आगे बढ़ाने के लिए कानून पारित किये। उन्होंने कहा कि 17वीं लोकसभा इसलिए भी विशेष है कि भारत के अमृतकाल में संसद के पुराने भवन और नये भवन दोनों में अपने संसदीय दायित्वों को हमने निभाया। उन्होंने कहा कि इस लोकसभा में पहली बार शून्यकाल में सरकार ने सकारात्मक उत्तर देकर नई परंपरा शुरू की।

मुख्यमंत्री ने पलामू पाईपलाईन सिंचाई योजना का किया शिलान्यास

पलामू हरा-भरा रहे, यह राज्य सरकार का लक्ष्य : मुख्यमंत्री

- **परियोजना पर 456 करोड़ 62 लाख 61 हजार रुपये होंगे व्यय**
- **उत्तरी कोयल, औरंगा एवं सोन नदी से आयेगा जल, 31.397 एमसीएम पानी होगा लिफ्ट**

स्वदेश संवाददाता

मेदिनीनगर/पलामू : मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कहा कि पलामू जिला अंतर्गत पलामू पाईपलाईन सिंचाई योजना के पूरा होने से पूरे प्रमंडल के छोटे-बड़े किसान लाभान्वित होंगे। पलामू अक्सर सुखाड़ की चपेट में रहता है। समय पर वर्षा नहीं होने के कारण अथवा कम बारिश के कारण सुखाड़ की स्थिति उत्पन्न होती रही है। हमारी सरकार की सोच है कि पलामू पूर्ण रूप से हरा-भरा रहे इस निमित्त आज एक ऐतिहासिक सिंचाई योजना का शिलान्यास हुआ है। मुख्यमंत्री शनिवार को मेदिनीनगर स्थित शिवाजी मैदान में आयोजित पलामू पाईपलाईन सिंचाई योजना का शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों के खेत-खलिहान में 12 महीना पानी पहुंचायेंगे, इस संकल्प के साथ हमारी सरकार कार्य कर रही है।

आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक उत्थान सरकार की है प्राथमिकता

मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कहा कि आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक उत्थान हमारी सरकार की सोच रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखंड के गरीब, आदिवासी, मूलवासी, दलित, पिछड़े, अल्पसंख्यक सहित सभी वर्ग समुदाय के बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त हो इसके लिये कई महत्वाकांक्षी योजनाओं का संचालन हो रहा है। हमारे बच्चे भी अब उच्च शिक्षा ले सकें, शिक्षा लेने में पैसा बाधा न बने इसके लिये गुरुजी क्रेडिट कार्ड योजना का शुभारंभ हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने राज्य में अब तक 80 उत्कृष्ट विद्यालयों का संचालन किया है। आने वाले समय में बड़ी संख्या में विभिन्न विद्यालयों को उत्कृष्ट विद्यालयों में अपग्रेड किया जायेगा। इन विद्यालयों को अपग्रेड करने का मुख्य उद्देश्य यही है कि अब हमारे बच्चे भी निजी विद्यालयों के अनुरूप सरकारी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर सकें। शैक्षणिक व्यवस्था में नीतिगत निर्णय लेते हुए कई बेहतर कार्य हुए हैं। अब हाई एजुकेशन के लिए आदिवासी, दलित, पिछड़े एवं अल्पसंख्यक के बच्चे भी विदेश के संस्थानों में पढ़ाई करने पहुंच रहे हैं क्योंकि विदेश में पढ़ाई करने का सारा खर्च राज्य सरकार उठा रही है। मरांग गोमके जयपाल सिंह पारदेशीय छात्रवृत्ति योजना के तहत विदेश में पढ़ाई करने वाले बच्चों का सत प्रतिशत स्कॉलरशिप राज्य सरकार वहन कर रही है। पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने जितनी भी योजनाएं राज्य सरकार की ओर से चलायी है वह सभी ग्रामीण परिवेश को ध्यान में रखकर संचालित किया जा रहा है। इस अवसर पर मंत्री सत्यानंद भोक्ता, विधायक मिथिलेश कुमार ठाकुर, विधायक रामचंद्र सिंह, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव विनय कुमार चौबे, जल संसाधन विभाग के सचिव प्रशांत कुमार, पलामू प्रमंडल के आयुक्त दशरथ दास, आईजी पलामू राजकुमार लकड़ा एवं जिले के उपायुक्त, पुलिस अधीक्षक सहित अन्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

सीने में दर्द की शिकायत पर मिथुन अस्पताल में भर्ती

कोलकाता : शनिवार को बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता व भाजपा नेता मिथुन चक्रवर्ती की तबीयत अचानक बिगड़ने के बाद उन्हें कोलकाता के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्हें अचानक सीने में दर्द की शिकायत थी। सूत्रों के मुताबिक अस्पताल में उनकी एमआरआई की गयी। अभिनेता सोहम चक्रवर्ती द्वारा निर्मित फिल्म

पाकिस्तान में नवाज शरीफ-इमरान दोनों ने सरकार बनाने का किया दावा

इस्लामाबाद : पाकिस्तान में आठ अक्टूबर को हुए संसदीय और प्रांतीय चुनावों के लिए मतगणना जारी है। चुनाव से पहले नवाज शरीफ की पार्टी को फ्रंटरनर बताया जा रहा था, लेकिन जेल के भीतर से चुनाव की कमान संभाल रहे इमरान खान ने सभी को चौंका दिया है। पीटीआई के समर्थित उम्मीदवार सबसे आगे चल रहे हैं, लेकिन दिलचस्प यह है कि वोटों की गिनती के बीच ही नवाज शरीफ और इमरान खान की पार्टी दोनों ने ही सरकार बनाने का दावा ठोक दिया है। इमरान की पार्टी के समर्थित उम्मीदवारों ने सेना की पसंद माने जा रहे पीएमएल-एन चीफ नवाज शरीफ की पार्टी को फिलहाल रेस में पीछे छोड़ दिया है। इमरान को जेल में रखने का एक मकसद उन्हें चुनावी दौड़ से दूर रखना भी माना जा रहा था, लेकिन अब तक जितनी भी सीटों के नतीजे सामने आये हैं, उसके मुताबिक उनकी पार्टी के समर्थित उम्मीदवारों की जीत ने सेना के मंसूबों पर पानी फेर दिया है।

सख्ती

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की उपद्रवियों को चेतावनी, बोले -

दंगाइयों पर ऐसी कार्रवाई करेंगे जो मिसाल बनेगी

- **धामी बोले - आरोपियों को बख्शा नहीं जायेगा**

एजेंसी

देहरादून : उत्तराखंड के हलद्वानी में हुई हिंसा के बाद सरकार उपद्रवियों पर सख्त कार्रवाई करने में जुट गयी है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा है कि अराजकता फैलाने वालों पर सरकार ऐसी कार्रवाई करेगी, जो आने वाले समय में नजीर बनेगी। सीएम ने कहा कि इस हिंसा में शामिल दंगाइयों को बख्शा नहीं जायेगा। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्रवाई की जायेगी, जो भविष्य के लिए मिसाल कायम करेगी। सीएम ने अधिकारियों के साथ बैठक में मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दिये हैं। इसके साथ ही इस हिंसा की जांच रिपोर्ट 15 दिनों में पेश करने के लिए कहा है। सीएम ने बैठक में कहा कि जिसने भी कानून तोड़ने का काम किया है कानून उसके साथ सख्ती से काम करेगा। हम दंगाइयों को नहीं बख्शेंगे। सीएम ने सख्त लहजा अख्तियार करते हुए कहा कि जिन्होंने भी देवभूमि उत्तराखंड की शांति और कानून-व्यवस्था को बिगाड़ने का कुत्सित प्रयास किया है, उन्हें किसी भी कीमत पर छोड़ा नहीं जायेगा। दंगाइयों पर सरकार ऐसी कार्रवाई करेगी, जो आने वाले समय के लिए मिसाल बनेगी।

सुनियोजित तरीके से किया गया दंगा

सीएम ने कहा कि देवभूमि की कानून-व्यवस्था को खराब करने के लिए सुनियोजित तरीके से दंगा किया गया। महिला पुलिसकर्मियों पर दंगाइयों ने पथराव किया। कई पत्रकारों को जलाने की कोशिश की गयी। थाने का घेराव कर पुलिसकर्मियों को जिंदा जलाने की भी कोशिश की गयी। अब कानून अपना काम करेगा।

देव भूमि को दैत्यभूमि नहीं बनने देंगे, हल्द्वानी के दोषियों पर हो कठोरतम कार्रवाई : मिलिंद परांडे

उत्तराखंड के हल्द्वानी में हुई हिंसा को गंभीरता से लेते हुए विश्व हिन्दू परिषद के केंद्रीय महामंत्री मिलिंद परांडे ने शनिवार को कहा कि देव भूमि को दैत्यभूमि नहीं बनने देंगे। उच्च न्यायालय के निर्णय के अनुपालन और शासन-प्रशासन के कार्यों में बाधा पहुंचाते हुए ड्यूटी पर तैनात महिला पुलिसकर्मियों के साथ थाने को घेर कर किये गये जानलेवा हमलों से समूचा देश स्तब्ध है। अब समय या गया है कि इन देश विरोधी हिंसक जिहादियों व उनके पैरोकारों के विरुद्ध ऐसी कार्रवाई हो, जिससे इनकी आगे आने वाली पीढ़ी भी हिंसा, उपद्रव या किसी भी प्रकार की तोड़-फोड़ के बारे में सोच भी ना सकें। विहिप महामंत्री ने घटना में जीवन गंवाने वाले निर्दोष लोगों के प्रति अपनी संवेदना तथा घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हुए कहा कि विश्व हिन्दू परिषद उन सभी पुलिसकर्मियों व शासन झ प्रशासन के लोगों के साथ खड़ा है, जो हिंसा का शिकार हुए। यदि आवश्यकता हुई तो विहिप बजरंगदल के कार्यकर्ता घायलों के लिए रक्तदान भी करेंगे।

पंजाब और चंडीगढ़ की सभी लोस सीटों पर अकेले लड़ेगी आम आदमी पार्टी : केजरीवाल

चंडीगढ़ : आम आदमी पार्टी के संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन आईएनडीआईए को झटका देते हुए ऐलान किया कि उनकी पार्टी पंजाब की सभी 13 और चंडीगढ़ की लोकसभा सीट पर अपने दम पर चुनाव लड़ेगी। केजरीवाल शनिवार को पंजाब के खन्ना जिले में राज्य सरकार द्वारा शुरू की गयी मुफ्त राशन वितरण योजना के शुभारंभ के बाद जनसभा को संबोधित कर रहे थे। केजरीवाल ने साफ किया कि आम आदमी पार्टी चंडीगढ़ लोकसभा सीट समेत पंजाब की सभी सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही है। आने वाले दो सप्ताह के भीतर सभी 14 सीटों पर प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया जायेगा।

10 लाख रुपये का इनामी माओवादी ने किया सरेंडर

लातेहार : भाकपा माओवादी का जोनल कमांडर कलटू उर्फ लालदीप गंझू ने शनिवार को पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। लालदीप 10 लाख रुपये का इनामी नक्सली है। इस पर लातेहार जिले के अलावे चतरा और बिहार के विभिन्न जिलों में कई नक्सली कांड से संबंधित मामले दर्ज हैं। शनिवार को पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन के कार्यालय के सभागार में लाल दीप ने एसपी के समक्ष आत्मसमर्पण किया। एसपी अंजनी अंजन ने बताया कि नक्सली जोनल कमांडर लालदीप पिछले 20 वर्षों से माओवादी संगठन से जुड़ा हुआ था और विभिन्न बड़े नक्सलियों के साथ मिलकर हिंसक घटनाओं को अंजाम देता था। परंतु पुलिस के द्वारा इन दिनों चलाये जा रहे नक्सलियों के खिलाफ बड़े अभियान से माओवादी काफी कमजोर हो गये हैं। इसी बीच लालदीप ने सरकार के आत्मसमर्पण नीति का लाभ लेते हुए पुलिस के समक्ष आत्म समर्पण करना चाहा। एसपी ने बताया कि लालदीप को आत्मसमर्पण नीति के तहत मिलने वाले लाभ की पूरी जानकारी दी गई। इसके बाद लालदीप ने पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया।

विधायक ने किया नौ सड़कों के निर्माण कार्य का शिलान्यास

गांवों के विकास का प्रवेश द्वार होती हैं अच्छी सड़कें: नीलकंठ सिंह

स्वदेश संवाददाता

खूंटी : ग्रामीण कार्य विभाग के मुख्यमंत्री ग्राम सुदृढ़ीकरण योजना के तहत स्वीकृत नौ सड़कों का शिलान्यास सिलादोन में शनिवार को खूंटी के विधायक और राज्य के पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री नीलकंठ सिंह मुंडा ने किया। इसके पूर्व कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने पर स्थानीय ग्रामीणों ने पारंपरिक ढंग से स्वागत किया। मौके पर आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि जब मैं विधायक नहीं था, 25 वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं का घोर अभाव था, ना बिजली की कोई सुविधा थी औश्र न यातायात का कोई साधन था। विधायक बनने के बाद सड़क बनाने का कार्य जोर-शोर से शुरू हुआ और यह सभी कार्य तभी मुमकिन हुआ है, जब आपने मुझे चुनाव में जीताकर विधानसभा में भेजा, इसका सारा श्रेय में क्षेत्र की जनता को देता हूं। विधायक ने कहा कि खूंटी विधानसभा क्षेत्र में 11 पैकेज अंतर्गत 90 सड़कों का निर्माण कार्य

किया जाना है। इनमें 8.30 पैकेज की स्वीकृति मिल गई है। उन्होंने कहा कि सड़कें विकास का प्रवेश द्वार होती हैं और जब तक हमारे क्षेत्र में अच्छी सड़क नहीं होंगी, तब तक विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। कार्यक्रम कासंचालन देवानंद मुंडा और अतिथियों का स्वागत हरिनाथ मुंडा ने किया। छोटराय मुंडा प्रमुख, लांदूप पंचायत के मुखिया मांगा नाग, मरांगहादा पंचायत के मुखिया प्रेमचंद टूटी, जिला परिषद सदस्य गुलशन सिंह मुंडा, काशीनाथ महतो विधायक प्रतिनिधि, जिला परिषद उपाध्यक्ष मंजू देवी आदि ने भी संबोधित किया और विधायक के कार्यों की सराहना करते हुए नीलकंठ सिंह मुंडा को विकास पुरुष बताया। मौके पर जिला के उपाध्यक्ष कैलाश राम, लीलू पाहन, जिला सोशल मीडिया प्रभारी रूपेश जायसवाल, लव चौधरी, मदन मोहन गोप , सुरेश जयसवाल, थीबू नाग, बबलू ठाकुर, सहितसाथ में काफी संख्या में आसपास के ग्रामीण भी मौजूद थे।

सड़क सुरक्षा को लेकर छात्र-छात्राओं ने निकाली प्रभातफेरी

खूंटी : जिला परिवहन पदाधिकारी के निर्देश पर सड़क सुरक्षा माह के तहत जिला मुख्यालय स्थित हिंदी मध्य विद्यालय के छात्रों द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता को लेकर प्रभातफेरी निकाली गयी। इस दौरान सभी राहगीरों से सड़क सुरक्षा के नियमो का पालन करने का अनुरोध किया गया। छात्रों को सड़क सुरक्षा यातायात नियमों के विषय में जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक ने बताया कि वयस्क होने के उपरांत ड्राइविंग लाइसेंस बनवाकर ही वाहन का परिचालन करें। वाहन चलाते समय या वाहन पर बैठने के क्रम में हेलमेट और सीटबेल्ट का उपयोग आवश्य करें। साथ ही वाहन चलाते संमय मोबाइल का उपयोग हरगिज न करें। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए यातायात नियमों का अनुपालन अति आवश्यक है। इस दौरान प्रधानाध्यापक रघुनाथ महतो, जवाहर लाल, आभा भेंगरा तथा उषा किरण उपस्थित थे।

झामुमो युवा मोर्चा का गठन किया गया

स्वदेश संवाददाता

बुढ़मू : शनिवार को बुढ़मू प्रखंड झामुमो पार्टी कार्यलय में बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता झामुमो के भुनेश्वर साहू ने किया। जबकि संचालन शमीम बड़ेहार ने किया। बैठक में झामुमो युवा मोर्चा अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह, सचिव सोनू मुंडा, उपाध्यक्ष आशुतोष वर्मा, संगठन सचिव विश्वजीत गोप अल्पसंख्यक मोर्चा के सचिव सुजीत कुजूर, महिला मोर्चा अध्यक्ष नयनतारा उरांव, उपाध्यक्ष राखी देवी, नगडी प्रखंड के अध्यक्ष विनोद तिर्की, महिला अध्यक्ष सुकरमणि देवी, उपाध्यक्ष सोमरी देवी, नामकुम प्रखंड सचिव मुजाहिद हुसैन बतौर अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस दौरान युवा मोर्चा का गठन किया गया जिसमें प्रखंड अध्यक्ष कृष्णा मुंडा, सचिव अशोक कुमार साहू, उपाध्यक्ष मनोज मुंडा, कृष्ण मुर्मू संगठन सचिव फारूक अंसारी। तथा महिला मोर्चा के अध्यक्ष सुषमा देवी, सचिव रीता देवी, उपाध्यक्ष चिंतामनी मिंज, आशा हंसदा, संगठन सचिव लक्ष्मी देवी, सह सचिव विराशमणि देवी, आरती देवी को निर्वाचित किया गया।

ऑक्सब्रिज स्कूल मांडर में दसवीं के विद्यार्थियों को दी गयी विदायी

मांडर/स्वदेश संवाददाता : प्रखण्ड स्थित आक्सब्रिज स्कूल मांडर में शनिवार को दसवीं कक्षा के छात्र-छात्राओं को सादे. समारोह में विदाई दी गई। ज्ञात हो कि विगत, 27 जनवरी को दसवीं का छात्र रजनीश सिंह की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। सर्वप्रथम दिवंगत छात्र को भावभीनी श्रद्धांजली दी गई तत्पश्चात कक्षा नवीं के छात्रों द्वारा कक्षा दसवीं के छात्रों को फूल भेंट देकर स्वागत किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्य एवोन एवेंजलीन एक्का ने विदाई समारोह में उपस्थित छात्रों की उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि छात्र- छात्राओं में

अनुशासन और उनकी प्रतिभा ही विद्यालय की पहचान है अतः आगामी परीक्षा के लिए मेहनत करें ।

अड़की में व्यवसायी से हुए लूटकांड का खुलासा, तीन अपराधी गिरफ्तार

खूंटी : अड़की थाना की कोरवा घाटी में लगभग एक माह पूर्व खूंटी के एक व्यवसायी अशोक कुमार से हथियार की नोंक पर हुई लूट में शामिल तीन अपराधियों को गिरफ्तार कर पुलिस ने लूटकांड का खुलासा कर लिया है। गिरफ्तार आरोपितों में पश्चिम सिंहभूम जिले के बंदगांव निवासी और वर्तमान में सिंह मोड़ जगन्नाथपुर में रहने वाला पुष्पेंद्र यादव, कर्रा थानांतर्गत घुनसुली गांव का अनूप सांगा तथा सायको थानांतर्गत किताहातू गांव निवासी नारायण सिंह मुंडा शामिल हैं। यह जानकारी खूंटी एसडीपीओ वरूण रजक ने शनिवार को अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। एसडीपीओ ने बताया कि गिरफ्तार आरोपितों ने पुलिस के समक्ष अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। उनकी निशानदेही पर पुलिस ने व्यवसायी से लूटी गई मोटरसाइकिल की चाबी, लूटे गए पैसे , मोबाइल तथा लूट में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद कर लिया है। एसडीपीओ ने बताया कि 13 जनवरी को हुई लूट के इस मामले को पुलिस अधीक्षक अमन कुमार ने गंभीरता से लेते हुए कांड के उद्वेदन के लिए परीक्ष्यमान पुलिस उपाधीक्षक सह सायको थाना प्रभारी रामप्रवेश कुमार के नेतृत्व मंओ एसआइटी का गठन किया था। एसआइटी टीम ने तकनीकी सहयोग एवं गहन अनुसंधान के क्रम में अप्राथमिकी अभियुक्तों को हिरासत में लेकर जब उनसे पूछताछ की , तो मामले का खुलासा हो गया।

उ.म.वि. में फाइलेरिया मुक्ति अभियान चला

स्वदेश संवाददाता

रामगढ़ : उत्क्रमित मध्य विद्यालय गोविंदपुर में 10 फरवरी को फलेरिया मुक्ति अभियान चलाया गया। इसकी शुरूआत मांडू के चिकित्सा प्रभारी डॉक्टर रश्मि रोमिला संगा, चिकित्सा पदाधिकारी डॉ पंचम घासी, विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक डॉ सुनील कुमार कश्यप ने बच्चों को सुरक्षित दवा भरोसा स्वास्थ्य का डोज देकर किया। सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉक्टर सुनील कुमार कश्यप ने दवा खाकर बच्चों को दिखाया। डॉक्टर कश्यप ने यह कहा कि इस अभियान में हम सभी शिक्षकों को और अभिभावकों को सहयोग करनी चाहिए अगर हम सभी सहयोग करते हैं तो निश्चित रूप से इसका उन्मूलन किया जा सकता है ' इसके बाद सभी बच्चे खुशी-खुशी फाइलेरिया का दवा खाए डॉ रश्मि ने मलेरिया के बारे में बताया कि फलेरिया

मच्छर के काटने से होने वाला एक संक्रामक रोग है। व्यक्ति किसी भी उम्र में फलेरिया से संक्रमित हो सकता है। फलेरिया के लक्षण हाथ और पैर की सूजन हाथी पांव एवं अंडकोष का सुजन हाइड्रोसील है। फलेरिया के रोकथाम एवं नियंत्रण के लिए डॉक्टर ने बताया कि यह दावा फलेरिया के रोगाणुओं को मार देती है। आपको हाथी पांव या हाइड्रोसील जैसे बीमारी से बचाने में मदद करती है' यह दवा खाली पेट में नहीं खाना है। दवा सेवन के बाद कभी-कभी सर दर्द शरीर में दर्द बुखार उल्टी तथा बदन पर चकते एवं खुजली जैसी मामूली प्रतिक्रियाएं देखने को मिलती है। जो फाइलेरिया के रोगाणुओं के नष्ट होने को दशार्ता है। घबराएं नहीं आमतौर पर यह लक्षण सोता ही ठीक हो जाते हैं। मौके पर राहुल कुमार, सहिया रीना देवी, निर्मला बरला ने सभी बच्चों को दवा का डोज दिलाया। वहीं, सहयोगी के रूप में विद्यालय के शिक्षक शारदानंद शर्मा, गौतम कुमार गुप्ता,जेठालाल मांझी और बाल संसद के सभी पदाधिकारी ने इसको सहयोग किया।

मारथी कॉलेज मे फ्रेशर्स डे का आयोजन

मांडर : प्रखण्ड स्थित भारथी ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन, कन्दरी, माण्डर, राँची के अंतर्गत सतीश कुमार सिन्हा मेमोरियल कॉलेज ऑफ नर्सिंग एवं भारथी कॉलेज ऑफ नर्सिंग में आज दिनांक शनिवार को फ्रेशर्स फेस्टिवा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संस्था के अध्यक्ष छवि सिन्हा, सचिव नितिन पराशर एवं शैक्षणिक सचिव दिपाली पराशर उपस्थित थे। कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने एक से बढ़कर एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बीएससी नर्सिंग में मिस फ्रेशर एवं मिस्टर फ्रेशर के रूप में क्रमशः अकांक्षा कुमारी एवं नितिन कुमार और जीएनएम में मनतशा प्रवीन एवं सतीश कुमार को चूना गया। कार्यक्रम में नर्सिंग कि प्रचार्या निहारिका श्रीवासतव एवं शिक्षक गण मिस अंजिला गरी, प्रतिमा कुजूर, सुषमा कुमारी, मिस अदिति ज्योति ढांगा , तुलसीदास आदि उपस्थित थे।

इण्डियन ओवरसीज बैंक ने अपना 88वां स्थापना दिवस मनाया

स्वदेश संवाददाता

रांची : इण्डियन ओवरसीज बैंक क्षेत्रीय कार्यालय रांची ने बैंक के 88वे स्थापना दिवस पर वाकथन और स्वास्थ्य शिविर का आयोजन लोयला कॉलेज के प्रांगण में किया गया । इस आयोजन में बैंक के राज्य प्रमुख श्री सर्वेश कुमार एवं मुख्य अतिथि के रूप में लोयला कॉलेज के फादर सेबेस्टियन तिर्की , फादर मुकुल कुल्लू, फादर मार्क मुकुल लकरा, फादर सहदेव प्रजापति एवं फादर इग्निस तिर्की शामिल हुए। इस आयोजन में झारखंड के सभी कर्मचारी , ग्राहक एवं बैंकिंग कोरेसपोंडेंट कुल मिलाकर लगभग 400 सदस्यों ने भाग लिया । वाकथन का आयोजन लॉयला कॉलेज के प्रांगन से शुरू होकर शहिद चौक तक किया गया था एवं पुनः सभी लॉयला कॉलेज के प्रांगण में एकत्रित हुए। वाकथन के बाद सभी के लिये जलपान का आयोजन भी किया गया था। जैसा कि हम सभी जानते है कि बैंक सभी को सहज तरिके से बैंकिंग से जोड़ने का कार्य करते है। सरकार के लक्ष्य वित्तीय समावेशन को जन जन तक पहुँचाने में इण्डियन ओवरसीज बैंक अग्रणी भूमिका निभा रहा हैं, इण्डियन ओवरसीज बैंक का यह कदम सामाजिक उत्थान में अत्यंत सराहनीय है ।

राय में खलारी पेट्रोल पंप का उद्घाटन

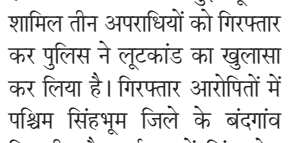

खलारी : पिपरवार कोयलांचल क्षेत्र के निकट राय में खलारी फ्युल पेट्रोल पंप का उद्घाटन समारोह पूर्वक किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित झारखंड सरकार के अपर सचिव गृह कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग रांची प्रदीप तिग्गा ने फीता काट कर किया। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि पिपरवार क्षेत्र के राय में पेट्रोल पंप खुलने से स्थानीय ग्रामीणों एवं किसानों को काफी सुविधा होगी। उद्घाटन समारोह के अवसर पर उपस्थित सभी लोगों के बीच मिठाई का वितरण किया गया। इस अवसर पर संयुक्त सचिव रंजिता हेंब्रम, संयुक्त सचिव दिलीप तिर्की, बबलु पांडेय, अन्य लोग उपस्थित थे।

अपराधियों ने कोयला लिप्टर के ऊपर चलाई गोली, बाल बाल बचे

- दिनदहाड़े गोलियों की तड़तड़ाहट से गूंजा कोयलांचल

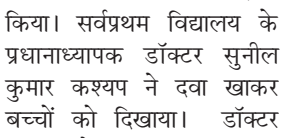

खलारी : खलारी कोयलांचल क्षेत्र दिन दहाड़े गोलियों की तड़तड़ाहट से गुंज उठा। खलारी थाना क्षेत्र के केडीएच कोयला खदान के निकट अज्ञात अपराधियों ने मोटरसाइकिल से जा रहे रवि नाम के कोयला लिपटर पर दिन दहाड़े गोली चलाई। जिसमें की रवि की जान बाल बाल बच गईं। रवि प्रतिदिन की भाँति अपने घर से कोयले के काम के सिलसिले में केडीएच कांटा घर जा रहा था। उसी बीच केडीएच खदान के निकट सुनसान सड़क पर पहले से घात लगाए अज्ञात हथियारबंद अपराधियों ने रवि पर गोली चलाई जो गोली रवि के पॉकेट में रखे मोबाइल पर लगी और छटक गई जिससे रवि की जान बाल बाल बच गई। गोलीबारी की घटना के बाद रवि वहीं पर गिर पड़ा और रवि के पॉकेट में रखा मोबाइल बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया । जिसके बाद उस रास्ते से गुजर रहे अन्य लिप्टरो की नजर रवि पर पड़ी तो रवि गिरा हुआ था। रवि को सहयोगी लिफ्टरों ने अस्पताल पहुंचाया जहां प्राथमिक उपचार के बाद रवि को घर भेज दिया गया। इस घटना के बाद से खलारी कोयलांचल क्षेत्र के सभी लिप्टरो में दहशत का माहौल देखा जा रहा है। केडीएच के कोयला लिप्टर ने सुरक्षा की मांग को लेकर कोयला लोडिंग का कार्य बंद कर दिया है। कोयला लिप्टरो का कहना है कि जब तक सीसीएल प्रबंधन उनके सुरक्षा की व्यवस्था नहीं करती तब तक कोयला लोडिंग का कार्य नहीं किया जाएगा।

स्टार इंटरनेशनल स्कूल में विज्ञान और सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन

स्वदेश संवाददाता

रांची : स्टार इंटरनेशनल स्कूल के प्रांगण में विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गई, इसमें कक्षा छः से दसवीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। बच्चों के द्वारा बनाए गए कई मॉडल हैरत करने वाले थे। इस प्रदर्शनी में बच्चों ने अपने कलाओं को खूब अलग-अलग रंगों में सजाकर प्रदर्शित किया। इस प्रदर्शनी में बच्चों ने कई तरह के विज्ञान पर आधारित मॉडल जैसे पन बिजली, स्ट्रॉ प्रेशर एक्सपेरिमेंट, लेजर होम सिक्योरिटी तथा सामाजिक विज्ञान पर आधारित मॉडल जैसे विकसित राष्ट्र, भारत में लोकतंत्र तथा खेती में परिवर्तन जैसे विषयों पर बनाएं मॉडलों को

दर्शार्या। ग्रुप डी॰ में आयुष, ईश्वर, रोहित पियूष हहेमेंद्र, अभय एवं ग्रुप ई॰ में शाक्य, ब्रिटी, अवंतिका, प्रगति तथा श्रेया विजयी रहें। इस प्रदर्शनी को और भी खास बनाने के लिए हमारे समक्ष नीतू रंजन, रोहित रंजन एवं डॉक्टर आयुष पांडे मौजूद थे। अंत में निर्णायक मंडलियों ने पुरस्कार देते हुए बच्चों को शुभकामनाएं दी इस प्रदर्शनी को सफल बनाने में स्कूल की शिक्षिकाओं की भी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

राधा गोविन्द विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग में व्याख्यान आयोजित

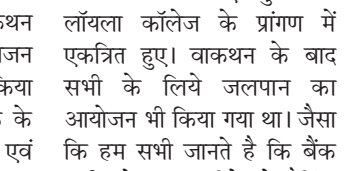

रामगढ़ : राधा गोविंद विश्वविद्यालय में भौतिक विभाग द्वारा 10 फरवरी को प्लाज्मा भौतिकी के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में प्रयोग विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान डॉ.पवन कुमार तिवारी भौतिक विभाग बीआईटी मेसरा रांची क द्वारा दिया गया ।व्याख्यान में प्लाज्मा भौतिकी के व्यावहारिक प्रयोग जैसे त्वचा चिकित्सा ,दंत चिकित्सा कैंसर, रसायन प्रौद्योगिकी ,कंप्यूटर चिप एवं उद्योग पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बी. एन. साह ने कहा की राधा गोविंद विश्वविद्यालय में डॉ. तिवारी की मेजबानी करना सम्मान की बात है प्लाज्मा और उनके अनुप्रयोगों में उनका काम हमारे भविष्य के लिए अपार संभावनाएं रखता है। विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो (डॉ.) एम. रजीउद्दीन ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए हार्दिक बधाई दी। कुलसचिव डॉ. निर्मल कुमार मंडल ने स्वागत संबोधन में कहा की हम बीआईटी मेसरा के सम्मानित सहायक प्राध्यापक पवन कुमार तिवारी का हार्दिक स्वागत करते हैं और प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उनकी विशेषता अमूल्य है ,हम आशा करते हैं की उनके विचार हमारे शिक्षकों एवम विधार्थियो के लिए लाभकारी सिद्ध होंगे ।

वार्षिक महोत्सव | **श्री गुरु नानक पब्लिक स्कूल में वार्षिक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया**

बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश कर अतिथियों का मन मोहा

स्वदेश संवाददाता

रामगढ़ : शहर के श्री गुरू नानक पब्लिक स्कूल का वार्षिक महोत्सव शनिवार को धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों को पुष्प कुछ भेंट कर एवं दीप प्रज्जवलित कर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ मंजीत सिंह रहे। सर्वप्रथम विद्यालय प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष ने अपने भाषण द्वारा सभा को संबोधित किया। बच्चों ने रंगारंग स्वागत गान एवं नृत्य कर सभी का मन नहीं लिया।विद्यालय के छोटे-छोटे बच्चों ने अपने सुंदर नृत्य और गायन से लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। बच्चों ने स्वागत गान से सभी का स्वागत किया फिर भक्ति गीत, गुरुद्वारा नर्सरी स्कूल द्वारा घूमर गीत,चन्द्रयान अधिनियम अंग्रेजी प्रहसन, हैप्पी डांस नर्सरी एलकेजी द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा कठपुतली का

अभिनय भी दिखाया गया ।देशभक्ति नृत्य गुरुद्वारा नर्सरी स्कूल और डिज्नी जो बच्चों को अति प्रिय है वह यूकेजी के बच्चों ने दिखाया । थीम पर यूकेजी के बच्चों ने डांस दादा-दादी के द्वारा फैशन शो प्रस्तुत किया गया। दादा दादी का परिवार में क्या महत्व है यह बच्चों ने लोगों को बताया और लोगों को यह दिखाया कि बच्चे और बूढ़े दोनों एक होते हैं दोनों को प्यार की जरूरत होती है। कार्यक्रम में भाई-बहन से जुड़े नृत्य भी प्रस्तुत किए गए जिसमें दोनों से जुड़े प्यार क्यों दिखाया गया और बताया गया कि दोनों कितना भी क्यों न लड़ी पर दोनों एक है ।पर्यावरण को बचानेका संदेश बच्चों ने अपने नाटक के माध्यम से दिया कि अगर धरती पर पेड़ हैं तो ही हम सुरक्षित हैं अगर हम इन्हें काट देंगे तो हमारा जीवन नष्ट हो जाएगा। बच्चों ने हिंदी नाटक के माध्यम से लोगों को बताया कि बच्चों के लिए संस्कार और उनके परिवार कितने महत्व रखते हैं फिर नन्ही मुन्ने कलाकार बच्चों मे डिस्को नृत्य किया ।सर्कस से जुड़े नृत्य को लोगों को दिखा आकर्षित किया।अर्ध शास्त्रीय नृत्य तथा फोन की लत बच्चों के लिए कितनी घातक हो सकती है उन्होंने अपने अभिनय के माध्यम से बताया । कवाली,नागपुरी,भांगड़ा नृत्य कर सब का मन मोह लिया। विद्यालय के कार्यक्रम में आए मुख्य अतिथि डॉ मंजीत सिंह ने भाषण दिया और विद्यालय के प्रबंधक कमेटी के द्वारा विद्यालय के उन बच्चों को मूवमेंट को दिया गया जो बहुत अच्छा प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम रोशन किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

मगध संघमित्रा क्षेत्र में द्वितीय सुरक्षा समिति की बैठक

स्वदेश संवाददाता

खलारी : सीसीएल के मगध संघमित्रा महाप्रबंधक कार्यालय परिसर में द्वितीय सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता मगध संघमित्रा क्षेत्र के महाप्रबंधक नृपेन्द्र नाथ और संचालन एरिया सेफ्टी आफिसर शंभू नाथ ने किया। सुरक्षा समिति की बैठक में उपस्थित सभी यूनियन प्रतिनिधियों ने कोयला खदान क्षेत्र में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाने, खदान क्षेत्र में उचित लाइटिंग की व्यवस्था करने, पीट ऑफिस में शुद्ध पेयजल और रेस्ट सेल्टर की

व्यवस्था करने, कर्मचारियों को सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराने समेत अन्य बिंदुओं पर अपनी अपनी बातों को रखा, जिसके जवाब में विभागीय अधिकारियों के द्वारा जल्द ही सभी समस्याओं का समाधान करने का भरोसा दिया गया। इस बैठक में मगध परियोजना पदाधिकारी सदाला सत्यनारायण, मैनेजर मो अकरम, स्टाफ ऑफिसर सिविल एस एम भास्कर, स्टाफ ऑफिसर पर्सनल एसके चौबे, स्टाफ ऑफिसर विद्युत एवं यांत्रिक नलिनचांद, एएफएम एन स्वामी, अभिषेक आनंद, यूनियन प्रतिनिधि की ओर से नीरज कुमार, आशीष कुमार दुबे, बिजय कुमार, मनिंदर सिंह, प्रेम कुमार, मनीष सिंहा समेत अन्य सदस्य उपस्थित थे।

जागरूकता ही फाइलेरिया से बचाव का तरीका: होलिका

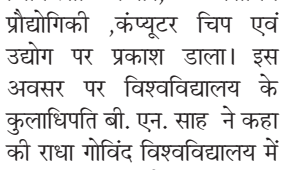

चान्हो : प्रखंड अंतर्गत विभिन्न गांवों मे सीएचसी के प्रभारी चिकित्सक अधिकारी के द्वारा फाइलेरिया से बचाव के लिए दवा का वितरण किया जा रहा है। शनिवार को इसकी जानकारी देते हुए प्रखंड प्रमुख होलिका देवी ने बताया की चान्हो प्रखंड के सभी गांवो मे राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस एवं राष्ट्रीय फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के तहत एनआरएचएम के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों मे एएनएम, आंगनवाड़ी केंद्र की सेविका, स्वास्थ्य सहिया सहित समाजिक संगठन के सहयोग से विभिन्न गांवों के प्रत्येक घर-घर जाकर लोगों को फाइलेरिया और कृमि से बचाव संबंधी स्वास्थ्य की विस्तृत जानकारी देते हुए फाइलेरिया कृमि की दवा सेवन कराया जा रहा है।

राज्य में कोई भी गरीब और जरूरतमंद बिना पक्का मकान के नहीं रहेगा : सीएम

स्वदेश संवाददाता

रांची/ गढ़वा : मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कहा कि राज्य में हर किसी को सम्मान मिलेगा, किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होगा और सभी के साथ न्याय होगा। राज्य की जनता को पूरे मान-सम्मान के साथ हक-अधिकार देंगे, यह हमारी सरकार का संकल्प है। पूरी प्रतिबद्धता के साथ इस दिशा में हम निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। मुख्यमंत्री शनिवार को गढ़वा में आयोजित पलामू प्रमंडल स्तरीय अबुआ आवास योजना कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने इस योजना के तहत चयनित कुछ लाभुकों को सांकेतिक रूप से आवास का स्वीकृति पत्र एवं उनके बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से पहली किस्त की राशि हस्तांतरित की। उन्होंने कहा कि राज्य में कोई भी गरीब और जरूरतमंद बिना मकान के नहीं रहेगा। किसी भी व्यक्ति का कच्चा और जर्जर घर नहीं होगा। सभी का अपना आशियाना होगा। राज्य सरकार अपने बलबूते 20 लाख लोगों को तीन कमरे का पक्का मकान देगी और इसका आगाज हो चुका है।

विकास की लकीर को लंबी करेंगे

मुख्यमंत्री सोरेन ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने पिछले चार वर्षों के अपने कार्यकाल में जिस तरह विकास के कार्य किए हैं, विभिन्न योजनाओं के माध्यम से समाज के हर वर्ग और तबके को सशक्त बनाने का काम किया, वह अभी नहीं थमेगा। हमारी सरकार हेमन्त सोरेन द्वारा खीची गई विकास की लकीर को और लंबा करेगी। हम इस राज्य की तस्वीर और तकदीर को बदलेंगे।

हर किसी को रोटी, कपड़ा और मकान देने का संकल्प

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में कोई भी व्यक्ति रोटी, कपड़ा और मकान से वंचित नहीं रहेगा। यहां की जनता ने जिन उम्मीदों और आकांक्षाओं से हमारी सरकार बनाई है, उसे हर हाल में पूरा करेंगे। हमारी सरकार लगभग 20 लाख लोगों को हरा राशन कार्ड जारी कर मुफ्त अनाज दे रही है। अब अबुआ आवास योजना के माध्यम से 20 लाख आवास विहीन गरीबों और जरूरतमंदों को मकान भी देने का काम कर रहे हैं।

शहर और गांवों के बीच की दूरी कर रहे कम

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार गांव से चल रही है। हमारा प्रयास है कि सुविधाओं के मामले में गांव और शहर के बीच का जो अंतर है, उसे कम कर सकें। इस दिशा में गांव और ग्रामीणों को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाई गई हैं। ये योजनाएं सिर्फ कागजों पर नहीं हो, हकीकत में धरातल पर नजर आएं, इसके लिए अधिकारियों का दल लोगों के घरों तक पहुंचकर उनकी समस्याओं का समाधान करने के साथ उन्हें कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ रहा है।

गांव के बच्चों को भी मिलेगा क्वालिटी एजुकेशन

मुख्यमंत्री ने कहा कि अब गांव के बच्चों को अपने पंचायत में क्वालिटी एजुकेशन मिलेगा। इसके लिए पंचायतों में स्थित विद्यालयों को अपग्रेड किया जा रहा है। यहां इंफ्रास्ट्रक्चर मजबूत करने के साथ पठन- पाठन से संबंधित सभी जरूरी संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

हर खेत में पानी पहुंचेगा

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड ग्रामीण बहुल प्रदेश है। यहां के ज्यादातर लोग कृषि पर निर्भर है। ऐसे में किसानों को सशक्त बनाने के लिए सरकार कई योजनाएं चला रही है। इसी कड़ी में खेतों में सालों भर पानी रहे, इसके लिए सिंचाई परियोजनाओं का काम तेज गति से चल रहा है।

कोल इंडिया मैराथन को लेकर तैयारी पूरी, सीसीएल सीएमडी ने कहा-

प्रतिभागियों के सुविधा का रखा जाएगा ख्याल

● पीटी ऊषा पहुंची रांची

स्वदेश संवाददाता

रांचीः सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) के द्वितीय कोल इंडिया मैराथन को लेकर तैयारी पूरी कर ली गई है। रविवार को रांची के मोरहाबादी में इसका आयोजन किया गया है। इस बार लगभग आठ हजार प्रतिभागी मैराथन में दौड़ लगाएंगे, जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से 6100 से अधिक पुरुष और लगभग 1400 महिला धावक हिस्सा ले रही हैं। 500 से अधिक सीसीएल के गेस्ट भी इस मैराथन भाग लेंगे।यह मैराथन बिरसा मुंडा स्टेडियम से सुबह 4:30 बजे शुरू होकर कांके रोड होते हुए मोरहाबादी में संपन्न होगी। प्रतियोगिता में 33 लाख रुपये से अधिक की राशि पुरस्कार स्वरूप दी जायेगी। मैराथन का आयोजन महिलाओं और पुरुषों की चार श्रेणियों में किया जा रहा है, जिसमें 42.195 किमी की फुल मैराथन, 21.098 किमी की हाफ मैराथन, 10 किमी एवं 5 किमी मैराथन शामिल है। भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पीटी उषा भी इस मैराथन में शिरकत करेंगी। मैराथन में हिस्सा लेने के लिए शनिवार की शाम पीटी उषा रांची पहुंची। कंपनी के चेयरमैन पीएम प्रसाद कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शामिल होंगे। साथ ही मुंबई मैराथन की द्वितीय एवं तृतीय विजेता रेशमा केवाटे एवं श्यामली सिंह इस मैराथन में भाग ले रही हैं। मैराथन की दुनिया में वन लेग उदय नाम से मशहूर उदय भी हॉफ मैराथन में भाग लेंगे। इनके साथ कोल इंडिया मैराथन के विजेता अर्जुन टुडू भी शामिल होंगे। सीसीएल के सीएमडी डॉ. वी बीरा रेड्डी ने शनिवार को बताया कि मैराथन को लेकर सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। प्रतिभागियों की हर सुविधा का ख्याल रखा जा रहा है। पूरे रास्ते में सुरक्षा के इंतजाम रहेंगे। पूरे रास्ते में लगभग 20 रिफ्रेशमेंट सेंटर बनाए गए हैं। यह मैराथन एआईएमएस द्वारा प्रमाणित है। झारखंड ओलंपिक एसोसिएशन व जिला प्रशासन का पूरा सहयोग मिल रहा है। बेहतर संचालन के लिए मैराथन के दौरान आपातकालीन चिकित्सीय सेवा के लिए मेडिकल टीम के साथ ही सीसीएल के सुरक्षा कर्मी भी उपस्थित रहेंगे। सीसीएल के स्पोर्ट्स समन्वयक आदिल हुसैन ने बताया कि इस मैराथन का पांच करोड़ का इवेंट लायबिलिटी इंश्योरेंस कराया गया है। इसमें खास बात ये है कि अगर मैराथन के दौरान कोई भी धावक घायल होता है तो उसे 10 हजार तक का इंजरी कवर मिलेगा। अगर कोई दुर्घटना घटती है, तो डेथ क्लेम 10 लाख तक कवर होगा।

यूपीए सरकार ने देश की अर्थव्यवस्था को खोखला कर दिया था : प्रदीप वर्मा

स्वदेश संवाददाता

रांचीः भाजपा प्रदेश महामंत्री प्रदीप वर्मा ने 2004-14 के दौरान देश की इकोनॉमी को खोखला करने का आरोप कांग्रेस पर लगाया। वर्मा ने कहा कि 2004-14 के दरम्यान देश में कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए की सरकार रही। इस दौरान देश की इकोनॉमी को खोखला कर दिया गया था। 2जी, कॉमनवेल्थ गेम्स, कैश फॉर वोट, लैंड स्कैम, शारदा चिट फंड घोटाला जैसे घोटालों की लंबी फेहरिस्त सामने आयी। संसाधनों की लूट हुई। प्रदीप वर्मा ने प्रदेश भाजपा कार्यालय में शनिवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस पर आंखें बंद रखीं। जब नरेन्द्र मोदी ने 2014 में देश की सत्ता संभाली, उस समय जर्जर इकोनॉमी व्यवस्था के साथ देश मिला। सरकार उसी समय चाहती तो श्वेत पत्र ला सकती थी, पर इससे देश का आर्थिक खोखलापन देश के सामने जाहिर होता। अब 10 साल बाद (2024) केंद्र के स्तर से श्वेत पत्र लाया गया है, जिससे पता लगता है कि देश सुरक्षित हाथों में है। अर्थव्यवस्था का कायापलट हुआ है। देश की इकोनॉमी बेहतर और तेजी से गतिशील हुई है। वर्मा ने कहा कि यूपीए सरकार के समय अर्थव्यवस्था ठहर गयी थी। मुद्रास्फीति दोहरे अंकों तक पहुंच गयी थी, जो आज पांच प्रतिशत के आसपास है। आज जीएसटी व्यवस्था के चलते डेढ़ लाख करोड़ रुपये से अधिक का कलेक्शन है और किसी भी सरकारी योजना के लिए पैसे की कमी नहीं है। यूपीएस सरकार में बहुआयामी गरीबी 29.2 प्रतिशत थी, जो अब 11.36 प्रतिशत रह गयी है। पूर्व में 350 स्टार्ट अप ही शुरू हुए थे। पिछले 10 सालों में यह एक लाख 17 हजार 257 हो गया है। पहले मेट्रो रेल 5 शहरों में ही था जो अब 20 शहरों में हो चुकी है। पूर्व में 25700 किमी राष्ट्रीय राजमार्ग (लंबाई) का निर्माण हुआ जो अब 54.9 हजार किमी हो चुका है। पूर्व में हर दिन औसतन 12 किमी एनएच बनाए जाते थे जो अब 28.3 किमी हो चुका है।

रांची में तेज रफ्तार बस ने ट्रक में मारी टक्कर, दो की हालत गंभीर

रांचीः नामकुम थाना क्षेत्र अंतर्गत रामपुर रिंगरोड चौराहे पर शनिवार की शाम रांची से जमशेदपुर जा रही सफारी बस ने ट्रक को टक्कर मार दी। इस टक्कर में ट्रक पलट गया एवं लदा सारा सामान सड़क पर बिखर गया। वहीं बस का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। बस में सवार छह लोगों को चोट आई है जिसमें दो की स्थिति गंभीर है। उन्हें स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार ट्रक (एमएच16सीडी4514) रामपुर चौराहा से रिंगरोड होते हुए टाटीसिलवे की ओर जा रहा था। इसी क्रम में जमशेदपुर की ओर जा रही सफारी बस (जेएच 05 बीडी1720) ने बाइक सवार को बचाने के क्रम में ट्रक को टक्कर मारी जिससे ट्रक पलट गया। ट्रक में टावर का सामान लोड था। बस में कई यात्री ऐसे थे जिन्हें जमशेदपुर से ट्रेन पकड़नी थी। मौके पर पहुंची पुलिस ने उन्हें दूसरे वाहन से भिजवाया एवं घायलों को अस्पताल पहुंचाया।

औषधीय एवं सुगंधीय पौधों से जुड़े अनुसंधान में बिरसा कृषि विवि देश का सर्वोत्तम केंद्र घोषित

स्वदेश संवाददाता

रांचीः भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित अखिल भारतीय समन्वित औषधीय एवं सुगंधीय पादप तथा पान लता अनुसंधान परियोजना के बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) केन्द्र को देश का सर्वोत्तम केंद्र घोषित किया गया है। उत्तर प्रदेश के अयोध्या स्थित आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में संपन्न इस परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ विजेंद्र सिंह ने परियोजना के बीएयू केन्द्र के प्रधान अन्वेषक डॉ कौशल कुमार को इस आशय का प्रमाण पत्र प्रदान किया। वर्तमान में देश के 26 कृषि विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान केन्द्रों में औषधीय एवं सुगंधीय पादप संबंधी यह समन्वित अनुसंधान परियोजना चल रही है, जिसमें कामकाज और प्रदर्शन के आधार पर बिरसा कृषि विश्वविद्यालय केंद्र को सर्वोत्तम केंद्र घोषित किया गया है। इस राष्ट्रीय परियोजना का मुख्यालय आणंद, गुजरात है।

बिरसा कृषि विवि के वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार को मिला फेलो अवार्ड

रांची/स्वदेश संवाददाता : बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौधा प्रजनन विभाग के वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार को सोसाइटी फॉर रेपसीड मस्टर्ड रिसर्च द्वारा फेलो अवार्ड प्रदान किया गया है। राजस्थान के जयपुर स्थित राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान में 7 से 9 फरवरी तक आयोजित पांचवें राष्ट्रीय सरसों वर्गीय फसल (ब्रैसिका) सम्मेलन में उन्हें यह अवार्ड आईसीएआर के पूर्व उप महानिदेशक (शिक्षा) डॉ अरविंद कुमार ने प्रदान किया। सम्मेलन में उन्होंने ह्यरेपसीड मस्टर्ड उत्पादन द्वारा देश की खाद्य तेल सुरक्षा में योगदान करने वाला एक उभरता हुआ राज्य होगा झारखंड विषय पर अपना शोध पत्र भी प्रस्तुत किया। ह्यटिकाऊपन, लाभप्रदता और पोषण सुरक्षा के लिए सरसों वर्गीय तेलहनह्ल विषय पर इस सम्मेलन का आयोजन रेपसीड मस्टर्ड सोसाइटी सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर एवं श्री करण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

भाजपा का पूरा कुनबा झूठ का पुलिंदा : राकेश सिन्हा

स्वदेश संवाददाता

रांचीः झारखंड प्रदेश कांग्रेस के महासचिव सह मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने केन्द्र की भाजपा सरकार पर हमला बोला। सिन्हा ने कहा कि भाजपा का पूरा कुनबा झूठ का पुलिंदा है। राकेश सिन्हा ने शनिवार को जारी एक बयान में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गलत आर्थिक नीतियों के कारण देश की अर्थव्यवस्था रसातल में चली जा रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा को यह बताना चाहिए कि महंगाई कम करने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं। सिन्हा ने आरोप लगाते हुए कहा कि अग्निवीर योजना लाकर सेना को कमजोर किया गया, देश भक्त युवाओं का मनोबल गिरा, एससी-एसटी समुदायों के खिलाफ 48 फीसदी अपराध के मामले बढ़े और आज देश में 45 साल में सबसे अधिक बेरोजगारी है। सिन्हा ने कहा कि श्वेत पत्र का मकसद अपने काले सच को छिपाना है।

मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम 14 जिलों में शुरू

● 25 फरवरी तक चलाया जाएगा मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम

स्वदेश संवाददाता

रांची : झारखंड के 14 जिलों में शनिवार से मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम का शुरू हो गया है। यह कार्यक्रम 28 फरवरी तक जारी रहेगा। इसके तहत लोगों को बूथों पर दवाई खिलाई जा रही है। राष्ट्रीय फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल ने शनिवार को स्वयं फाइलेरिया रोधी दवाएं खाकर देशव्यापी अभियान शुरू किया। झारखंड सहित कुल 11 राज्यों को यह कार्यक्रम चल रहा है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन झारखंड के अभियान निदेशक आलोक त्रिवेदी ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा आज से 14 फाइलेरिया प्रभावित जिलों (बोकारो, देवघर, धनबाद, गुमला, रामगढ़, साहेबगंज, पाकुड़, कोडरमा, रांची, गिरिडीह, गढ़वा, लोहरदगा, सिमडेगा और पूर्वी सिंहभूम) में 2.17 करोड़ लाभुकों को फाइलेरिया रोग के उन्मूलन के लिए सर्वजन दवा सेवन कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। उन्होंने कहा कि मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन के दौरान फाइलेरिया रोधी दवाओं का वितरण नहीं, बल्कि प्राशिक्षित स्वास्थ्यकर्मियों के सामने लाभार्थियों द्वारा दवा का सेवन सुनिश्चित किया जायेगा। राज्य स्तर से सभी विभागों से समन्वय बनाकर मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन को पूरी तरह से सफल बनाने के लिए अथक प्रयास किये जा रहे हैं।

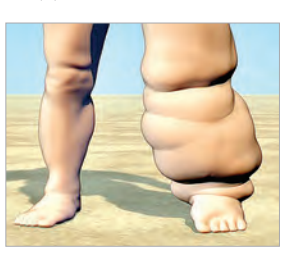

दक्षिण-पूर्व रेलवे जोन में रांची को बेस्ट स्टेशन का मिला खिताब

स्वदेश संवाददाता

रांचीः दक्षिण पूर्व रेलवे के 68वें रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह में रांची रेल मंडल को छह अवार्ड मिले हैं। ये अवार्ड कोलकाता में जीएम अनिल कुमार मिश्रा ने दिये। दक्षिण-पूर्व जोन में रांची ने सबसे बेहतर ट्रेन ऑपरेशन किया है। रांची से 98 प्रतिशत ट्रेनों का ऑपरेशन समय पर किया गया। बेस्ट स्टेशन का अवार्ड भी रांची को मिला है। सीनियर डीसीएम निशांत कुमार को स्टेशन की शील्ड दी गई है। खेल में भी रांची को शील्ड मिली है। यहां की तीन खिलाड़ी निक्की प्रधान, सलीमा टेटे व संगीता कुमारी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हॉकी में परफॉर्म कर रही हैं। कोलकाता के कलामंदिर सभागार में शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में 89 रेलवे अधिकारियों और कर्मचारियों को उत्कृष्ट सेवाओं और कर्तव्य के प्रति समर्पण के लिए सम्मानित किया गया। मौके पर समग्र दक्षता के लिए चक्रधरपुर मंडल को समग्र दक्षता की शील्ड प्रदान की गई। अन्य श्रेणियों में दक्षता शील्ड भी विभिन्न विभागों, कार्यशालाओं और स्टेशनों को दी गई। रांची स्टेशन को बेस्ट केप्ट स्टेशन चुना गया है। वहीं दक्षिण पूर्व रेलवे का सर्वोच्च हेल्थ केयर शील्ड चक्रधरपुर रेलवे अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ सुब्रत कुमार मिश्रा को प्रदान की गई।

महासम्मेलन | **मोरहाबादी में 12 को जेएसएलपीएस का महासम्मेलन को लेकर डीसी ने की बैठक, कहा-**

महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक आत्मनिर्भर बनाना कार्यक्रम का उद्देश्य

स्वदेश संवाददाता

रांची : मोरहाबादी में 12 फरवरी को जेएसएलपीएस की ओर से आयोजित स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं का एक्सपोजर और क्षमता संवर्द्धन शिविर-सह-महासम्मेलन की तैयारी को लेकर शनिवार को समाहरणालय सभागार में डीसी राहुल कुमार सिन्हा ने बैठक की। डीसी ने राज्य स्तरीय इस महासम्मेलन को लेकर संबंधित पदाधिकारियों को कई दिशा-निर्देश दिये। डीसी ने पदाधिकारियों से महासम्मेलन के सफल आयोजन को लेकर चर्चा की। डीसी ने कहा कि इस महासम्मेलन में शामिल होने वाली स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के सुरक्षित आने-जाने, भोजन-पानी आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करें। उन्हें किसी प्रकार कि समस्या ना हो, इसका विशेष ध्यान रखें। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से कहा कि तैयारी ऐसी करें कि कार्यक्रम एक मिशाल बन जाये।

राज्य के सभी 24 जिलों से महिला समूह की दीदियां होंगी शामिल : डीसी ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि राज्य स्तरीय कार्यक्रम में राज्य के सभी 24 जिलों से महिला समूह की दीदियां भाग लेंगी, जिसमें प्रतिभागियों की संभावित संख्या 30 हजार से 35 हजार होगी। रांची जिले में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम का लाइव टेलीकास्ट होगा। इसको लेकर डीसी ने संबंधित अधिकारी को लाइव टेलीकास्ट कराना सुनिश्चित कराने को कहा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सखी मंडल की महिला सदस्यों को सामाजिक-आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित करना, विभिन्न आजीविका माध्यमों का एक्सपोजर देना, महिलाओं का क्षमता संवर्धन और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना है। यह कार्यक्रम इन महिलाओं को अपनी सफलता की कहानियों, चुनौतियों और नवीन समाधानों को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करेगा। साथ ही अपने सहयोगियों एवं सहकर्मियों से कुछ नया सीखने का अवसर प्रदान करेगा। इस कार्यक्रम में एनआरएलएम के अंतर्गत योग्य समूहों को रिवॉलविंग फंड, सामुदायिक निवेश कोष, बैंक लिंकेज की राशि वितरित की जायेगी। इस कार्यक्रम में स्वयं सहायता समूहों की दीदियों के द्वारा निर्मित उत्पाद की प्रदर्शनी एवं बिक्री के लिए सम्मेलन स्थल पर स्टॉल भी लगाए जायेंगे। कार्यक्रम में सरकार के विभिन्न विभागों की योजनाओं के लाभुकों के रूप में महिला समूह की सदस्यों के बीच परिसंपत्ति का वितरित भी किया जायेगा।

यह कार्यक्रम हम सभी के लिए काफी महत्वपूर्ण : डीसी

डीसी ने सभी संबंधित अधिकारियों से कहा कि यह कार्यक्रम हम सभी के लिए काफी महत्वपूर्ण है। इसका सफल आयोजन कराना हम सभी की जिम्मेदारी है। यह गौरव कि बात है कि ऐसे कार्यक्रम रांची में संपन्न कराये जा रहे हैं। डीसी ने कहा कि कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी ईमानदारी पूर्वक अपना योगदान दें।संबंधित अधिकारी मिनट टू मिनट कार्यक्रम की रिहर्सल करें। सीटिंग अरेंजमेंट, खाने की व्यवस्था, पेयजल, बिजली, शौचालय, पार्किंग, स्वागत, ट्रैफिक, फायर सेफ्टी, बैकड्राप, स्टेज की साज-सज्जा आदि की व्यवस्था बेहतर तरीके से करें, ताकि कोई चूक न हो सके। बैठक में रांची एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा, डीडीसी दिनेश कुमार यादव, सिटी एसपी राजकुमार मेहता, एसडीओ उत्कर्ष कुमार, आईपीएस अधिकारी याकूब, परियोजना निदेशक, जिला कल्याण पदाधिकारी, जिला सूचना विज्ञान पदाधिकारी, जिला कार्यक्रम प्रबंधक जेएसएलपीएस प्रवीण कुमार एवं संबंधित सभी अधिकारी उपस्थित थे।

झारखंड के 24 जिला विधिक सेवा प्राधिकारों का चतुर्थ समागम शुरू

लोक अदालतों एवं मध्यस्थता से विवाद को कोर्ट के बाहर सुलझाने का प्रयास हो : जस्टिस सुजीत

स्वदेश संवाददाता

रांचीः झालसा के डोरंडा स्थित भवन में शनिवार को झारखंड के 24 जिला विधिक सेवा प्राधिकारों का दो दिवसीय चौथा समागम शुरू हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन झालसा के कार्यपालक अध्यक्ष सह हाई कोर्ट के न्यायाधीश सुजीत नारायण प्रसाद ने किया। मौके पर जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद ने कहा कि झारखंड के सुदूर ग्रामीण इलाकों में लोगों तक कानूनी सहायता पहुंचे, इसके लिए पैरा लीगल वालंटियर (पीएलवी) प्रयासरत रहें। सरल एवं सुलभ न्याय लोगों तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि लोक अदालतों एवं मध्यस्थता के माध्यम से विवाद को कोर्ट के बाहर सुलझाने का प्रयास हो। अल्टरनेटिव डिस्प्यूट रेजोल्यूशन को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि अदालतों पर मुकदमों का बोझ कम हो।उन्होंने कहा कि जेल में जो कैदी हैं उनकी अपील 60 दिनों के भीतर दायर हो सके, इसका पीएलवी प्रयास करें। समाज के निचले तबके तक नालसा व झालसा की स्कीम पहुंचे। युवाओं को आज के समय के नशा से दूर रखने की जरूरत है। मौके पर वात्सल्य एवं मोटर दुर्घटना दावा स्कीम को लांच किया गया। कार्यक्रम में हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति डॉक्टर एसएन पाठक, जस्टिस एके राय, जस्टिस एसके द्विवेदी, जस्टिस रत्नाकर भेंगरा, जस्टिस प्रदीप कुमार

डीसी-एसपी ने दवा खाकर फलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम का किया शुभारंभ

जिले के 24 लाख 73 हजार 700 लोगों को दवा खिलाने का लक्ष्य

- जिले के 2102 बूथों पर खिलाया गया डीईसी एवं अल्बेंडाजोल की दवा

स्वदेश संवाददाता

बोकारो : राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम अंतर्गत मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन 2024 के तहत फलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम का शुभारंभ शनिवार को समाहरणालय सभागार में उपायुक्त (डीसी) - सह- अध्यक्ष जिला स्वास्थ्य समिति कुलदीप चौधरी, पुलिस अधीक्षक (एसपी) प्रियदर्शी आलोक, अपर नगर आयुक्त चास सौरव भुवनिया, सिविल सर्जन डा. दिनेश कुमार, अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, अनुमंडल पदाधिकारी चास ओम प्रकाश गुप्ता, अनुमंडल पदाधिकारी बेरमो शैलेश कुमार आदि ने डीईसी की गोलियों के साथ अल्बेंडाजोल का टैबलेट का सेवन कर जिले में फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम की शुरूआत की। मौके पर अपने संबोधन में उपायुक्त (डीसी) कुलदीप चौधरी ने कहा कि फलेरिया (हाथी पांव) मच्छर के काटने से होने वाली बीमारी है। दवा खाकर ही हम इस बीमारी से बच सकते हैं। इस बीमारी के लिए दवा का सेवन करना इसलिए जरूरी है क्योंकि इस बीमारी का इंफेक्शन तुरंत नहीं दिखता है। इसका असर एक से दो दशक बाद होता है। तब तक इसका उपचार लगभग संभव नहीं होता है। इसलिए ऐतिहातन सभी को डीईसी व अल्बेंडाजोल की दवा आयु वर्ग के अनुसार खानी चाहिए। डीसी ने जिलावासियों से फाइलेरिया उन्मूलन के लिए दवा का सेवन करने की अपील की। दवा खिलाने के लिए सभी आंगनबाड़ी केंद्र, सभी स्वास्थ्य उप केंद्र, सभी स्वास्थ्य केंद्र, सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र व विद्यालयों में कुल 2102 बूथ बनाया गया है। जहां आमजन जाकर दवा का सेवन कर सकते हैं। रविवार से अगले 14 दिनों तक डोर टू डोर दवा खिलाई जाएगी। उन्होंने सिविल सर्जन डा. दिनेश कुमार समेत अन्य चिकित्सा पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम को निर्धारित समय पर पूरा करें। साथ ही शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति सुनिश्चित करने को कहा। वहीं, उपस्थित पुलिस अधीक्षक (एसपी) प्रियदर्शी आलोक ने कहा कि फाइलेरिया के प्रति जागरूकता को नीचे तक संबंधित अधिकारी/थाना प्रभारी पहुंचाएं। बीमारी से बचाव के लिए दवा का सेवन करना आवश्यक है। मौके पर सिविल सर्जन डा. दिनेश कुमार एवं जिला भीवीडी पदाधिकारी डा. रेणु भारती ने कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर की गई तैयारियां की जानकारी दी। कहा कि आज सभी 2102 बूथों पर दवा खिलाया जा रहा है। दवा खिलाने कार्य के लिए पर्याप्त संख्या में ड्रग एडमिनिस्ट्रेटर एवं इसकी निगरानी के लिए पर्याप्त संख्या में पर्वेक्षकों को लगाया गया है। इसके अलावा जिले के वरीय पदाधिकारी, बीडीओ/सीओ एवं चिकित्सा पदाधिकारियों द्वारा भी कार्यक्रम की मानिटरिंग की जा रही है। उल्लेखनीय हो कि, मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) 2023 के तहत फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के लिए 24 लाख 73 हजार 700 लोगों को दवा खिलाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए पर्याप्त संख्या में बूथ बनाया गया है। 10 फरवरी को बूथ पर एवं 11 से 25 फरवरी तक घर - घर घूमकर सभी लोगों को डीईसी एवं एल्बेंडाजोल की दवा खिलाई जाएगी। समाहरणालय सभागार में उपस्थित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय पदाधिकारी/प्रखंड विकास पदाधिकारी झ अंचलाधिकारी/ पुलिस पदाधिकारी झ थाना प्रभारी, चिकित्सा पदाधिकारी,विभिन्न कार्यालयों के कर्मी आदि ने भी डीईसी की गोलियों के साथ अल्बेंडाजोल टैबलेट का सेवन किया।

जिप अध्यक्ष व एडीएम ने दवा खाकर किया फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम का शुभारंभ

स्वदेश संवाददाता

धनबाद : फाइलेरिया उन्मूलन के लिए शनिवार को सदर अस्पताल से धनबाद जिला परिषद अध्यक्ष शारदा सिंह, प्रभारी एडीएम लॉ एंड ऑर्डर ज्ञानेंद्र सिंह, सिविल सर्जन डॉ चंद्रभानु प्रतापन, वीबीडी पदाधिकारी डॉ सुनील कुमार, डब्ल्यूएचओ के एसएमओ डॉ अमित कुमार सहित अन्य लोगों ने डीईसी एवं एल्बेंडाजोल की गोली खाकर अभियान का शुभारंभ किया। जिला परिषद अध्यक्ष ने कहा कि फाइलेरिया उन्मूलन के लिए सभी लोगों को डीईसी एवं एल्बेंडाजोल की गोली का खुराक अवश्य लेना चाहिए। सरकार द्वारा इसके रोकथाम के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इस बीमारी को जड़ से खत्म करना इस अभियान का उद्देश्य है। वहीं प्रभारी एडीएम लॉ एंड ऑर्डर ने कहा कि सभी लोगों को इस अभियान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। घर-घर जाकर दवा खिलाने वाले दवा प्रशासकों का सहयोग करें। यह दवा स्वस्थ लोगों को इस बीमारी से बचाने के लिए है। सभी इस अभियान का लाभ उठाएं। सिविल सर्जन ने कहा कि आज से 25 फरवरी तक मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम चलाया जाएगा। आज जिले के 2220 बूथ पर 4446 दवा प्रशासक द्वारा 26 लाख से अधिक लोगों को अपने सामने दवा खिलाने का लक्ष्य निर्धारित है। वहीं छूटे हुए लोगों को 11 से 25 फरवरी तक दवा प्रशासक द्वारा घर-घर जाकर अपने सामने डीईसी एवं एल्बेंडाजोल की खुराक खलाई जाएगी। एक से दो साल तक के बच्चे को एल्बेंडाजोल की आधी गोली (200 एमजी) पानी में घोलकर, 2 से 5 वर्ष तक को डीईसी की एक गोली (100 एमजी), एल्बेंडाजोल की एक गोली (400 एमजी), 6 वर्ष से 14 वर्ष तक डीईसी की 2 गोली (200 एमजी), एल्बेंडाजोल की एक गोली, 15 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को डीईसी की तीन गोली 300 (एमजी) एवं एल्बेंडाजोल की एक गोली देना है। वहीं एक वर्ष से कम उम्र के बच्चों, गर्भवती महिलाओं एवं अत्यंत वृद्ध एवं गंभीर बीमार व्यक्तियों को दवा की खुराक नहीं दी जाएगी। जिला परिषद अध्यक्ष शारदा सिंह, प्रभारी एडीएम लॉ एंड ऑर्डर ज्ञानेंद्र सिंह, सिविल सर्जन डॉ चंद्रभानु प्रतापन, वीबीडी पदाधिकारी डॉ सुनील कुमार, डब्ल्यूएचओ के एसएमओ डॉ अमित कुमार, वीबीडी सलाहकार रमेश कुमार सिंह, कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डॉ मंजु दास, पीसीआई के जिला समन्वयक अशोक कुमार, पिरामल फाउंडेशन के अमरेंद्र कुमार झा, लायंस क्लब ऑफ धनबाद कोलफील्ड्स के सोमनाथ प्रुर्थी, राकेश आनंद सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

बोकारो डॉन बोस्को स्कूल में हुआ क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

स्वदेश संवाददाता

बोकारो : डॉन बोस्को पब्लिक स्कूल में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यालय के विद्यार्थियों को चार हाउस बिरसा, कलाम, टेरेसा और रमन हाउस में बाँटकर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इस प्रतियोगिता को लेकर चारो हाउस के विद्यार्थियों में जबरदस्त उत्साह देखा गया तथा सभी हाउस के विद्यार्थियों ने अपने सामान्य ज्ञान का प्रदर्शन किया। विजेता कलाम हाउस तथा उप विजेता रमन हाउस हाउस को अंक तालिका में श्रेष्ठ रहने के कारण विजेता घोषित करते हुए विजेता हाउस को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया तथा विजेता हाउस के सभी प्रतिभागियों को मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जिला परिषद संख्या 22 के प्रतिनिधि सह समाज सेवी संजय कुमार सिंह विद्यालय के प्राचार्य एन एच कमाल, निदेशक शंकर शाह, संजीव कुमार, राजेश कुमार सिंह, शंकर सुमन एवं उषा देवी ने उपस्थित होकर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि विद्यालय में इस प्रकार के आयोजन से विद्यार्थियों में समान्य ज्ञान मे वृद्धि होती है, विद्यालय के प्राचार्य ने अपने संबोधन में कहा कि यह विद्यालय अपने स्थापना काल से ही इस क्षेत्र के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए प्रयासरत है तथा आने वाले समय में यह विद्यालय पूरे जिले में श्रेष्ठ स्थान बनाएगा। इस क्विज प्रतियोगिता का संचालन क्विज मास्टर संजीव कुमार ने सफलता पूर्वक किया, कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन निदेशक राजेश कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षक मुकेश कुमार, नेहा पांडे, ललित कुमार, नील मनी पांडेय, सानिया, पूजा, ललिता इत्यादि उपस्थित थे।

कोयला मंत्रालय के अपर सचिव ने मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर का उद्घाटन किया

स्वदेश संवाददाता

धनबाद : कोयला मंत्रालय के अपर सचिव एम नागराजू ने शनिवार को धनबाद के बेलगड़िया में मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर का उद्घाटन किया। उन्होंने अधिकारियों संग झरिया मास्टर प्लान के तहत विस्थापितों के लिए बनाए गए बेलगड़िया टाउनशिप और और वहां रह रहे विस्थापितों के आवासों का भी निरीक्षण किया। अपर सचिव ने निरीक्षण के दौरान अधिकारियो को कई दिशा निर्देश भी दिए। दरअसल झरिया अग्नि प्रभावित क्षेत्र से विस्थापित होकर बेलगड़िया टाउनशिप में बसे लोगों को रोजगार से जोड़ने के लिए बीसीसीएल के द्वारा यहां मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर की शुरूआत की गई है। बीसीसीएल का सस्टेनेबल डेवलपमेंट सीएसआर के तहत एनएसडीसी के साथ इसको लेकर एमओयू भी हुआ है। जिसके तहत यहाँ की महिलाओं एयर पुरुषों को रोजाना से जोड़ने के लिए उन्हें फैशन डिजाइनिंग, फैशन ट्रेलिंग, एचईएमएम एवं अन्य तरह के ट्रेनिंग देकर प्रशिक्षित किया जाएगा एवं उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। इसको लेकर बेलगड़िया के अलावे दूसरा सेंटर बरोरा में भी खोला जाना है। कोयला मंत्रालय के अपर सचिव का बेलगड़िया टाउनशिप दौरे की सूचना पाकर मौके पर पहुंची स्थानीय पूर्व उप मुखिया सीमा देवी ने अवर सचिव को ज्ञापन देकर यहां की समस्याओं से उन्हें अवगत कराया। बेलगड़िया में व्यापत समस्याओं को जान कोल मंत्रालय के अपर सचिव ने अधिकारियों को जल्द से जल्द उन सभी समस्याओं का निवारण करने का दिशा निर्देश दिया। मौके पर कोल इंडिया चेयरमैन पीएम प्रसाद, उपायुक्त वरुण रंजन, बीसीसीएल सीएमडी समीरन दत्ता, डीपी मुरली कृष्ण रैमया सहित तमाम बीसीसीएल के अधिकारी मौजूद थे।

ज्ञान भारती प्लस टू उ.वि. में दसवीं की विद्यार्थियों को दी गयी विदायी

जयनगर/स्वदेश संवाददाता : प्रखंड के परसाबाद में ज्ञान भारती प्लस टू उच्च विद्यालय में समारोह आयोजन कर दशम वर्ग के छात्र-छात्राओं को, विदाई वर्ग अष्टम, नवम के छात्र-छात्राओं के द्वारा दिया। वर्ग अष्टम, नवम के पिंकी, खुशबू, अनिता, करिश्मा, प्रतिज्ञा,प्रेमा, दिव्या, रिंकू, कौशल, सागर, अजीत, आनंद, बादल सहित कई लोगों के द्वारा एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित अभिभावकों का मन मोह लिया। इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक अरुण कुमार यादव ने कहा कि निश्चित तौर पर विद्यार्थी देश के भविष्य होते हैं और उन्हें बेहतर करने के लिए विद्यालय से विदाई दी जा रही है ताकि वह मैट्रिक परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर संपूर्ण देश व क्षेत्र में विद्यालय ही नहीं संपूर्ण जिले का नाम रोशन करें। उन्होंने कहा आज के बच्चे कल के भविष्य हैं। मौके पर प्राचार्य रामदेव यादव, शिक्षक देवनारायण यादव, संतोष यादव, राजेंद्र यादव, चंद्रदेव कुमार, सत्येन्द्र यादव, बैजंती कुमारी, माही कुमारी, प्रमिला देवी सहित कई लोग मौजूद थे।

डीएवी कोयला नगर के जूनियर विंग में अंतरसदनीय प्रतियोगिता आयोजित

धनबाद/स्वदेश संवाददाता: शनिवार को डीएवी पब्लिक स्कूल कोयला नगर के जूनियर विंग में अंतरसदनीय मास्टरमाइंड क्विज तथा कुक विदाउट फायर प्रतियोगिता आयोजित हुई। इस प्रतियोगिता में चारों सदनों नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला एवं वल्लभी के बच्चों ने भाग लिया। क्विज प्रतियोगिता में कक्षा पांचवीं एवं छठी तथा कुक विदाउट फायर प्रतियोगिता में कक्षा तीसरी एवं चौथी के बच्चों ने भाग लिया। क्विज मास्टर रवि भूषण प्रसाद के दिलचस्प एवं ज्ञानवर्धक सवालों का सभी टीमों ने बखूबी जवाब दिया।ये प्रश्न इतिहास, भूगोल, संस्कृति, खेल-कूद, फिल्म, राजनीति आदि से लिए गए थे।।प्रतियोगिता के परिणाम स्वरूप 140 अंको के साथ विक्रमशिला सदन प्रथम,125 अंकों के साथ तक्षशिला सदन द्वितीय 100 अंकों के साथ वल्लभी सदन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।इस प्रतियोगिता में दर्शक भी जिज्ञासु एवं काफी उत्साहित थे।इस प्रतियोगिता में स्कोरर की भूमिका श्रीमती रेणु कुमारी एवं अनाखी सिंह ने निभाई।वहीं कुक विदाउट फायर प्रतियोगिता में 183 अंकों के साथ नालंदा सदन प्रथम,168 अंकों के साथ वल्लभी द्वितीय तथा 167 अंकों के साथ तक्षशिला सदन तृतीय स्थान पर रहा। इसके निर्णायकों की भूमिका रिंकी सिन्हा, कुमारी निशा एवं अपर्णा कर्ण ने निभाई। मुख्य अतिथि श्री अरविन्द पात्रा थे।विद्यालय के प्राचार्य सह सहायक क्षेत्रीय अधिकारी एन एन श्रीवास्तव ने कार्यकम की सराहना करते हुए विजेताओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। जूनियर विंग की प्रभारी पापिया चटर्जी के कुशल नेतृत्व एवं सी सी ए इंचार्ज रश्मि सहाय एवं मोनी मैडम के कुशल संचालन में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में चारों सदनों की प्रभारी प्रीति सिंह, विभा कुमारी, रेणु कुमारी,मोनिशा मुखर्जी के अलावा मधुलता,शुचि स्मिता, विरेन्द्र कुमार मेहर बालकिशोर सिंह,सचिन कुमार, राहुल प्रसाद, दीपक पाण्डेय तथा अन्य शिक्षकों की प्रमुख भूमिका रही।

एनडीसी का नए भवन का उद्घाटन

धनबाद/स्वदेश संवाददाता: नेशनल डेंटल कमीशन के नाम से नामित डेंटल काउंसिल ऑफ इंडिया की नवनिर्मित इमारत का उद्घाटन केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, रसायन और उर्वरक मंत्री माननीय डॉ. मनसुख मंडाविया ने डॉ. दिब्येंदु मजूमदार, अध्यक्ष डीसीआई, डॉ. माणिक साहा मुख्यमंत्री त्रिपुरा, अपूर्व चंद्रा सचिव स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, डॉ. विवेक कुमार, कार्यकारी समिति सदस्य डीसीआई और अध्यक्ष झारखंड राज्य डेंटल काउंसिल की उपस्थिति में किया।

इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष डीसीआई डॉ. अनिल कोहली और डॉ. आरके बाली, पूर्व उपाध्यक्ष डीसीआई डॉ. भरत शेट्टी, उपाध्यक्ष डीसीआई डॉ. एस रेड्डी, ईसी सदस्य डॉ. विवेक कुमार, डॉ. कथरिया, डॉ. तिवारी और डॉ. खंडेलवाल सहित सभी डीसीआई सदस्य और कर्मचारी भी मौजूद थे। न्यू नवनिर्मित भवन नई दिल्ली के केंद्र में स्थित है और सार्वजनिक परिवहन सुविधाओं यानी मेट्रो और बस सेवाओं से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। निर्मित भवन में कुल 8 मंजिल हैं जिनमें 2 बेसमेंट और एक ग्राउंड फ्लोर शामिल है। इमारत को 3 स्टार रेटिंग दी गई है और यह सौर ऊर्जा प्रणाली से सुसज्जित है जैसा कि डॉ. विवेक ने बताया है।इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री ने नेशनल डेंटल रजिस्टर (एन.डी.आर) का उद्घाटन किया, जो भारत के सभी दंत चिकित्सकों का एक डायनेमिक डायनेमिक डेटाबेस है जो दंत चिकित्सा में अपनी यात्रा को कवर करने वाले दंत चिकित्सकों के डेटा को कैप्चर करेगा और सभी को विशिष्ट पहचान (डीसीआई आईडी) प्रदान करेगा। संबंधित राज्य दंत चिकित्सा परिषद से सत्यापन के बाद भारत में अभ्यास करने वाले दंत चिकित्सक, जो दंत चिकित्सकों के अंतरराज्यीय आवागमन, राज्य भर में डुप्लिकेट पंजीकरण, जटिल नवीनीकरण प्रक्रिया आदि से संबंधित चुनौतियों का मुकाबला करेंगे।

बड्र्स गार्डेन स्कूल ने सद्भावना और जागरूकता रैली निकाली

स्वदेश संवाददाता

धनबाद : बड्स गार्डेन स्कूल,राजगंज, दलूडीह की ओर से एक भव्य सद्भावना एवं जागरूकता रैली निकाली गई।जिसमें स्कूल के हजारों बच्चे शामिल हुए। बच्चे अपने हाथों में सद्भावना एवं जागरूकता से संबंधित विभिन्न प्रकार के नारे लिखे हुए बोर्ड लेकर चल रहे थे।साथ में स्कूल का शानदार बैंड ग्रुप एवं नेशनल कैडेट कोर के बच्चियां पूरे जोश खरोश के साथ रैली की शोभा बढ़ा रहे थे।इस रैली में स्कूल के छोटे-छोटे बच्चे अपने हाथों में गुब्बारे एवं झंडा लेकर आगे चल रहे थे।साथ में इस रैली को गाइड करने हेतु स्कूल के सभी शिक्षक शिक्षिकाएं भी चल रहे थे।इस रैली का मुख्य मकसद क्षेत्र में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना एवं सभी धर्म के बीच सद्भावना लाना था।यह रैली हाई स्कूल के मैदान से प्रारंभ होकर राजगंज चौक होते हुए मैरा कुल्ही तक गई एवं वहां से पुनः पुराने जी टी रोड होते हुए बड्स गार्डेन स्कूल, दलूडीह तक यह रैली गई थी।इस रैली के दौरान स्कूल प्रबंधन की ओर से बच्चों के लिए पानी,शरबत एवं नाश्ते आदि की व्यवस्था भी की गई थी।

डीसी ने सभी थानों में शांति समिति की बैठक करने का दिया निर्देश

स्वदेश संवाददाता

बोकारो : आगामी 14 फरवरी को होने वाले सरस्वती पूजा पर विधि व्यवस्था - शांति व्यवस्था बनाएं रखने के लिए समाहरणालय सभागार में शनिवार को उपायुक्त कुलदीप चौधरी एवं पुलिस अधीक्षक प्रियदर्शी आलोक की संयुक्त अध्यक्षता में पदाधिकारियों, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारियों/अंचलाधिकारियों झ थाना प्रभारियों के साथ बैठक की। मौके पर अपर नगर आयुक्त चास सौरव कुमार भुवानिया, अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, अनुमंडल पदाधिकारी चास ओम प्रकाश गुप्ता, अनुमंडल पदाधिकारी बेरमो शैलेश कुमार आदि उपस्थित थे। बैठक को संबोधित करते हुए उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने कहा कि सरस्वती पूजा घर झ घर की पूजा है, काफी बड़े पैमाने पर इसका आयोजन होता है, कई जगहों पर मेले भी लगते है, जिसमें काफी संख्या में लोग शामिल होते हैं। ऐसे में विधि व्यवस्था की समस्या उत्पन्न होने से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसलिए सभी बीडीओ/सीओ झ थाना प्रभारी इसे गंभीरता से लेंगे। उन्होंने सभी थानों में रविवार को सरस्वती पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित करने को कहा। कहा कि सभी बीडीओ/सीओ झ थाना प्रभारी उनके क्षेत्र में कितने स्थानों पर पूजा का आयोजन हो रहा है। पूजा समिति के अध्यक्ष झ सचिव/सदस्य आदि कौन है, उनका पूरा विवरण तैयार कर जिला को समर्पित करेंगे। साथ ही, संख्या के अनुरूप ही विधि व्यवस्था को लेकर अपनी तैयारी/रणनीति सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने क्रमवार पेटरवार, जरीडीह, कसमार, गोमिया, चास, बेरमो, चंद्रपुरा आदि प्रखंडों के बीडीओ/सीओ एवं थाना प्रभारियों से बड़े पूजा आयोजनों/मेलों आदि की जानकारी ली। उन्होंने पूर्व में या हाल में किसी भी तरह की कोई विवाद वाले स्थानों पर विशेष चौकसी बरतने को कहा। पूजा समितियों से प्रतिमा विसर्जन की रूट चार्ट प्राप्त करने एवं विसर्जन तिथि को लेकर स्थिति स्पष्ट करने को कहा। उपायुक्त ने अपर समाहर्ता एवं सीसीआर डीएसपी को जिला नियंत्रण कक्ष को सक्रिय करने, प्रतिनियुक्त टीम से सभी तरह का प्रतिवेदन प्राप्त करने को कहा। उन्ह3ोंने सोशल मीडिया पर भी निगरानी रखने को कहा। दोनों अनुमंडल पदाधिकारी चास एवं बेरमो को पूरी विधि व्यवस्था की नजदीक से निगरानी करने को कहा। उन्होंने क्षेत्र में धारा 107 के तहत भी कार्रवाई ससमय सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। मौके पर पुलिस अधीक्षक प्रियदर्शी आलोक ने कहा कि सभी थाना प्रभारी पर्व झ त्योहार को लेकर विभाग द्वारा जारी एसओपी का पालन करना है। सरस्वती पूजा का आयोजन काफी जगहों पर होता है।

हादसा सड़क दुर्घटना में छात्र की मौत, आक्रोशितों ने किया सड़क जाम,हाइवा और ट्रकों में की तोड़फोड़

हाइवा चालकों, खलासी और ट्रांसपोर्ट के मुंसी को पीटा

- सौ से अधिक ट्रकों में तोड़फोड़

स्वदेश संवाददाता

धनबाद : झरिया थाना क्षेत्र के झरिया-केंदुआडीह मुख्य मार्ग स्थित सिंहनगर में शनिवार की सुबह अपनी छोटी बहन को स्कूल पहुंचा वापस भूली स्थित अपने आवास लौट रहे 12वीं के छात्र अर्णब कुमार (15) को एक ट्रक ने अपने चपेट में ले लिया। इससे छात्र की मौके पर ही मौत हो गई। घटना से आक्रोशित स्थानीय लोगों ने सड़क पर आगजनी कर करीब सात घंटे तक सड़क को अवरुद्ध रखा। इस दौरान लोगों ने आसपास खड़े करीब एक सौ से अधिक हाइवा ट्रकों में भी तोड़फोड़ की। घटना से गुस्साए लोगों ने हाइवा चालकों, खलासी और ट्रांसपोर्ट के मुंसी को भी दौड़ा दौड़ा कर पीटा। इस दौरान उक्त सड़क से गुजरने वाली अन्य गाड़ियों में भी लोगों ने तोड़फोड़ की घटना को अंजाम दिया। लोगों में इतना गुस्सा था कि मौके पर पहुंची पुलिस के साथ भी आक्रोशित लोगों ने मारपीट की। वहीं सिंहनगर मार्ग, तालाब के समीप व यार्ड में में खड़े करीब सौ से अधिक हाइवा ट्रक में तोड़फोड़ की, एक ट्रक में तो लोगों आग तक लगा दी। गनीमत रही कुछ स्थानीय लोगों ने ही उस आग को बुझा दिया। वहीं इस घटना की वजह से स्कूल में फंसे स्कूली बच्चे करीब तीन घंटे विलंब से अपने घर जा सके। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि। भूली के रहने वाले दिलीप कुमार का इकलौता पुत्र अर्णब रोज की तरह आज भी अपनी छोटी बहन तीसरी कक्षा की छात्रा आरोही को कतरास मोड़ स्थित आईएसएल स्कूल छोड़कर वापस अपने घर जा रहा था। तभी वहां से गुजर रहे एक ट्रक ने उसे अपने चपेट में लिया। जिससे अर्णब की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं दुर्घटना के बाद मौके से भाग रहे ट्रक को लोगों ने पकड़ लिया, लेकिन ट्रक का चालक मौके से भागने में सफल रहा, जिसके बाद लोगों ने ट्रक का टायर जला सड़क जाम कर दिया।लोगों का आरोप था कि इस मार्ग पर अक्सर बेलगाम हो चुके हाइवा ट्रक की चपेट में आकर लोगों की मौते होती रहती है, लेकिन न तो इसपर जिला प्रशासन या बीसीसीएल प्रबंधन और न ही स्थानी जनप्रतिनिधियों के ही ध्यान जाता है। वहीं घटना के करीब सात घंटे बाद झरिया इंस्पेक्टर संतोष सिंह सहित स्थानीय नेताओं और बुद्धिजीवियों के हुई वार्ता के बाद सड़क जाम हट सका और शव को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेजा जा सका।

संतोष मांझी हत्याकांड में चार गिरफ्तार

लोहरदगा : कुडू निवासी बाजार संवेदक संतोष कुमार मांझी उर्फ मंगलू की हत्या चार फरवरी को दिनदहाड़े गोली मार कर अपराधियों ने हत्या कर दी थी। इस हत्या की गुत्थी पुलिस ने सुलझा लिया है। हत्याकांड में शामिल छह में से चार आरोपियों को गिरफ्तार कर पुलिस जेल भेज दी है। एसपी हारीश बिन जमा ने शनिवार को पत्रकारों को बताया कि संतोष कुमार मांझी उर्फ मंगलू की हत्या का मामला कुडू थाना में दर्ज किया गया था। प्राथमिकी दर्ज करने के बाद हत्यारों की गिरफ्तारी के लिए सहायक पुलिस अधीक्षक वेदांत शंकर, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी श्रद्धा केरकेट्टा के नेतृत्व में एसआईटी टीम का गठन कर अपराधियों की गिरफ्तारी का निर्देश दिया गया। एसआईटी टीम ने तकनीकी शाखा के सहयोग से इस कांड में संलिप्त छह अपराधियों सत्यजीत कुंदन, रितेश कुमार भारती, विजय राम पवार, अमन सिंह तथा दो अन्य की संलिप्तता पाई गई, जिसमें

चार अपराधियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार अपराधियों में सत्यजीत कुंदन विजय राम पवार. रितेश कुमार भारती, अमन सिंह को अलग-अलग स्थान से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अपराधियों ने संतोष कुमार मांझी उर्फ मंगलू की आपसी रंजिश के कारण हत्या करने की बात स्वीकार की। पुलिस ने अपराधियों के पास से घटना में प्रयुक्त मोबाइल, हत्या के षड्यंत्र में मिले पैसे एवं घटना में प्रयोग किए गए कपड़े एवं मोटरसाइकिल को जप्त किया है। एसपी हारीश ने बताया कि अन्य दो फरार अपराधियों की गिरफ्तारी जल्द कर ली जाएगी। एसपी ने बताया कि हत्याकांड का मुख्य आरोपित य सत्यजीत कुंदन (32) निवासी है। उसने शूटर मंगाकर संतोष कुमार मांझी की हत्या करवाया। एसपी ने बताया की हत्या करने के पूर्व कुंदन द्वारा अपराधयों को 60 हजार रुपये दिया गया तथा कहा गया कि हत्याकांड को अंजाम देने के बाद और राशि दी जाएगी। कुंदन से मिले 60 हजार रुपए अपराधियों ने आपस में बांट लिया। पुलिस अपराधियों के पास खर्च के बाद बचे पैसे को भी बरामद किया है। एसपी ने बताया कि कुंदन भारतीय जन जागरूकता पार्टी का प्रदेश संगठन मंत्री भी है और वह जेल जा चुका है.। हत्या का मुख्य कारण आपसी रंजिश है। दुर्गा पूजा के समय पोस्टर लगाने को लेकर भी इन दोनों के बीच विवाद हुआ था।दुर्गा पूजा के समय ही कुंदन द्वारा संतोष कुमार मांझी की हत्या का षड्यंत्र रचा गया। मामले के खुलासे के क्रम में यह बात भी सामने आई की सत्यजीत कुंदन की वर्तमान पत्नी के साथ सामाजिक रूप से शादी नहीं हुई है। लड़की द्वारा प्राथमिकी दर्ज करने के बाद सत्यजीत कुंदन इस केस में धारा 376 के तहत जेल गया था। जेल से निकलने के बाद वह उस लड़की से पहाड़ी मंदिर में जाकर शादी कर परिवार के साथ रह रहा है। कुंदन को शक था कि संतोष मांझी द्वारा ही युवती से केस करवाया गया था। इसी शक के बाद दोनों में आपसी रंजिश रहा।

उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद ने फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम का किया शुभारंभ

स्वदेश संवाददाता

लोहरदगा : उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण ने सदर अस्पताल में फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम का शुभारंभ किया । उपायुक्त ने लाभुक के रूप में 13 वर्षीय किशोर को डीईसी की दवा पिलाकर व एल्बेण्डाजॉल की दवा खिलाकर इस अभियान की शुरूआत की। यह कार्यक्रम 10 फरवरी से 25 फरवरी 2024 तक चलेगा। मौके पर सिविल सर्जन डॉ राजमोहन खलखो, डॉ डीएन सिंह, एपिडेमियोलॉजिस्ट प्रशांत चौहान समेत बड़ी संख्या में स्वास्थ्य विभाग के पदाधिकारी व कर्मी उपस्थित थे।मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम का आयोजन 10 फरवरी को बूथ स्तर पर एवं 11 फरवरी से 25 फरवरी तक घर-घर भ्रमण कर लक्षित जनसंख्या को उम्र के अनुसार डीईसी एवं अल्बेन्डाजोल की एक-एक खुराक खिलाई जायेगी। इस वर्ष लोहरदगा जिला में लगभग 2,59,286 (पांच लाख उनसठ हजार दो सौ छियासी) लोगों को दवा खिलाने का लक्ष्य रखा गया है। जिले में कुल 717 बूथ बनाये गये हैं। दवा खिलाने के लिए सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में लगभग 1500 कार्यकताओं की प्रतिनियुक्ति की गई है। कार्यक्रम की सफलता हेतु व्यापक प्रचार प्रसार किया जा रहा है। कार्यक्रम में सिविल सर्जन ने लोहरदगा जिले के वासियों से अपील की है कि फाइलेरिया उन्मूलन के लिए यह अभियान चलाया जा रहा है। एक वर्ष से कम उम्र के बच्चों को यह दवा नहीं खिलाई जाएगी। एक से दो वर्ष के बच्चों को एल्बेंडाजोल की आधी गोली पानी मे मिलाकर देना है और डीईसी की गोली नहीं देना है। दो से पांच वर्ष के बच्चों को 01 डीईसी एवं 01 एल्बेंडाजोल की दवा खिलाई जाएगी। 6-14 वर्ष के बच्चों-किशोर/किशोरियों को 02 डीईसी एवं 01 एल्बेंडाजोल की दवा खिलायी जाएगी। 15 वर्ष या इससे अधिक उम्र के युवाओं,वयस्कों को 03 डीईसी एवं 01 एल्बेंडाजोल की गोली खिलायी जाएगी। दवा का कोई भी साइडइफेक्ट नहीं है। गर्भवती महिलाओं एवं गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति को यह दवा नहीं देना है। दवा खाली पेट नहीं देना है। फाइलेरिया एक ऐसी बीमारी है जिसकी वजह से प्रभावित अंगों जैसे हाथ पाँव (हाथी पांव) का फूलना और हाइड्रोसिल होता है।

सरस्वती पूजा को लेकर पत्थलगड़ा थाना में शांति समिति की बैठक संपन्न

स्वदेश संवाददाता

पत्थलगड़ा : थाना परिसर में आगामी सरस्वती पूजा को लेकर शनिवार को शांति समिति की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी सह अंचलाधिकारी किया संचालन थाना प्रभारी सचिन कुमार दास ने किया। शांति समिति की बैठक में जिप सदस्य रामसेवक दांगी, बीस सूत्री अध्यक्ष विकास यादव,सिंघानी मुखिया राधिका देवी, बरवाडीह मुखिया संदीप कुमार सुमन, मेराल मुखिया नितू देवी सांसद प्रतिनिधि अमित तिवारी व अन्य जनप्रतिनिधि तथा पूजा समिति के पदाधिकारी उपस्थित रहे।थाना प्रभारी ने उपस्थित लोगों से सरस्वती पूजा शांति पूर्वक मनाने कि अपील की। वहीं सोशल मीडिया पर पुलिस की पैनी नजर रहने की बात बताई गई।पूजा व विसर्जन जुलूस में डीजे पर अश्लील गाना बजाने पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाया गया है। साथ ही कहा गया कि पूजा में शांति भंग करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। प्रखंड विकास पदाधिकारी मोनी कुमारी ने उपस्थित लोगों से पूजा में शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की। उपद्रवियों पर रहेगा पहली नजर किसी तरह की सूचना तत्काल थाना को देने को कहा गया। बैठक में उप बीस सूत्री अध्यक्ष जितेंद्र दांगी, पूर्व मुखिया मेघन दांगी, पूर्व मुखिया कुसुमलता कुशवाहा व दोनों समुदाय के सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

सड़क दुर्घटना में ससुर और दामाद की मौत, ग्रामीणों ने किया सड़क जाम

लातेहार : लातेहार और चतरा जिले के सीमावर्ती क्षेत्र में सड़क दुर्घटना में ससुर और दामाद की मौत हो गई। मृतकों की पहचान बरियातू थाना क्षेत्र के डाकबंधी गांव निवासी बैजनाथ गंझु(65) और जोगियादी निवासी नारायण गंझू (40) के रूप में हुई। घटना के विरोध में स्थानीय लोगों ने शनिवार को लगभग दो घंटे तक राष्ट्रीय राजमार्ग को जाम रखा । जानकारी के अनुसार बैजनाथ गंझु अपनी दूसरी पुत्री की विवाह का कार्ड बांटने के लिए अपने बड़े दामाद दामाद नारायण गंझू के साथ मोटरसाइकिल से निकले थे। इसी दौरान बरछिया और जबरा गांव के बीच में सड़क पर कोयला लदे तेज रफ्तार हाईवा ने मोटरसाइकिल को सीधी टक्कर मार दी। इस घटना में नारायण गंझू की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। जबकि बैजनाथ गंझू की मौत इलाज के लिए ले जाने के दौरान हो गई। इधर में ससुर और दामाद की मौत के बाद स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश देखा गया। घटना के बाद मृतक के परिजनों और स्थानीय लोगों ने चतरा-बालूमाथ मुख्य मार्ग को लगभग 2 घंटे तक जाम रखा।

राम मंदिर की तर्ज पर निर्मित होगा सरस्वती संगम क्लब का गगनचुम्बी पूजा का पंडाल

- **सरस्वती पूजा के अवसर पर लगाए गए हैं डिज्नीलैंड मेला**

स्वदेश संवाददाता

पत्थलगड़ा :-चतरा जिले में प्रसिद्ध और चर्चित पत्थलगड़ा प्रखंड क्षेत्र के तेतरिया लेम्बोइया सरस्वती पूजा की तैयारी जोरों पर है सरस्वती संगम क्लब तेतरिया के अध्यक्ष प्रभात कुमार कोषाध्यक्ष अखिलेश अकेला प्रवक्ता दुर्गेश कुमार ने बताया कि इस बार अयोध्या में निर्मित श्री राम मंदिर के तर्ज पर बंगाल के कारीगरों के द्वारा पंडाल का निर्माण कराया जा रहा है जिसका लागत लगभग चार लाख पचहत्तर होगा राज्य स्तर पर सरस्वती पूजा का पंडाल आकर्षण का केंद्र रहेगा पंडाल निर्माण में कोलकाता के कारीगरों के द्वारा लगभग दो महीना पूर्व से ही लगातार कार्य किया जा रहा है प्रखंड क्षेत्र के लोगों में काफी उत्साह है पंडाल के बगल में रामचरित्र मानस का मुख्य प्रारूप स्क्रीन से आकर्षक लाइट के माध्यम से दिखाया जाएगा पूरे गांव को दुल्हन की तरह विद्युत साज-सजा से आकर्षक रूप से सजाया जा रहा है दुर्गेश कुमार ने बताया कि इस बार सरस्वती पूजा में लगभग 12 लाख रुपए खर्च अनुमानित किया जा रहा है पत्थलगड़ा में सरस्वती पूजा धीरे-धीरे महोत्सव का रूप लेते जा रहा है प्रखंड क्षेत्र में 100 से अधिक जगहों पर आकर्षक लाइट और पंडाल बनाए जा रहे हैं वहीं सरस्वती पूजा को देखते हुए सिंघानी स्थित बलथरवा बागी में डिज्नीलैंड मेला भी लगा है डिज्नीलैंड मेला में कई तरह के झूले का आनंद के साथ-साथ बच्चों के लिए मिकी माउस छोटे-छोटे झूले बच्चों की गाड़ी मेले में खाने पीने का कई सामान घर में दैनिक उपयोग के समान सहित कई तरह समान मिलेंगे मालूम हो कि सरस्वती पूजा के दिन पत्थलगड़ा प्रखंड क्षेत्र के लेम्बोइया ,तेतरिया में दूर-दूर से श्रद्धालु पहुंचते हैं ।

कस्तूरबा विद्यालय में नामांकन को लेकर पंचायतों में जनसंपर्क अभियान चलाया गया

इटखोरी/स्वदेश संवाददाता : प्रखंड के परसौनी स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में छात्राओं के नामांकन को लेकर विद्यालय की वार्डन बबली यादव के नेतृत्व में विद्यालय कर्मियों द्वारा कई पंचायतो में जनसंपर्क अभियान चलाया गया। इस मौके पर आजीविका की सरिता गीता नेहा व अन्य उपस्थित थी । इस दौरान कोनी पचमो परसौनी खड़ौनी हरदिया बनथू कंजिया समेत अन्य पंचायतो के गांवों में विद्यालय में नामांकन के लिए प्रचार प्रसार किया । वार्डन बबली यादव ने पंचायतों का भ्रमण कर लोगों को विद्यालय में नामांकन कराने के तरीके बताए। अभिभावकों को इस स्कूल में नामांकन के बाद छात्राओं को मिलने वाली सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने पंचायतों के पंचायत प्रतिनिधियों से भी नामांकन में यथा संभव सहयोग करने की अपील की । वर्ग 6 से 9 तक की पढ़ाई के साथ साथ आवासीय सुविधा है। सीट गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवार की बच्चियों के लिए सुरक्षित है। नामांकित छात्राओं को छात्रावास,ड्रेस,मेडिकल की मुफ्त सुविधा मिलती है एवं योग्य शिक्षक व शिक्षिकाओं द्वारा पठन पाठन का उचित इंतजाम है।

रंजय ने बनाया कमल फूल, कहा एक बार फिर मोदी सरकार

इटखोरी/स्वदेश संवाददाता : शनिवार को गांव चलो अभियान कार्यक्रम के तहत कोनी पँचायत के बूथ नम्बर पकरिया विद्यालय 239 , कोनी उच्च विद्यालय 240 , पचमो प्राथमिक विद्यालय 241, बनथू 242 में दीवार लेखन किया गया । इस मौके पर मुख्य रूप से बूथ नम्बर पकरिया विद्यालय 239 में कोनी पँचायत के प्रभारी मुखीया सह अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रखण्ड अध्यक्ष रंजय भारती कोनी उच्च विद्यालय 240 बूथ संख्या के प्रभारी भाजपा युवा मोर्चा प्रखण्ड अध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह , 242 बनथू बूथ के प्रभारी रामाधार राम युवा मोर्चा के नवनियुक्त उपाध्यक्ष सुकेश साव भाजपा नेता ओमप्रकाश सिंह कृष्ण कुमार समेत अन्य उपस्थित थे । इस कार्यक्रम के निमित बूथ संख्या 240 के प्रभारी भाजपा युवा मोर्चा के प्रखंड अध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह ने रामसेवक रजक को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया । सभी प्रभारियों नें अपने अपने बूथ पर दीवार लेखन कर सरकार की योजनाओं की जानकारी दी । इस मौके पर वक्तताओं ने कहा की कोनी पँचायत के प्रभारी मुखीया सह अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रखण्ड अध्यक्ष रंजय भारती व भाजपा युवा मोर्चा प्रखण्ड अध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह , किसान मोर्चा के प्रखण्ड अध्यक्ष रामाधार राम ने कहा कि पिछले पांच सालों में प्रधानमंत्री ने देश के विकास लिए बहुत कुछ किया है। उन्होंने बताया प्रधानमंत्री की 125 से ज्यादा ऐसी जनकल्याणकारी स्कीम है जिसका टारगेट गरीब से गरीब इंसान हैं। इन्होंने इस दौरान सरकार की किसान सम्मान निधि, पीएम आवास, बिजली, आयुष्मान योजना, हर घर नल व गरीब कल्याण आदि योजनाओं की सराहना की। उन्होंने भाजपा कार्यकताओं को पार्टी की रीढ़ बताया है। इस दौरान उन्होंने पार्टी के दीवार लेखन अभियान के तहत कमल का फूल बनाकर पार्टी का स्लोगन एक बार फिर से मोदी सरकार लिखा।

सड़क सुरक्षा जागरुकता रैली में शामिल हुए स्कूली बच्चे, लोगों को किया जागरुक

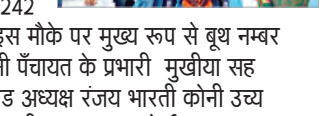

जमशेदपुर/स्वदेश संवाददाता: सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरुक करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इस क्रम आज उपायुक्त कार्यालय परिसर से जिला परिवहन कार्यालय सुरक्षा कोषांग की ओर से एक जागरूकता रैली निकाली गई। इस रैली में शहर के स्कूली बच्चे शामिल हुए। इस रैली का उद्देश्य खुद सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए आम जनों को इसके प्रति जागरूक करना है। यह रैली उपायुक्त कार्यालय से लेकर शहर के विभिन्न क्षेत्रों से गुजरी। इस दौरान हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया। इस मौके पर ट्रैफिक डीएसपी सुमित सिंह ने कहा कि सिर्फ कानून के पालन से ही सड़क दुर्घटना को रोका नहीं जा सकता। इसके लिए खुद लोगों को भी जागरूक होना होगा, तभी हादसों को रोका जा सकता है।

बीडीओ ने बिरहोर परिवारों के बीच मतदाता जागरूकता अभियान चलाया

स्वदेश संवाददाता

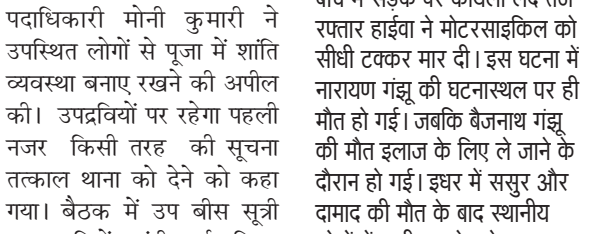

पत्थलगड़ा:प्रखंड क्षेत्र के ग्राम बरवाडीह के सीतलपुर टोला में प्रखंड विकास पदाधिकारी सह निर्वाचन पदाधिकारी मोनी कुमारी ने आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर बिरहोरो के बीच जागरूकता अभियान चलाया। जिसमें बिरहोर जनजाति के नए मतदाताओं एवं पुराने मतदाताओं को डमी ईवीएम मशीन के माध्यम से वोट करने का तरीका बताया गया। मालूम हो कि पत्थलगड़ा प्रखंड क्षेत्र के विनिन्न बूथ क्षेत्रों में वोटिंग का प्रतिशत बढ़ाने को लेकर लगातार मतदाताओं के बीच जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। प्रखंड विकास पदाधिकारी सह निर्वाचन पदाधिकारी मोनी कुमारी ने आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर स्वयं बिरहोर जनजाति परिवारों के बीच, घरों तक पहुंचकर लोगों को जागरूक किया। इसके अलावा नए मतदाताओं को डमी ईवीएम मशीन के माध्यम से बिरहोर जनजाति के मतदाताओं को वोट डालने का तरीका बताया गया। वहीं जनता उच्च विद्यालय खेल मैदान पत्थलगड़ा में हो रहे वॉलीबॉल टूर्नामेंट के फाइनल मैच में भी स्टेज के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक किया गया। मौके पर मोनी कुमारी ने बताया कि राष्ट्र की उन्नति के लिए सभी लोगों को बढ़- चढ़कर वोट करना चाहिए। जिससे आने वाला समय में अपना देश और सशक्त एवं मजबूत देश बन सके। इस मौके पर बीएलओ पर्यवेक्षक मोहम्मद असलम, राकेश प्रसाद के अलावे उस बूथ क्षेत्र के बीएलओ नीलू देवी सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

चार दिनों से लापता युवक का शव कुएं से बरामद

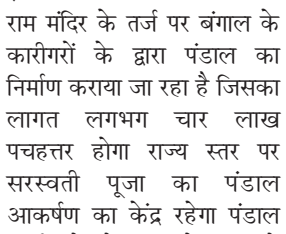

जमशेदपुर : बागबेड़ा थाना अंतर्गत स्टेशन रोड के समीप महुआ गली के एक कुंए से पुलिस ने 4 दिनों से लापता युवक का शव बरामद किया है। बताया जाता है कि बागबेड़ा रोड नंबर 1 का रहने वाला बबलू रजक नशे का आदि था। वह स्टेशन क्षेत्र में छोटा मोटा काम करता था। पुलिस को सोमवार की रात सूचना मिली थी कि एक युवक कुंआ में गिर गया है। इसके बाद पुलिस गोताखोरों की मदद से उसकी तलाश कर रही थी, लेकिन काफी खोजबीन के बाद उसका कुछ पता नहीं चला। आज सुबह दुबारा तलाशी लेने पर मृतक का शव बरामद हुआ। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। संभावना जताई जा रही है कि नशे की हालात में वह कुंए में गिर गया होगा। फिलहाल पुलिस घटना की जांच कर रही है।

ब्राउन शुगर कारोबारियों के विरुद्ध होगी कड़ी कार्रवाई : एसडीपीओ

स्वदेश संवाददाता

कार्रवाई

आदित्यपुर: पुलिस-प्रशासन ने आदित्यपुर सहित सरायकेला अनुमंडल क्षेत्र में ब्राऊन शुगर कारोबारियों के विरुद्ध कड़े तेवर दिखाना शुरू कर दिया हैष। इस क्रम में सरायकेला के नए एसडीपीओ दिलीप खलको के द्वारा आज लाव-लश्कर के साथ ब्राऊन शुगर के हब के रुप में कुख्यात हो चुके आदित्यपुर मुस्लिम बस्ती में पैदल मार्च किया गया। एसडीपीओ ने ब्राऊन शुगर के अवैध कारोबार से जुड़े लोगों को तत्काल क्षेत्र छोड़ देने अथवा अवैध कारोबार बंद करने, अन्यथा संपत्ति जब्त करने की चेतावनी भी दी। उन्होंने स्पष्ट रुप से कहा कि ब्राऊन शुगर को लेकर वरीय पदाधिकारियों का सख्त निदेश है और ब्राऊन शुगर के काले साम्राज्य को समाप्त करना उनकी पहली प्राथमिकता है, जो युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रही है। उन्होंने कहा कि ब्राऊन शुगर का कारोबार करते पकड़े जाने की स्थिति में किसी की भी पैरवी नहीं सुनी जायेगी और उनकी संपत्ति जब्त करने की कार्रवाई होगी। साथ ही ब्राऊन शुगर के अवैध कारोबारियों को चिह्नित कर उनका नाम गुंडा पंजी में दर्ज करने तथा जरुरत पड़ने पर सीसीए लगाने की कार्रवाई भी की जायेगी। मौके पर आरआईटी थाना प्रभारी सागर लाल महथा सहित सभी पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिसकर्मी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि पुलिस-प्रशआसन के तमाम दावों के बावजूद आदित्यपुर सहित सिंहभूम-कोल्हान क्षेत्र में ब्राऊन शूगर का अवैध कारोबार फैल चुका है, जबकि पहले सिर्फ मुस्लिम बस्ती से ही ब्राऊन शुगर का कारोबार होता था।

मौनी अमावस्या पर स्टील क्लब हाउस में हुआ प्रसाद का वितरण

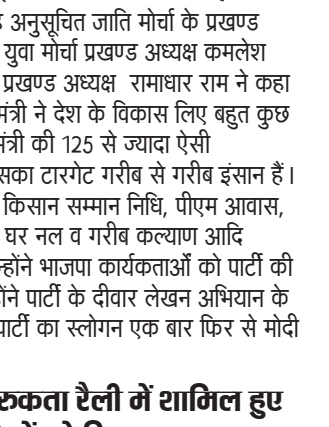

जमशेदपुर/स्वदेश संवाददाता : साकची स्टील सिटी हाउस क्लब में मौनी अमावस्या के अवसर पर महाप्रसाद का आयोजन किया गया। यह आयोजन पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष विनोद सिंह के द्वारा किया गया था। इस कार्यक्रम में हजारों भक्त प्रसाद ग्रहण करने पहुंचे। बताया जाता है कि यह आयोजन लगातार 25 वर्षों से किया जा रहा है। पूर्व में काली पूजा के दौरान भोग वितरण किया जाता था। इसके बाद से मौनी अमावस्या के अवसर पर यह आयोजन किया जाने लगा। मान्यता है कि मौनी अमावस्या के समय ही कलयुग का आगाज हुआ था, जिसे लेकर लोगों के बीच प्रसाद वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस महाप्रसाद कार्यक्रम के दौरान भजन कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस दौरान लोगों ने प्रसाद ग्रहण करने के साथ भक्ति संगीत का भी आनंद उठाया।

बैठक गांव चलो अभियान के तहत सिल्ली में भाजपा की बैठक सम्पन्न

सरकार की विभिन्न योजनाओं को लोगों तक पहुंचाना लक्ष्य : जयकांत

स्वदेश संवाददाता

सिल्ली : सिल्ली पंचायत के जाम टोला में शनिवार को भाजपा सिल्ली शक्ति केंद्र की बैठक भाजपा सिल्ली मंडल अध्यक्ष विनोद प्रसाद साहू की अध्यक्षता में की गई। बैठक में भाजपा के रांची लोकसभा विस्तारक जयकांत पासवान एवं सिल्ली विधानसभा विस्तारक मनीष कुमार मुख्य रूप से शामिल हुए। बैठक में गांव चलो अभियान के तहत सिल्ली शक्ति केंद्र के सभी बुथ अध्यक्षों के साथ चर्चा की गई। जयकांत पासवान ने कहा कि बैठक का मुख्य उदेश्य केंद्र सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं को लोगों तक पहुंचना है। उन्होंने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए गांव चलो अभियान को अति महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व के निर्देश पर 4 से 11 फरवरी तक गांव चलो अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत विधानसभा के सभी मंडलों में सभी गांव में प्रवासी कार्यकर्ता एक दिन 24 घंटे का प्रवास कर संपर्क अभियान चलाएंगे तथा सरकार द्वारा आम जनमानस के उत्थान के लिए चलाई गई विभिन्न योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने का काम करेंगे, ताकि अधिक से अधिक लोग इन योजना को लाभ ले सके। मौके पर मनीष कुमार ने कहा कि सरकार द्वारा चलाई गई कई योजनाएं हैं जो सीधा लोगों को लाभ पहुंचाते है। इसलिए हर कार्यकर्ता को जिम्मेदारी बनती है को अपने-अपने पंचायत और गांव में लोगों को योजनाओं के बारे में अवगत करायें। बैठक के दौरान बूथ अध्यक्षों को कई जिम्मेदारी सौंप गई। इस मौके पर राजेंद्र प्रसाद साय, पुर्णिमा सिंह देव, शैलेन्द्र बड़ाइक, कांचन सोनार, गुलाब सिंह, सुरज गोरांई, प्रदीप सोनार , अंबुज रजक, हेमंत कोइरी, कृष्णा रविदास, रामचरण बेदिया, विवेकानंद महली, रघुनाथ साय समेत कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संपादकीय

डिजिटल संसार में सिमटती बचपन

इसमें कोई दोराय नहीं कि डिजिटल युग में बच्चों के पालन-पोषण के सफर में कई तरह की चुनौतियां मौजूद हैं। ऑनलाइन कंटेंट से भरी दुनिया में बड़े हो रहे बच्चों के साथ, रचनात्मक जुड़ाव और हानिकारक लत के बीच की रेखा तेजी से धुंधली होती जा रही है। देश में स्मार्ट पैरेंटिंग सॉल्यूशंस के क्षेत्र में अग्रणी 'बातू टेक' ने हाल ही में किये गये एक सर्वेक्षण के नतीजों की घोषणा की है। यह सर्वेक्षण बच्चों में स्क्रीन की लत, गेमिंग और वयस्क कंटेंट की खपत के बारे में भारतीय माता-पिता को आगाह करता है। तीन हजार लोगों के बीच किये गये इस सर्वेक्षण से पता चला कि 95 प्रतिशत भारतीय माता-पिता स्क्रीन की लत को लेकर ज्यादा परेशान हैं। 80 फीसद ने गेमिंग की लत और 70 प्रतिशत ने एडल्ट कंटेंट की खपत को लेकर चिंता जतायी है। भारतीय जीवनशैली पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव काफी हद तक बढ़ा है। हम उनके रहन-सहन की आधुनिक शैली को तो अपना लेते हैं पर उनकी कुछ अच्छी चीजों की अनदेखी कर देते हैं। मसलन आज से दो दशक पहले ब्रिटेन के प्राइमरी स्कूलों में पढ़ रहे करीब 60 फीसदी बच्चों के पास मोबाइल फोन होते थे। तब के हेलीफैक्स के आंकड़ों के मुताबिक सात से 11 साल के लगभग 60 फीसदी बच्चे मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते थे। सर्वेक्षण के मुताबिक ब्रिटेन के बच्चे बचत के मामले में बड़ों से काफी आगे थे। ये बच्चे पॉकेट मनी या दूसरे स्रोतों से होने वाली इनकम का 60 फीसदी हिस्सा बचाकर रखते थे। वह ऐसा कुछ नहीं करते थे कि उनके परिजन परेशान हों। वहीं, आज के संदर्भ में भारत के माता-पिता के लिए बच्चों का मोबाइल फोन से चिपके रहना किसी चुनौती से कम नहीं है।

'बातू टेक' के संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक संदीप कुमार कहते हैं कि हालांकि इससे पहले के एक मुताबिक अत्यधिक स्क्रीन टाइम बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। उनके संज्ञानात्मक विकास में बाधा डाल सकता है और सामाजिक संपर्क को प्रभावित कर सकता है। वह कहते हैं कि सबसे ज्यादा परेशानी बच्चों में गेमिंग की लत की बढ़ती प्रवृत्ति है। जर्नल ऑफ बिहेवियरल एडिक्शन में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, दुनिया भर में लगभग तीन-चार प्रतिशत बच्चे समस्या की हद तक गेमिंग व्यवहार का अनुभव करते हैं। यह लत विभिन्न प्रकार के हानिकारक प्रभावों को जन्म दे सकती है, जिसमें खराब शैक्षणिक प्रदर्शन, नींद के पैटर्न में व्यवधान और शारीरिक गतिविधि में होने वाली कमी शामिल हैं। इसके अलावा, हिंसक या आक्रामक स्पोर्ट्स कंटेंट में लंबे समय तक संपर्क बच्चों में बढ़ती आक्रामकता और वास्तविक जीवन की हिंसा के प्रति असंवेदनशीलता को बढ़ावा देती है। कुमार का मानना है कि माता-पिता और शिक्षकों को गेमिंग की लत के संकेतों के बारे में पता होना चाहिए और बच्चों के जीवन में गेमिंग और अन्य गतिविधियों के बीच एक स्वस्थ संतुलन सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय कदम उठाने चाहिए। जुड़ाव और संपर्क के वैकल्पिक स्वरूपों को बढ़ावा देकर और स्पष्ट सीमाएं तय करके हम बच्चों को टेक्नोलॉजी को लेकर एक बेहतरीन नजरिया विकसित करने में मदद कर सकते हैं और अत्यधिक गेमिंग के नकारात्मक परिणामों को रोक सकते हैं। बातू टेक डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने और बच्चों को स्क्रीन पर ज्यादा समय बिताने, गेमिंग की लत और इंटरनेट के अत्यधिक इस्तेमाल के खतरों से बचाने के बीच एक बारीक संतुलन के महत्व को समझता है। बातू टेक का सर्वे कई समाचार रिपोर्ट्स और ऑनलाइन चचाओं के निष्कर्षों के बाद किया गया। इन निष्कर्षों में भी बच्चों के अनुचित सामग्री के संपर्क और अत्यधिक स्क्रीन समय के बारे में बढ़ती चिंताओं को सामने रखा है। वह कहते हैं कि जीवन के हर पहलू में टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल के साथ माता-पिता के लिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि वे पूरी तरह से सोच-समझकर ऐसा दृष्टिकोण अपनाएं जोकि यह सुनिश्चित कर सके कि उनके बच्चे टेक्नोलॉजी के साथ एक जिम्मेदार और सामंजस्यपूर्ण संबंध विकसित कर सकें।

अध्यात्म पथ

अभिवादन के समय क्यों दो बार लिया जाता है राम-राम का नाम

हिंदू संस्कृति और सभ्यता के मुताबिक किसी व्यक्ति से मिलने के दौरान या तो हाथ जोड़कर नमस्कार किया जाता है। या भगवान का नाम लेकर अभिवादन किया जाता है। आपने भी सुना होगा कि जब लोग एक-दूसरे से मिलते हैं तो अभिवादन करते हुए राम-राम बोलते हैं। आपको बता दें कि अभिवादन का यह तरीका काफी ज्यादा पुराना है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि जब अभिवादन के दौरान राम-राम दो बार क्यों बोला जाता है। वहीं, जब किसी अन्य भगवान का नाम लेकर अभिवादन करते हैं, तो उच्चारण में दो बार नाम क्यों लिया जाता है। अगर आपका जवाब नहीं है, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिये हम आपको बताने जा रहे हैं कि अभिवादन में दो बार नाम का उच्चारण करने के धार्मिक व ज्योतिष महत्व के बारे में। आपको बता दें कि दो बार राम नाम बोले जाने के पीछे असल में अंक ज्योतिष की गूढ़ गणना है। हिंदी शब्दावली के मुताबिक भगवान राम शब्द का पहला अक्षर यानी की 'र' 27वें नंबर पर आता है। वहीं, इस शब्द का दूसरा अक्षर 'आ' मात्रा के रूप में 'र' के साथ लगता है। यह दूसरे स्थान पर और 'म' 25वें स्थान पर आता है। ऐसे में जब आप इन दोनों शब्दों के नंबरों को जोड़ते हैं, जैसे- र (27)+आ (2)+म (25)= राम (54)। ऐसे में एक बार राम का नाम लेने से 54 अंक का योग पूरा होता है। तो वहीं जब आप दो बार राम-राम बोलते हैं, तो 108 अंक होते हैं। अगर आप सरल शब्दों में कहा जाये, तो जब अभिवादन में दो बार राम-राम बोला जाता है। तो इसकी अंक संख्या 108 हो जाती है। वहीं 108 मानकों की एक माला पर राम नाम के जाप के बराबर माना जाता है।

आओ वसंत...लहको, महको और महकाओ

हृदयनारायण दीक्षित

> वसंत बौद्धिक समस्या भी है। प्रश्न है कि विश्व मानवता से वसंत का प्रथम परिचय कब हुआ? प्रकृति के हरेक जीव को मदमस्त करने वाले ऋतुराज कब पहचाने गये? ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम अभिलेख है। यहां सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को पुरुष रूप में कल्पित किया गया हैझारों सिर और हजारों पैरों वाला यह पुरुष मजेदार है। यह पुरुष समय का अतिक्रमण करता है। ऋषि के अनुसार जो हो चुका है और जो होगा वह सब पुरुष ही है। इसके एक भाग में यह विश्व है शेष तीन भाग अनंत दिव्यलोक हैं। यह ब्रह्माण्ड से भी विराट है।" सृष्टि सृजन एक पवित्र यज्ञ है। इसी सूक्त में कहते हैं "सृजन यज्ञ में यही पुरुष हवि (अग्नि में अर्पित सामग्री) बना और वसंत बना घृत-वसन्तो अस्यासी दाज्यं।" वसंत ऋग्वेद में है। इतना तय है कि वसंत ऋग्वेद के पुरुष सूक्त से प्राचीन है। पुरुष गहन दार्शनिक अनुभूति है। भारत की वसंत अनुभूति अतिपुरातन है।

ऋतुराज वसंत आ गए। सुस्वागतम! आओ वसंत। लहको, महको, महकाओ। दिग्दिगंत। भारतीय सौन्दर्यबोध के ऋतुराज को नमस्कार है। प्रकृति आपकी प्रियतमा है। वह अधीर प्रतीक्षा में थी। प्रकृति ने अपने अरूण तरूण अंग खोले। रूप रूप प्रतिरूप और बहुरूप सौन्दर्य चरम परम होते गये। अपना सारा रूप रस गंध उड़ेल दिया उसने। कलियां चटकीं, फूल खिले। वायु गंध आपूरित हैं। अनेक छन्दों में स्तुतियां है। ऋग्वेद का प्रख्यात छन्द गायत्री और साम का वृहत्साम। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इन्हीं दोनो छन्दों में अपनी व्याप्ति बताई थी और अंत में कहा था-ऋतुओं में मैं वसंत हूं। प्रकृति वसंत की अगवानी में पुलकित है। अपनी वीणा के तार छेड़ चुकी है। प्रकृति का सृजन मधुमय और रसमय है। सोम ओम की प्राकृतिक मस्ती है। रस रस प्रीति। रस घनत्व से धरती अंतरिक्ष आच्छादित हैं। लेकिन भारत के कुछ लोग विदेशी वेलेन्टाइनी शीर्षासन में हैं। वे ऋतुराज और प्रकृति का प्रेम रस छोड़कर विदेशी वेलेन्टाइनी मुद्रा में हैं। श्लील अश्लील हो रहा है। वसंत उनके लिए बस-अंत है।

वसंत बौद्धिक समस्या भी है। प्रश्न है कि विश्व मानवता से वसंत का प्रथम परिचय कब हुआ? प्रकृति के हरेक जीव को मदमस्त करने वाले ऋतुराज कब पहचाने गये? ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम अभिलेख है। यहां सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को पुरुष रूप में कल्पित किया गया हैझारों सिर और हजारों पैरों वाला यह पुरुष मजेदार है। यह पुरुष समय का अतिक्रमण करता है। ऋषि के अनुसार जो हो चुका है और जो होगा वह सब पुरुष ही है। इसके एक भाग में यह विश्व है शेष तीन भाग अनंत दिव्यलोक हैं। यह ब्रह्माण्ड से भी विराट है।" सृष्टि सृजन एक पवित्र यज्ञ है। इसी सूक्त में कहते हैं "सृजन यज्ञ में यही पुरुष हवि (अग्नि में अर्पित सामग्री) बना और वसंत बना घृत-वसन्तो अस्यासी दाज्यं।" वसंत ऋग्वेद में है। इतना तय है कि वसंत ऋग्वेद के पुरुष सूक्त से प्राचीन है। पुरुष गहन दार्शनिक अनुभूति है। भारत की वसंत अनुभूति अतिपुरातन है। इसका मुख्य कारण है-प्रकृति के प्रति हमारे पूर्वजों की गहन प्रीति। इस प्रीति का कारण रूपों को ध्यान से देखने की द्रष्टा प्रवृत्ति है। द्रष्टाभाव से उगे सौन्दर्यबोध का चरम परम वसंत है।

प्रकृति के रूप रम्य हैं। भारतीय द्रष्टा भाव और भी रम्य है। ऋग्वेद के ऋषि को वसंत सृजन यज्ञ कार्य में घी जैसा जान पड़ता है। वसंत भावोत्तेजक है। घी वैदिक ऋषियों का प्रिय रस है। रस का सम्बंध स्वाद से है। जिह्वा रस लेती है इसीलिए वह रसना है। ऋषियों के भावबोध में अग्नि घृत प्रिय हैं। अग्नि की अन्य अनेक विशेषताएं भी हैं। सबसे मजेदार बात है कि वे कवि भी हैं और उनकी जीभ मधुमती है। ऋषि स्वयं कवि हैं स्वाभाविक ही उनके प्रिय देवता भी कवि हैं। प्रकृति को देखने के लिए गीता वाले दिव्य चक्षु की जरूरत नहीं पड़ती। कृष्ण ने अर्जुन को विराट रूप दिखाने के पहले दिव्य चक्षु दिए थे। प्रकृति और हम अंगांगी हैं। हम प्रकृति में हैं, प्रकृति के हैं और प्रकृति हम में हैं। हम सब मधुप्रिय हैं। ऋषि भी मधुप्रिय हैं। वे प्रकृति के सभी रूपों को मधुमय देखने के अभिलाषी हैं। बार-बार गुनगुनाने लायक एक मंत्र (ऋ0 1.90) में कहते हैं 'हवाएं मधु आपूरित हों। प्रकृति चक्र मधुमय हो। नदियों के जल मधुमय हों। औषधियां, वनस्पतियां मधुर हों। पृथ्वी की धूलि और सूर्य की किरणें भी मधुर हों।' वसंत मधु अनुभूति का दर्शन दिग्दर्शन है। ऋग्वेद और उसके पहले से ही यह अनुभूति लोकजीवन को रस आपूरित करती आई हैं। रस का यह स्रोत कभी रीता नहीं हुआ। तैत्तिरीय ब्राह्मण में वसंत आगमन पर देवता भी आनंदमगन बताए गये हैं। माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी वसंत स्वागत की मुहूर्त है। यही वाग्देवी सरस्वती के उदय होने की वेला है। भारतीय प्रज्ञा की आराध्य हैं सरस्वती। वे हंसवाहिनी हैं। वीणावादिनी हैं। ऋग्वेद व अथर्ववेद में वे एक नदी हैं। ऋग्वेद के ऋषियों की नदीतमा। उन्हीं की गोद में और उनका जल रस पीते भारतीय दर्शन ने अपनी काया और कान्ति पाई। इन्हीं के तट पर गायत्री जैसे अनेक मंत्र उगे। वैदिक ऋषियों ने सरस्वती को मां जाना। यहीं यज्ञ चले, यज्ञ अग्नि से साक्षात्कार हुए ऋषियों के। सरस्वती पुत्रों को भरतजन नाम मिला सरस्वती तट पर। यहीं इसी तट पर अग्निधर्मा सत्य अभीप्सा भारत कहलाई-तस्माद् अग्निर्भारत। फिर यही सरस्वती नदी रूप में विलुप्त हो गयीं। वैलेन्टाइनी सरस्वती को कल्पना मानते थे। अब सरस्वती का अस्तित्व सिद्ध हो चुका है। सरस्वती ने भारत के मन को नीर-क्षीर विवेकी बनाया। वाग्देवी सरस्वती विवेक की अधिष्ठात्री बनी। वसंत की मस्ती में विवेक का अनुशासन जरूरी है। सोम मस्ती है और ओम् जागरण। परम्परा में दोनो हैं। वसंत के साथ सरस्वती का भी उगना सकारण है। वसंत अप्रतिम सौन्दर्यबोध है तो सरस्वती अप्रतिम आत्मबोध। जगत में रस आपूरण है। इस रस का अजर अमर और अक्षय रस स्रोत महारस है। तैत्तिरीय के ऋषि ने उसे रसो वे सः गाया है। वसंत वैदिक मंत्रों में है। परवर्ती साहित्य में है। कालिदास के सृजन में प्रकृति की यह तरुणाई मोहक है। हिरणी हिरण की पीठ सींग से खुजलाती है। वसंत विह्वल नायिका इरावती नायक अग्निमित्र को पुष्प गुच्छ भेजती है। तुलसीदास संत थे। वसंत ने उन्हें भी नहीं छोड़ा। तुलसी की अनुभूति में वसंत प्रभाव मुर्दो को भी हिला देता है- 'जागे मनोभव मुएंहु मन वन सुभगता न परे कही।' श्रीराम मंगल भवन हैं, अमंगलहारी हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भी हैं। लेकिन कविता में वे भी वसंत खेलते हैं-खेलत वसंत राजाधिराज। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हमारे गांव के पड़ोस के। उनकी वसंत अनुभूति का क्या कहना? गाया है 'वर्ण गंध धर मधुमरन्द भर तरू-उर की अरूणिमा तरूणतर।' कालिदास, जैसी वसंत अनुभूति को आज हम सोच भी नहीं सकते। निराला के पड़ोसी होकर भी हम लोग वसंत रस का स्वाद नहीं पाते। क्या करें? सोशल नेटवर्किंग में वसंत गंध की कोई जगह नहीं। चैटिंग का बतरस है। बात का बतंगड़ है। अब 'सखि वसंत आया' जैसी शब्द धुन की फिक्र किसको है।

वसंत हमारी सांस्कृतिक अनुभूति भी है। आस्था नही, देखी जांची, परखी प्रत्यक्ष सांस्कृतिक संपदा। प्रकृति छन्दबद्ध है। अराजक नहीं। प्रकृति नियम आबद्ध है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति की नियमबद्धता और छन्दस। गति को ऋत कहा है। ऋत अन्तस प्रवाह है और ऋतु इसी छन्दबद्ध प्रवाह का चेहरा। गतिशील जगत में ऋत के कारण परिवर्तन आते हैं। भारत में मोटे तौर पर 6 ऋतुएं हैं। लेकिन मस्त वसंत ऋतुराज हैं। वसंत स्वयं मस्त है, मस्ती देते भी हैं। वे ऐसे वैसे मनमोहन नहीं हैं। वे जैसे मनमोहन हैं, प्रकृति के हरेक अंग को वैसी ही मनमोहन तरंग से भर देते हैं। वे सृष्टि के सभी घटकों को नृत्य तरंग और उमंग देते हैं। वसंत भारतीय लोकजीवन का उल्लास हैं। शुद्ध भौतिक लेकिन रस आपूरण में परिपूर्ण आध्यात्मिक भी। वसंत सनातन हैं, पुरातन हैं और हर बरस नित नए भी हैं। प्रज्ञा और मस्ती के परम्परा प्रवाह को गति देते हैं। शुभकामना है कि यह वसंत आप सबको नवउमंग और नवतरंग के उल्लास से भरे।

- (लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।)

अब राजस्थान में खेती-किसानी को मिलेगा बूस्ट

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

> अर्थशास्त्रियों व विशेषज्ञों द्वारा जिस बात पर जोर दिया जाता रहा है लगता है उस पर कोई सरकार पहली बार इतनी गंभीर नजर आ रही है। भजनलाल सरकार के पहले अंतरिम बजट में श्री अन्न योजना को लेकर सरकार की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है। सरकार ने 12 लाख किसानों को मक्का बीज, 8 लाख काश्तकारों को बाजरा व एक लाख काश्तकारों को ज्वार के उन्नत गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराने की घोषणा की है।

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार का अंतरिम बजट प्रस्तुत खेती-किसानी को बूस्ट देने वाला है। राज्य की उपमुख्यमंत्री व वित्तमंत्री दीया कुमारी ने इसे केवल तीन-चार माह के सरकार चलाने के खर्चों को पारित कराने तक ही सीमित नहीं रखकर सर्वस्पर्शी अंतरिम बजट प्रस्ताव प्रस्तुत कर साफ संदेश दे दिया है। उन्होंने राज्य सरकार की प्रमुख प्राथमिकताओं और विकास का रोडमेप सामने रखा है। केन्द्र सरकार की तरह ही यह अंतरिम बजट युवा, महिला, गरीब और किसान केन्द्रित है। लगभग सभी पक्षों को लेकर राज्य सरकार की इच्छाशक्ति को सामने रख दिया गया है। इसमें खेती-किसानी पर खास जोर दिया गया है। वित्तमंत्री दीया कुमारी ने बजट प्रस्तावों को पीएम किसान सम्मान निधि को बढ़ाने तक ही सीमित नहीं रहकर कृषि क्षेत्र में अल्पकालीन और दीर्घकालीन विकास का रोड़मेप सामने रखा है। इनसे निश्चित रूप से अल्पकालीन नहीं अपितु खेती किसानी में दीर्घकालीन सुधार होगा वहीं किसानों को दीर्घकालीन लाभ प्राप्त होगा।

अर्थशास्त्रियों व विशेषज्ञों द्वारा जिस बात पर जोर दिया जाता रहा है लगता है उस पर कोई सरकार पहली बार इतनी गंभीर नजर आ रही है। भजनलाल सरकार के पहले अंतरिम बजट में श्री अन्न योजना को लेकर सरकार की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है। सरकार ने 12 लाख किसानों को मक्का बीज, 8 लाख काश्तकारों को बाजरा व एक लाख काश्तकारों को ज्वार के उन्नत गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराने की घोषणा की है। तिलहन और दलहन को बढ़ावा देने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और सहकारिता मंत्री अमित शाह की प्रतिबद्धता को ही ध्यान में रखते हुए सात लाख काश्तकारों को सरसों और चार लाख किसानों को मूंग व एक लाख किसानों को मोठ के उन्नत बीज उपलब्ध कराने की घोषणा की है। अब इससे साफ हो जाता है कि इससे किसान, खेती ओर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को ही सीधा-सीधा लाभ मिलेगा। बीज वितरण होगा तो वह खेती में ही काम आयेगा। उन्नत बीज होगा और उससे बाजरा, मक्का, ज्वार, सरसों, मूंग मोठ आदि का उत्पादन बढ़ेगा और इसका लाभ भी किसान और साथ-साथ देश और प्रदेश को मिलेगा। मेरा आरंभ से ही मानना रहा है कि किसानों को ऋण माफी या नकद अनुदान के स्थान पर उतनी राशि का कुछ अंश भी यदि इनपुट यानी कि खाद-बीज के रुप में दिया जाये तो सही मायने में यह काश्तकार की सहायता है। दरअसल अनुदान के रूप में नकद राशि मिलना चाहे वह ऋण माफी हो या अन्य तो उसका उत्पादकता से दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं रहता और इससे काश्तकार को जो लाभ पहुंचाने की सरकार की मंशा होती है वह पूरी भी नहीं हो सकती। भले ही ऋण माफी या नकद राशि से किसान खुश हो जाए पर जो खेती-किसानी को वास्तविक लाभ इनपुट वितरण से हो सकता है वह किसी दूसरे विकल्प से नहीं। अच्छी बात यह है कि दीया कुमारी ने अंतरिम बजट में खेती-किसानी के लिए आधारभूत सुविधाओं के विस्तार को भी उतना ही महत्व दिया है जितना प्रमाणित गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध कराने पर दिया है। राजस्थान एग्रीकल्चर इंफ्रा मिशन के लिए दो हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। इसमें पानी के संरक्षण हेतु 20 हजार फार्म पॉन्ड, 10 हजार किलोमीटर सिंचाई पाइप लाइन, 50 हजार किसानों को तारबंदी हेतु सहायता, 5 हजार वर्मी कंपोस्ट के साथ ही कृषि प्रसंस्करण उद्योगों को बढ़ावा देने जैसे प्रावधान शामिल हैं। इसके अलावा 500 कस्टम हायरिंग सेंटर में ड्रोन जैसी सुविधा उपलब्ध कराना है। इससे जहां एक और पानी की एक-एक बूंद सहेजी जा सकेगी और खेती में सिंचाई के पानी की छीजत को कम किया जा सकेगा। वहीं वर्मी कंपोस्ट से जैविक खेती को बढ़ावा मिलेगा और ड्रोन जैसी तकनीक हायरिंग आधार पर किसान प्राप्त कर सकेंगे। दीया कुमारी ने पीएम किसान सम्मान निधि भी 6 हजार से बढ़ाकर 8 हजार रुपये करने की घोषणा की है।

गेहूं के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर 125 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देने की बात भी कही है। डेयरी के साथ ही पशुपालन को भी उतना ही महत्व दिया गया है। यह नहीं भूलना चाहिए कि एक समय था जब खेती के साथ पशुपालन एक दूसरे के पूरक हुआ करते थे। हालांकि कृषि में उपकरणों/यंत्रों के उपयोग के कारण पशुपालन प्रभावित हुआ है पर पशुपालन ही किसान की आर्थिक उन्नति का प्रमुख माध्यम बन सकता है। यही कारण है कि 5 लाख गोपाल क्रेडिट कार्ड जारी करने का प्रावधान करते हुए एक-एक लाख रुपये का ब्याजमुक्त ऋण देने का प्रस्ताव है। निश्चित रूप से इससे पशुपालन को प्रोत्साहन मिलेगा। एक बात साफ हो जानी चाहिए कि यदि कोई सरकार खेती-किसानी का वास्तविक भला चाहती है तो उसे खेती के क्षेत्र में दी जाने वाली सहायता राशि का उपयोग उन्नत प्रमाणिक बीज उपलब्ध कराने में करना चाहिए। इससे केवल किसान ही नहीं अपितु देश ओर प्रदेश को समग्र रूप से मिल सकता है। यह साफ हो जाना चाहिए कि कृषि उत्पादन में कमी या बढ़ोतरी अर्थ व्यवस्था की सीधे-सीधे प्रभावित करती है। कोरोनाकाल हमारे सामने उदाहरण है तो रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराइल-हमास युद्ध आदि इसके जीते जागते उदाहरण है। खाद बीज की सहज उपलब्धता के साथ ही यदि किसानों को उनकी पैदावार का पूरा पैसा मिलने लगे तो निश्चित रूप से किसान समृद्ध होंगे और इसका लाभ सामाजिक -आर्थिक विकास में प्राप्त हो सकेगा।

- (लेखक,स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

RNI (JHAHIN/2016/69693), स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजय सिंह द्वारा 237-बी,रोड़ न. 2, अशोकनगर, रांची 834002 से प्रकाशित एवं शिवासाई पब्लिकेशन प्रा.लि.,काठीटांड,(नियर टेंडर बगीचा) रातू, रांची-835222 झारखंड से मुद्रित। **प्रधान संपादक :** मंगल पाण्डेय, **संपादक** : संजय सिंह*, **विज्ञापन एवं प्रसार :** 8092174888, 7903659692, **कार्यालय:** 0651-7961780, किसी भी प्रकार के विवाद में न्यायिक क्षेत्र रांची होगा। (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार)

लोयोला विद्यालय में दो दिवसीय प्रथम वार्षिक खेल प्रतियोगिता सम्पन्न

स्वदेश संवाददाता

चरही। चरही के लाल बंगला स्थित लोयोला विद्यालय ने अपनी पहली वार्षिक खेल प्रतियोगिता 2023-24 भव्य और शानदार ढंग से मनाया। इस खेल उत्सव की शुरुआत गत 7 फरवरी को चरही चौक से मशाल जलाकर और गुब्बारे के साथ की गई थी जहां बेहरा पंचायत के मुखिया और मुखिया संघ के अध्यक्ष देवकी महतो उपस्थित थे। अगले दिन 8 फरवरी 24 को स्कूल ने छात्रों के लिए सिट एंड ड्रॉ प्रतियोगिता और सैक रेस का आयोजन किया गया। इस दिन कोडरमा के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ दीपक कुमार सिन्हा एवं कंप्यूटर प्रोग्रामर एवं समाहरणालय पदाधिकारी मुख्य अतिथि के रूप में किशलय कुमार उपस्थित थे। सिट एण्ड ड्रा प्रतियोगिता में कक्षा सात के बादल कुमार प्रथम, कक्षा 8 वीं की अर्चना कुमारी द्वितीय एवं कक्षा चौथी की स्वाति कुमारी तृतीय स्थान पर रहीं। बोरी दौड़ प्रतियोगिता में कक्षा 2 का मोहित प्रथम, कक्षा 1 का अनुज द्वितीय तथा कक्षा यूकेजी का प्रियांशु तृतीय स्थान पर रहे। स्कूल ने महिला अभिभावकों के लिए म्यूजिकल चेयर की भी व्यवस्था की। प्रतियोगिता में रेनू देवी प्रथम एवं निशा देवी द्वितीय स्थान पर रहीं।

दोनों मुख्य अतिथियों ने सभी विजेताओं को मेडल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के दूसरे दिन 9 फरवरी को स्कूल के चेयरमैन आरएन मोदी, सचिव पंकज वर्णवाल सहित सभी विद्यालय प्रबंधन उपस्थित थे। इस दिन मुख्य अतिथि के तौर पर समाज सेविका डॉ शालिनी गुप्ता भी मौजूद रही। इसके अलावा चरही थाना के सहायक अवर निरीक्षक भोला राम सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस दिन स्कूल ने जूनियर्स के लिए कई और खेलों का आयोजन किया और कक्षा 1 से 8वीं तक के लिए कबड्डी का आयोजन किया गया। महिला अभिभावकों ने धागा और सुई प्रतियोगिता में भाग लिया और पुरुष अभिभावकों ने विभिन्न खेल गतिविधियों में भाग लिया। दोनों दिन स्कूल ने खेल गतिविधियों के बीच कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया। इस अवसर पर निदेशक एमके बरनवाल ने बताया कि स्कूल हमेशा शैक्षणिक के साथ-साथ सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदान करता रहा है। इसका मतलब यह नहीं है कि स्कूल केवल गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। स्कूल सीबीएसई दिशानिर्देशों और नई शिक्षा नीति का पालन कर रहा है। प्रिंसिपल सुभाशीष पाइन ने कहा कि स्कूल चरही में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहा है और सभी शिक्षक हर बच्चे के समग्र विकास के लिए बहुत मेहनत कर रहे हैं। इन दौरान शिक्षक अभिमन्यु कुमार, नीतू कुमारी, प्रियंका कुमारी, स्वेता कुमारी, टेरेसा गिल्बर्ट, अलीशा, सलमा खातून व शबनम होरो मौजूद रहे।

धनवार मुखिया राजेन्द्र प्रसाद ने नव पदस्थापित एसडीओ से किया मुलाकात

स्वदेश संवाददाता

पंचायत के विकास में पदाधिकारियों का सहयोग अपेक्षित : राजेन्द्र प्रसाद

बरही। शनिवार को धनवार पंचायत के उत्कृष्ट मुखिया राजेंद्र प्रसाद ने बरही नवपदस्थापित अनुमंडल पदाधिकारी जोहन टुडू से उनके कार्यालय जाकर शिष्टाचार मुलाकात किया। मुलाकात के दौरान उन्हें डायरी और बुके देकर सम्मानित किया, जिसके बाद मुखिया ने बरही एसडीओ को अपने पंचायत की वस्तु स्थिति से अवगत कराया और कहा कि पंचायत के विकास में उनका सहयोग जरूरी है। जिसके बाद मुखिया राजेंद्र प्रसाद ने बरही प्रखंड मुख्यालय स्थित जेएसएलपीएस कार्यालय पहुंचकर बीपीएम दीपक कुमार को स्थानांतरण पर बुके और डायरी देकर विदा करते हुए उनके सुखद जीवन की कामना की। साह ही नव पदस्थापित बीपीएम सुजाता सोनी को बुके और डायरी देकर सम्मानित किया और उनसे बेहतर कार्यों की अपेक्षा की। कहा कि दीपक कुमार का कार्यकाल प्रशंसनीय है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने से लेकर उनके सभी समस्याओं के निदान को लेकर वह प्रयासरत रहते थे। नए बीपीएम से भी स्वयं सहायता से जुड़ी महिलाओं को काफी सहयोग की अपेक्षा है। मौके पर मुखिया के साथ प्रकाश साव, ब्रह्मदेव यादव सहित अन्य लोग मौजूद थे।

पांच ब्राउन शुगर बिक्री करते हुए 5 तस्कर गिरफ्तार, भेजे गए जेल

स्वदेश संवाददाता

कटकमसांडी। प्रखंड क्षेत्र में नशे की लत कम उम्र के लड़के को इस कदर बढ़ रहा है कि आने वाले समय में लोगों को इस लत से छुटकारा दिलाना काफी मशक्कत करना पड़ा सकता है। कटकमसाडी प्रखंड लगभग सभी पंचायतों में दारू, चरस, गांजा, ब्राउन शुगर, कोरेक्स, चरम सीमा पर अपनाया जा रहा है। नशा के खिलाफ पेलावल के स्थानीय लोगों के द्वारा काफी हद तक काबू पाया गया लेकिन पुरे तरह से नहीं खत्म नहीं हो सका है। ताजा मामला रोमी गांव से ब्राउन शुगर के 32 पुड़िया और 10 पीस नशीली कोरेक्स कप सिरप बरामद किया गया है, जिसमें रोमी निवासी अमीर राजा, मोहम्मद मोहसिन, कमरे आलम, तनवीर खान, कुर्बान खान, सभी रोमी के बताया जा रहे हैं, वहीं ब्राउन शुगर के 32 पुड़िया का मुख्य सरगना अमीर राजा है। सभी आरोपियों को न्याय हिरासत भेज दिया गया।

झारखंड बालिका आवासीय विद्यालय में नामांकन को लेकर बैठक संपन्न

स्वदेश संवाददाता

जल्द प्रारम्भ होगी नामांकन प्रक्रिया

दारू। झारखंड बालिका आवासीय विद्यालय हरली में नामांकन को लेकर विद्यालय प्रशासन व जनप्रतिनिधियों के साथ शनिवार को विद्यालय प्रांगण मेंबैठक की गई। विद्यालय में कक्षा 6 से लेकर क्लास 9 तक के बच्चों का नामांकन लिया जाएगा। नामांकन के लिए प्रपत्र विद्यालय से वितरित किया जा रहा है। प्रपत्र जमा करने का अंतिम तिथि 9 मार्च तक निर्धारित है। बैठक में निर्णय लिया गया कि नामांकन पारदर्शिता रखने के लिए प्रपत्र जमा होने के बाद पंचायतवार सूची तैयार किया जाएगा। इसके बाद नामांकन चयन समिति के बैठक में क्षेत्र के सभी जनप्रतिनिधि अपने अपने पंचायत के उम्मीदवारों का अनुमोदन सरकार के गाइड लाइन के अनुसार करेंगे।पंचायत प्रतिनिधियों के अनुमोदन के अलावे भी छितिज बच्चे, दिव्यांग माता पिता के बच्चे, अनाथ बच्चे एवं बिल्कुल असहाय बच्चों के नामंकन को प्राथमिकता दी जाएगी। इस वर्ष कक्षा 6 में 50 बच्चे, कक्षा 7 में 25 बच्चे, कक्षा 8 में 43 बच्चे व कक्षा 9 में 43 बच्चे का नामांकन लिया जाएगा। मौके पर जीप सदस्य गीता देवी, प्रमुख कुमारी स्वेता, उप प्रमुख कौशिल्या देवी,विधायक प्रतिनिधि बलदेव बाबु, मुखिया फरजाना खातून,अनिता देवी, सुनील कुमार, अनिल देव, सोनी देवी, महेंद्र मुर्मू , पंसस गीता देवी, रामाशीष प्रसाद, मो फारूक, धनपत प्रसाद, महेंद्र प्रसाद, वार्डेन चंचला कुमारी व अकाउंटेंट राजेन्द्र प्रसाद सहित कई लोग उपस्थित थे।

ग्लोरियस पब्लिक स्कूल ने इंटर स्कूल क्विज प्रतियोगित का आयोजन

स्वदेश संवाददाता

दारू(हजारीबाग)। प्रखंड के महेशरा में स्थित ग्लोरियस पब्लिक स्कूल में शनिवार को इंटर स्कूल क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में स्टीफन पब्लिक स्कूल, बिरसा मेमोरियल स्कूल, ग्लोरियस पब्लिक स्कूल इत्यादि के स्कूली बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया जिसमे विद्यार्थियों को कंप्यूटर, गणित, विज्ञान, हिंदी, समान्य ज्ञान, सामाजिक विज्ञान इत्यादि से प्रश्न पूछा गया। प्रतियोगिता में अलग-अलग विद्यालयों के शिक्षकों को प्रश्न पूछने का प्रभार दिया गया। अंक अंकित करने वाले जजों ने बच्चों को प्रतियोगिता के नियमों को समझाया जिसमें बताया गया कि इस प्रतियोगिता में तीन राउंड प्रश्न पूछे जाएंगे जिसमें प्रत्येक राउंड में तीन प्रश्न अलग-अलग विषयों से होगा। तीनों राउंड पूरा होने के बाद फाइनल मुकाबला का रिजल्ट दिया गया जिसमें ग्लोरियस पब्लिक स्कूल पहले पायदान, बिरसा मेमोरियल उच्च विद्यालय दूसरे पायदान और स्टीफन पब्लिक स्कूल तीसरे पायदान पर रहा। विजेता ग्रुप को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों में विजय, विराट, सचिन, सूरज, पिंटू, संजीत, नौशीम, अंतरा, विकी, रिंकू,आस्था माही, खुशी, तपवन, अभिषेक इत्यादि बच्चे थे। वहीं दर्शक के रूप में विद्यालय के सैकड़ो बच्चे एवं अन्य विद्यालय के बच्चे एवं शिक्षक उपस्थित थे।

सतबहिया के 20 बिरहोर लोगों को गांव में जाकर आयुष्मान कार्ड बनाया गया : आशिया खातून

स्वदेश संवाददाता

बड़कागांव। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बड़कागांव अंतर्गत कार्यालय के आदेश के आलोक में सिविल सर्जन हजारीबाग जिला अधिकारी के द्वारा पीएमपीबीटीजी के तहत बड़कागांव प्रखंड अंतर्गत विशेष कर बिरहोर समुदाय के लोगों का सत प्रतिशत आयुष्मान कार्ड बनाने का निर्देश प्राप्त है। मामले को लेकर सहिया साथी आशिया खातून ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बड़कागांव की चिकित्सा प्रभारी डॉक्टर अविनाश कुमार के आदेश अनुसार टीम गठित कर कांडतरी पंचायत अंतर्गत ग्राम महुदी के सतबहिया बिरहोर टोला जाकर 20 बिरहोर परिवार के लोगों को सहिया साथी आशिया खातून के द्वारा आयुष्मान कार्ड बनाया गया। वही आज महुदी हरिजन टोला में बनाया जाऐगा। कार्यक्रम में मुख्य रूप से कांडतरी क्लस्टर के सहिया साथी आशिया खातून, अमित लाल गुप्ता, नितेश कुमार, मनोज, सहिया कोशिला देवी सहित अन्य शामिल थे।

शांति सेवा सदन नर्सिंग होम के पास खड़ी, दो बाइक की हुई चोरी, थाने में दिया आवेदन

स्वदेश संवाददाता

सीसीटीवी कैमरा में दो नकाबपोश मोटरसाइकिल को चुराकर भागते हुए वीडियो कैद

बड़कागांव। बड़कागांव- हजारीबाग रोड स्थित शांति सेवा नर्सिंग होम के पास गेट के समीप से बीती रात शुक्रवार को लगभग 12:20 बजे दो बाइक की चोरी हो गई। बाइक शांति सेवा नर्सिंग होम के संचालक विवेक सोनी की यामाहा कंपनी की फाइजर और बबलु राणा की बजाज कंपनी की पल्सर बाइक थी। मामले को लेकर नर्सिंग होम के प्रबंधक सुरेंद्र प्रसाद सोनी ने बड़कागांव थाने में आवेदन देकर पुलिस से कार्रवाई करने की मांग की है। प्रबंधक ने बताया कि सीसीटीवी कैमरा में दो नकाबपोश अज्ञात लोगों का मोटरसाइकिल को चुराकर हजारीबाग रोड की ओर भागते हुए वीडियो कैद हुआ है। वहीं पुलिस ने बताई की मामला दर्ज कर लिया गया है, मामले की जांच की जा रही है।

सखी मंडल की महिलाओं का राज्य स्तरीय एक्सपोजर व क्षमता संवर्धन शिविर सह महिला महासम्मेलन कार्यक्रम का आयोजन

स्वदेश संवाददाता

हजारीबाग। ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी (जेएसएलपीएस) द्वारा गठित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के एक्सपोजर व क्षमता संवर्धन तथा समूह की गतिविधियों के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं का एक्सपोजर व क्षमता संवर्धन शिविर सह महासम्मेलन का आयोजन हजारीबाग के विनोबा भावे विश्वविद्यालय के फुटबॉल ग्राउंड में 12 फरवरी को 12:30 अपराह्न से कार्यक्रम निर्धारित है। इस कार्यक्रम में बडी संख्या में जिलेभर की महिला समूह की दीदियां भाग लेंगी। रांची में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय कार्यक्रम का लाईव टेलीकास्ट होगा, जिसे उसी समय प्रमंडल स्तर पर होने वाले कार्यक्रम में दिखाया जायेगा। इस कार्यक्रम में स्वयं सहायता समूहों की दीदियों के द्वारा निर्मित उत्पाद की प्रदर्शनी एवं बिक्री हेतु सम्मेलन स्थल पर स्टॉल भी लगाया जायेगा।

शॉर्ट सर्किट से घर में लगी आग, वाहन के कागजात सहित

मैट्रिक और बीए के सर्टिफिकेट जलकर राख

स्वदेश संवाददाता

बड़कागांव। चुरचू से विस्थापित होकर एंजेल दीप स्कूल के आगे आर एंड आर क्लोनी के बगल में घर बना के रह रहे राजेश यादव के घर में शनिवार को अचानक लगभग 1 बजे शॉर्ट सर्किट से भीषण आग लग गई। आग लगने के कारण घर में रखें दो हाईवा गाड़ी का कागज, लक्ष्मण यादव एवं उनकी पत्नी रूबी कुमारी का मैट्रिक से लेकर बीए तक का सर्टिफिकेट, पलंग, गोदरेज, फ्रिज, दरवाजा, ड्रेसिंग, वीवो कंपनी का एंड्राइड मोबाइल, सिलाई मशीन के अलावा कई सामान एवं जरूरत के कागज जलकर खाक हो गए। अगल-बगल के लोगों के सहयोग से आग पर काबू पाया गया। शॉर्ट सर्किट के आग से लगभग 1 लाख से अधिक का सामान जलकर खाक हो गया। मामले को लेकर थाने में आवेदन दी गई है।

चिकित्सा प्रभारी ने बरही विधायक से किया नए भवन और बाउंड्री की मांग

स्वदेश संवाददाता

चौपारण। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चौपारण के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ भुनेश्वर गोप के द्वारा बरही विधायक सह निवेदन समिति के सभापति सह सदस्य राज्य विकास परिषद उमाशंकर अकेला से अस्पताल से सम्बंधित कई मांग की गई है। उन्होंने आवेदन सौंपते हुए कहा कि दूरभाष पर हुई वार्ता में प्राप्त निर्देश के अनुपालन करते हुए सामुदायिक अस्पताल केंद्र चौपारण के पश्चिम दिशा में बाउंड्री वाल का निर्माण, चिकित्सा पदाधिकारियों के लिये सरकारी क्वाटर का मांग, स्वास्थ्य कर्मियों के लिये निर्मित सरकारी क्वाटर की मरम्मति एवं संपर्क पथ की मांग की है।

श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल में कल होगा श्रीदस नाइट महोत्सव का आयोजन

स्वदेश संवाददाता

स्कूल के 11 वीं वर्षगांठ के अवसर पर श्रीदस महोत्सव का किया जा रहा है आयोजन : प्राचार्य रोहित सिंह

बरही। देवचन्दा मोड़ स्थित श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल में कल श्रीदस महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। प्रत्येक वर्ष 11 फरवरी को विद्यालय के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर इस महोत्सव को स्कूल प्रांगण में धूम धाम से मनाया जाता है। स्कूल प्रबंधन के अनुसार कार्यक्रम का आयोजन दोपहर के 2 बजे से शुरू होगा जो शाम के सात बजे समाप्ति होगी। इस दौरान श्रीदस स्कूल प्रांगण में मुख्य अतिथि के रूप में हजारीबाग सांसद जयंत सिंह, बरही के पूर्व विधायक और भाजपा नेता मनोज यादव, (सीबीएसई सीटी कॉर्डिनेटर हजारीबाग) डॉ अहसान उल हक और बरही एसडीपीओ नौशाद आलम मौजूद रहेंगे। स्कूल के प्राचार्य रोहित सिंह ने कहा कि विद्यालय के 11वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर इस महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम का आयोजन मुख्य अतिथियो द्वारा स्कूल आदर्श स्वर्गीय दशरथ सिंह के तस्वीर पर पुष्प माला अर्पित कर और दीप प्रज्वलित करके आगाज किया जाएगा, जो निरंतर शाम के सात बजे तक चलेगा। इस दौरान कई सांस्कृतिक नृत्य, संगीत, बच्चों की फैशन शो, पेरेंट्स इंगेजिंग गेम और डिबेट जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। विद्यालय के वाइस प्रिंसिपल विकाश सिंह ने कहा कि महोत्सव को ध्यान में रखते हुए पूरे विद्यालय को दुल्हन जैसा सजाया गया है। वहीं कल के दिन भारी भीड़ जुटने की उम्मीद है, जिसमें स्कूल के बच्चें सहित अभिभावक स्कूल प्रांगण में मौजूद रहेंगे। वहीं बच्चों और स्कूल के सभी शिक्षक भी कल के आयोजन को लेकर उत्साहित दिखें।

मॉडर्न प्रोग्रेसिव स्कूल में विदाई समारोह का आयोजन

स्वदेश संवाददाता

स्कूल के प्राचार्य प्रमोद कुमार राय ने बच्चों को बेहतर भविष्य की शुभकामनाएं दी।

हजारीबाग। मॉडर्न प्रोग्रेसिव स्कूल के प्रांगण में शनिवार को क्लास दशम का विदाई समारोह आयोजित किया किया गया, जिसमें वर्ग नर्सरी से लेकर नवम के बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुति दी। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एक्सीलेंस कोचिंग सेंटर के निदेशक डॉ जीशान अहमद, स्कूल के प्राचार्य प्रमोद कुमार राय, चेयर मैन अंसार आलम, निर्देशक मकसिर आलम ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस मौके पर डॉ जीशान ने वर्ग दशम के बच्चों को पढ़ाई को लेकर महत्वपूर्ण बातें विद्यार्थियों को बताई।

वहीं स्कूल के प्राचार्य प्रमोद कुमार राय ने बच्चों को बेहतर भविष्य की शुभकामनाएं दी। चेयरमैन अंसार आलम ने बच्चों को अनुशासन में रहने के सलाह दी। निर्देशक मकसीर आलम ने बच्चों को पुरस्कृत कर मनोबल बढ़ाने एवं भविष्य में अच्छा करने की सलाह दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में दीपक कुमार, मिस सिफा, आफताब आलम, तनवीर आलम, सैबुन निशा, नफीसा परवीन, शबाना आजमी, अलीन, अंजना कुमारी, रिंकी कुमारी, वर्षा कुमारी, मनीता कुमारी, संजू कुमारी, सब परवीन, सिफा परवीन एवं वर्ग आठ एवं नवम के छात्र-छात्राओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्रीनिवास अस्पताल एवं डेंटल कॉलेज ने भेलवारा में लगाया निशुल्क दंत जांच शिविर

स्वदेश संवाददाता

बरकट्ठा। गंगपाचो स्थित डिवाइन पब्लिक स्कूल में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के निदेशक इंद्रदेव प्रसाद भारती ने सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए प्रत्येक को कलम एवं प्रतीक-चिह्न देकर सम्मानित किया। निदेशक ने कहा कि यह बहुत भावुक पल है, जब हम 12वीं के बच्चों के लिए विदाई समारोह का आयोजन कर रहे हैं। हमें आप सभी को उज्जवल भविष्य के लिए तैयार करने में कई वर्षो का समय लगा। आपसे हमारा हार्दिक जुड़ाव है,आपको विदा करते समय हमारी आंखें नम हो रही हैं। विद्यालय-परिवार की ओर से आपको अपनी मंज़िल मिलने की हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान करते हुए आगे की परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन की कामना करता हूं। विद्यालय प्राचार्य स्वाती ने कहा कि विद्यार्थी किसी भी स्कूल की सबसे कीमती सम्पत्ति होते हैं, उनके बिना शिक्षक और विद्यालय कुछ भी नही है। कार्यक्रम में राणा सर, प्रीति प्रभा, गणेश कुमार, राजीव कुमार, कुलदीप पासवान, पूनम कुमारी, अनिल कुमार, दीक्षा कुमारी, मनोज कुमार, मुकेश मंडल समेत अन्य लोग शामिल थे।

अखिल भारतीय कुशवाहा महासभा का 55वां राष्ट्रीय महाधिवेशन संपन्न

कुशवाहा समाज अपनी ताकत दिखाए तभी हक और अधिकार मिलेगा : राकेश महतो

स्वदेश संवाददाता

हजारीबाग। अखिल भारतीय कुशवाहा महासभा का 55वां राष्ट्रीय महाधिवेशन संत कोलंबस मैदान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का प्रारंभ राष्ट्रीय ध्वज रोहन कर व द्वीप प्रज्वलित मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश महतो, राष्ट्रीय महासचिव प्रवीण कुशवाहा राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष लोकमन कुशवाहा ने किया।मंच संचालन प्रदेश अध्यक्ष अभय कुशवाहा ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश महतो राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष लोकमन कुशवाहा वह राष्ट्रीय महासचिव प्रवीण कुशवाहा को प्रमाण पत्र देकर गुलदस्ता मोमेंट एवम माला पहना कर स्वागत किया गया। साथ ही नवनिर्वाचित पदाधिकारीयो को शपथ ग्रहण कराया गया। मुख्य अतिथि व राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश महतो ने कहा कि कुशवाहा समाज के सभी सदस्यों को एकजुट होकर अपनी पहचान को पुनः जागृत करते हुए राज्य व देश में अपना पहचान बनाने का कार्य करें ताकि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति कुशवाहा समाज का मजबूत हो सके तभी अपना अधिकार और हक मिलेगा राष्ट्रीय महासचिव प्रवीण कुशवाहा ने कहा कि हमारा समाज बहुत पिछड़ा हुआ था लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ गया है साथ ही हम लोग को आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में भी आगे बढ़ाने की जरूरी है। मौके पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिगंबर मेहता, सुनील मेहता, प्रदेश सचिव रेणु देवी, प्रदेश सचिव अर्जुन मेहता, व्यवस्थापक बबलू कुशवाहा, जिप सदस्य रेणु देवी, युवा नेता गौतम कुमार, निर्वाचन पदाधिकारी अलका साहनी, हजारीबाग जिला अध्यक्ष सूरज कुशवाहा, प्रदेश उपाध्यक्ष महेंद्र वर्मा चूड़ामणि कुशवाहा प्रयाग महतो रांची, बजरंग महतो खूंटी, सोनू वर्मा कोडरमा, जागेश्वर दांगी रामगढ़, भरत मेहता बोकारो, अजीत कुमार कुशवाहा पूर्व प्रदेश युवा अध्यक्ष बबलू कुशवाहा अजीत कुशवाहा निशांत सिंह प्रखंड अध्यक्ष सुनील तलवार प्रयाग कुशवाहा, ओमप्रकाश मेहता, युवा जिला अध्यक्ष अशोक कुशवाहा, सुनील कुशवाहा, समेत बिहार, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, छत्तीसगढ़, दिल्ली समेत अन्य राज्यों के कुशवाहा समाज के लोग उपस्थित थे।

दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण संपन्न

स्वदेश संवाददाता

हजारीबाग। जन जागरण केन्द्र की ओर से आयोजित प्रमंडल स्तरीय आईएसए (जल जीवन मिशन) का दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण होली क्रॉस केवीके, हजारीबाग में सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन 9 फरवरी को होली क्रॉस में प्रशिक्षण का उद्घाटन सहायक अभियंता निखिल कुमार, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, हजारीबाग एवं अभियंता अरुण कुमार, प्रदीप तिर्की, विमल कुमार एवं जिला समन्वयक जेजेएम के मनीष कुमार, संजय सिंह, सचिव, जन जागरण केन्द्र एवं सुगंधा गांगुली, राज्य जल गुणवत्ता के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इसके अलावा प्रदीप तिर्की, अरुण कुमार एवं मनीष कुमार ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। इस प्रशिक्षण में हजारीबाग के अलावा चतरा जिले से आईएसए प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पहले दिन प्रशिक्षण अशोक यादव के द्वारा जल के महत्व, चुनौतियां एवं जेजेएम के घटकों को विस्तार से समझाया। इसके अलावा वीडब्ल्युएससी के गठन, इसकी महत्ता एवं प्रतिभागियों की जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला। एसबीएम टू में किए गए प्रावधान एवं नाडेप, सोख्ता गड्ढा, ठोस एवं तरल कचरा प्रबंधन पर चर्चा की गई। सुगन्धा ने जल गुणवत्ता प्रबंधन एवं मोनिटरिंग पर विशेष चर्चा की एवं इसकी जांच के बारे एवं होने वाले दुष्प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने जल सहिया के प्रशिक्षण पर विशेष जोर डाला। साथ में रवि शंकर प्रशिक्षक के रूप में सहयोग किए एवं कार्यक्रम का संचालन किया। दुसरे दिन सभी प्रतिभागियों को जल जांच लैब का भ्रमण कराया गया जिसमें विस्तार से जांच के बारे में जेई अरुण कुमार एवं सुगन्धा के द्वारा बताया गया। क्षेत्र भ्रमण के लिए डब्ल्यूटीपी कचनपुर का भ्रमण कराया गया जहां विस्तार से प्रकल्प के बारे में प्रशिक्षक अशोक यादव एवं रवि कुमार के द्वारा चर्चा की गई। जल गुणवत्ता एवं अनुश्रवण अंतर्गत स्वच्छ जल उपलब्धता और उपयोग के साथ इसके महत्व पर आइएसए प्रतिनिधियों को जनजागरूकता हेतु दिया गया।

संक्षिप्त समाचार

सेमेस्टर परीक्षाएं की गईं स्थगित, अब दी गई ये तारीख; इसिलए किया गया बदलाव

आगरा , एजेंसी। डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय ने 17 फरवरी को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत होने वाली सेमेस्टर परीक्षाओं को स्थगित कर दिया है। 17 फरवरी की परीक्षाएं 11 मार्च को होंगी। इसमें स्नातक और परास्नातक की सभी सेमेस्टर परीक्षाओं के कार्यक्रम बदले गए हैं। डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय सेल्फ फाइनेंस कॉलेज एसोसिएशन के अध्यक्ष कृपाल सिंह आर्य, राजीव कुमार और ब्रजेश शर्मा ने ज्ञापन सौंपा था कि 17 फरवरी को पुलिस भर्ती परीक्षा होने के कारण कई छात्र पुलिस भर्ती की परीक्षा से वंचित हो जाएंगे। ऐसे में 17 फरवरी को होने वाली परीक्षा स्थगित कर दी जाए। देर रात विश्वविद्यालय प्रशासन ने 17 फरवरी की परीक्षा में बदलाव कर दिया। इससे छात्रों के सामने असमंजस नहीं रहेगा।

14 से भरे जाएंगे एमएड के परीक्षा फॉर्म: डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय की एमएड सत्र 2023-25 प्रथम सेमेस्टर (मुख्य परीक्षा), सत्र 2022-24 प्रथम सेमेस्टर (पुनः परीक्षा एवं भूतपूर्व परीक्षा), सत्र 2022-24 द्वितीय सेमेस्टर (मुख्य, पुनः एवं भूतपूर्व परीक्षा), सत्र 2021-23 तृतीय सेमेस्टर (मुख्य, पुनः एवं भूतपूर्व परीक्षा) एवं सत्र 2020-22 चतुर्थ सेमेस्टर (मुख्य, पुनः एवं भूतपूर्व परीक्षा) के छात्र-छात्राओं के परीक्षा फॉर्म 14 से 22 फरवरी के बीच भरे जाएंगे।

वाहन ने बाइक में मारी टक्कर, घायल युवक की इलाज के दौरान मौत

अलीगढ़ , एजेंसी। गुरुग्राम के मानेसर में हाईवे पर तेज रफ्तार अज्ञात वाहन की टक्कर से घायल युवक का इलाज के दौरान निधन हो गया। उसकी मौत हो गई। परिवार वालों का रो-रोकर बुरा हाल है।

विजयगढ़ मतवारी निवासी गजराज उर्फ दिनेश कुमार (37) पुत्र रामचरण गुरुग्राम के मानेसर में प्राइवेट नौकरी करते थे। पत्नी-बच्चों सहित गुरुग्राम में ही रहते थे। 1 फरवरी की रात आठ बजे वह अपनी मोटरसाइकिल से घर लौट रहे थे तभी पीछे से आया अज्ञात वाहन टक्कर मारकर निकल गया था।

इससे गजराज बुरी तरह घायल हो गए थे। पुलिस ने उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया था, जिनका इलाज के दौरान निधन हो गया। 8 फरवरी की रात गांव मतवारी में शव पहुंचा, तो पत्नी नीतू सहित परिवार वालों का रो-रोकर बुरा हाल था। वह अपने पीछे दस वर्षीय विंतेश और एक साल के आर्यवीर को छोड़ गए हैं।

प्लेटफार्म बदलने की हड़बड़ी में महिला एस्केलेटर से गिरी, पति और तीन वर्षीय बेटी भी गिरकर हुए घायल

कानपुर , एजेंसी। कानपुर सेंट्रल स्टेशन पर शुक्रवार को जम्मू तवी एक्सप्रेस के प्लेटफार्म बदलने के अनाउंसमेंट पर मची हड़बड़ी में प्लेटफार्म नंबर आठ के एस्केलेटर से गिरकर महिला यात्री घायल हो गई। बचाने में पति और तीन वर्षीय बेटी भी नीचे आ गिरे। महिला पैर और कमर में चोटें आई हैं। जबकि, पति और बच्ची सुरक्षित हैं। रेलवे अधिकारियों ने जांच के निर्देश दिए हैं।

शाहजहांपुर निवासी आशीष पत्नी श्वेता और तीन वर्षीय बेटी के साथ कानपुर-जम्मू तवी एक्सप्रेस से घर जा रहे थे। आशीष के मुताबिक पहले ट्रेन के प्लेटफार्म नंबर आठ पर आने की सूचना दी गई। इस पर वह परिवार समेत प्लेटफार्म पर ट्रेन का इंतजार कर रहे थे। अचानक ट्रेन के आने का प्लेटफार्म बदलने का अनाउंसमेंट हुआ। वह बच्ची को गोद में लेकर प्लेटफार्म नंबर पांच की तरफ भागे।

वहीं, उनकी पत्नी ट्राली बैग लेकर एस्केलेटर से प्लेटफार्म नंबर पांच के लिए जाने लगीं। इसी दौरान हड़बड़ी में उनका पैर फिसल गया, जिससे हादसा हुआ। पत्नी को बचाने में वह भी बच्ची को लेकर नीचे गिर पड़े। हादसे में महिला के पैरों में चोट आई। इसकी वजह से व्हील चेयर मंगानी पड़ी। दंपती ने शुक्रवार को शाहजहांपुर जाने निर्णय रद कर दिया। एसीएम संतोष त्रिपाठी के मुताबिक महिला यात्री एस्केलेटर से कैसे गिरी, इसकी जांच कराई जा रही है। ट्रेन को पहले प्लेटफार्म नंबर आठ पर आना था, लेकिन उसी समय आस्था स्पेशल का समय हो गया। इससे जम्मू तवी का प्लेटफार्म परिवर्तित कर दिया गया। जम्मू तवी का पहला अनाउंसमेंट 1.33 बजे, दूसरा 2 बजे, तीसरा 2.07 बजे, चौथा 2.11 बजे, पांचवां 2.16 बजे, छठवां 2.22 बजे हुआ। ट्रेन 2.26 पर रवाना की गई।

लोकसभा चुनाव: भाजपा की राह आसान करेंगे जयंत, नीतीश के बाद इंडिया गठबंधन की दूसरी बड़ी टूट

लखनऊ, एजेंसी। लोकसभा चुनाव से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न देने की घोषणा कर भाजपा व राष्ट्रीय लोकदल के गठबंधन की पटकथा लिख दी है। दादाजी को भारत रत्न मिलने की घोषणा के बाद जयंत चौधरी ने भी दिल जीत लिया... के संदेश के साथ एनडीए गठबंधन का एलान कर दिया। जयंत ने कहा कि अब कोई कसर रहती है, आज मैं किस मुंह से इन्कार करूं। रालोद के एनडीए में शामिल होने से भाजपा यूपी में ही नहीं बल्कि पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में भी बढ़त की उम्मीद कर सकती है।

चौधरी चरण सिंह के पोते होने के नाते जयंत उत्तर भारत के जाट समाज में एक बड़े चेहरे के रूप में देखे जाते हैं। राजस्थान में विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा ने प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया को हटा दिया था। पूनिया भाजपा के जाट चेहरा थे। राजस्थान की भजनलाल सरकार में जाट समाज से कन्हैयालाल चौधरी और सुमित गोदारा कैबिनेट मंत्री, झाबर सिंह खर्रा राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार और विजय सिंह चौधरी राज्यमंत्री बनाए गए हैं। फिर भी राजस्थान में पार्टी के पास बड़े जाट चेहरे का अभाव है। हरियाणा में भी भाजपा व जननायक जनता पार्टी के नेता एवं डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला के बीच अनबन की अटकलें है। वहां भी पार्टी के पास मजबूत जाट नेता का अभाव है। पार्टी लोकसभा चुनाव में जयंत को केवल यूपी ही नहीं अन्य राज्यों में भी सघन चुनावी दौरा कराएगी।

पश्चिमी यूपी में जाटों की आबादी करीब 50 लाख है। जाट मतदाता लोकसभा की दस और विधानसभा की 40 सीटों को प्रभावित करते हैं। रालोद से गठबंधन होने के बाद अब पश्चिमी यूपी की मथुरा, मुजफ्फरनगर, बागपत, आगरा, सहित अन्य सीटों पर जाट वोट बंटने का खतरा नहीं रहेगा।

रालोद को बहाना है, इंडिया पर निशाना है: विश्लेषक मानते हैं कि भाजपा नेतृत्व के लिए रालोद से गठबंधन तो एक बहाना है। उनका असली निशाना इंडिया गठबंधन है। बिहार में नीतीश कुमार से गठबंधन के बाद आरजेडी व कांग्रेस सहित इंडिया गठबंधन को झटका दिया गया। रालोद को एनडीए में शामिल करने की पहल कर सपा को करारा झटका देने की योजना है। विश्लेषकों के मुताबिक 2014 और 2019 के चुनाव में एनडीए से बाहर रहने के बाद रालोद का यूपी में खाता तक नहीं खुला। रामलहर के माहौल में 2024 में भी भाजपा के लिए राह ज्यादा मुश्किल नहीं थी, लेकिन भाजपा ने मिशन 400 पार के लक्ष्य में माहौल सृजन और इंडिया गठबंधन को कमजोर करने के लिए रालोद की कई शर्तें मानते हुए गठबंधन की पहल कर दी।

मिल सकती है दो लोकसभा व एक राज्यसभा सीट: सूत्रों का कहना है कि रालोद को भाजपा से गठबंधन के बाद जयंत को मोदी सरकार में जबकि एक विधायक को योगी सरकार में मंत्री बनाया जा सकता है। लोकसभा चुनाव में मुजफ्फरनगर, बागपत व बिजनौर में से कोई दो सीटें गठबंधन में दी जा सकती हैं। आगामी राज्यसभा चुनाव में भी रालोद को एक सीट मिल सकती है।

राज्यसभा की एक सीट देने से भाजपा को कोई नुकसान नहीं हैं। भाजपा अपने हिस्से की सात सीटें जीतेगी। लेकिन सपा को एक सीट का नुकसान होगा। सपा अब तीन की जगह दो ही सीटें जीत सकेगी। मई में होने वाले विधान परिषद चुनाव में भी रालोद को प्रदेश में एक सीट मिल सकती है। सपा को राज्यसभा में एक और विधान परिषद में भी दो सीटों का नुकसान होगा।

2009 में भी रहा है रालोद-भाजपा गठबंधन, मिली थी कामयाबी: लोकसभा चुनाव 2009 में यूपीए की लहर में भी यूपी में भाजपा व रालोद के गठबंधन ने कमाल दिखाया था। भाजपा ने रालोद के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ा था। रालोद को गठबंधन में सात सीटें मिलीं थीं। इसमें उसने पांच जीती थी। भाजपा को 10 सीटें मिली थीं। लेकिन बाद में रालोद ने एनडीए से अलग होकर यूपीए का समर्थन किया। इसके बाद दोनों की राहें जुदा हो गईं। करीब 15 वर्ष बाद दोनों फिर एक साथ आते नजर आ रहे हैं।

पिछड़े वर्ग के प्रभावशाली नेता थे चौधरी चरण सिंह

राजनीतिक विश्लेषक बताते हैं कि चौधरी चरण सिंह केवल जाटों के ही नहीं बल्कि पिछड़े वर्ग की अन्य जातियों व अगड़े वर्ग के भी लोकप्रिय नेता थे। 1980 के लोकसभा चुनाव में जनता दल से अलग होने के बाद उन्होंने लोकदल का नेतृत्व किया। उस चुनाव में यूपी की 32, बिहार की चार और राजस्थान की दो लोकसभा सीटों पर लोकदल जीता था।

राम लहर को भांप चुके हैं जयंत

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि जयंत अयोध्या में राम मंदिर बनने के बाद चल रही राम लहर को भांप चुके हैं। जयंत के समर्थकों का मानना है कि सपा के साथ सात सीटों पर चुनाव लड़ने के बाद भी एक भी सीट पर जीत पक्की नहीं थी। वहीं, भाजपा से गठबंधन के बाद यदि दो तीन सीटें भी मिलीं तो तीनों पर जीत मिल सकती है। इससे लगभग एक दशक से केंद्र व राज्य में सरकार से बाहर चल रही रालोद की सत्ता में वापसी हो सकती है।

अमरोहा में डबल मर्डर: सराफ पिता-बेटी को गला रेतकर मार डाला, घर में सो रहे बेटा-बहू को नहीं चल पाया पता

अमरोहा , एजेंसी। अमरोहा कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला कटरा गुलाम अली में रहने वाले सराफ योगेश चंद अग्रवाल (67) और उनकी बेटी सृष्टि (27) की हत्या कर दी गई। दोनों पिता-पुत्री के शव घर के कमरे में फर्श पर लहूलुहान हालत में पड़े मिले। मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच पड़ताल की।

घर के भीतर सेफ- अलमारी में रखा सामान बिखरा मिला। फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट की टीम ने साक्ष्य जुटाए। डीआईजी और एसपी ने घटनास्थल का मुआयना किया। वारदात के समय कारोबारी का बेटा और बहू अपने बच्चे साथ घर के दूसरे हिस्से में सो रहे थे।

सराफ योगेश चंद अग्रवाल उद्योग व्यापार मंडल के जिला अध्यक्ष और सेवा भारती संस्था के नगर अध्यक्ष थे। वह समाजसेवा से जुड़े कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। उनकी पत्नी की कई साल पहले मौत हो गई थी। परिवार में बेटा इशांक अग्रवाल, बेटी सृष्टि और बहु मानसी अग्रवाल हैं।

बेटा इशांक अग्रवाल दिल्ली में गत्ता फैक्टरी चलाते हैं। जबकि बहु मानसी अग्रवाल अपने बेटे के साथ घर पर रहती हैं। बृहस्पतिवार इशांक अग्रवाल भी घर आए हुए थे। परिवार में सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। शुक्रवार की रात योगेश चंद अग्रवाल अपनी बेटी सृष्टि के साथ अपने घर में थे।

उनका बेटा और बहू घर के दूसरे हिस्से में सो रहे थे। रात में किसी समय योगेश चंद अग्रवाल और उनकी बेटी सृष्टि की हत्या कर दी गई। दोनों के शव घर में फर्श पर पड़े मिले। दोनों के कपड़ों से खून लगा हुआ था। हत्यारोपियों ने वारदात को अंजाम देने के बाद पिता-पुत्री के चेहरे पर कपड़ा ढक दिया।

शनिवार की सुबह करीब छह बजे सराफ योगेश चंद्र अग्रवाल के साथी राजनिकेतन, सतीश अरोड़ा, अतुल गुप्ता और विनीत चावला उनकी घर की छत पर टेबल टेनिस खेलने पहुंचे तभी घटना की जानकारी हुई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई।

एसपी कुंवर अनुपम सिंह समेत आला अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल की। हत्या क्यों और किस लिए की गई ये अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। फिलहाल एसओजी, सर्विलेंस समेत पांच टीमें हकीकत का पता लगाने में जुटी हैं।

19 साल बाद मिला कोर्ट से न्याय

स्वदेश समाचार सेवा

चंदौली: हत्या के एक मामले में 19 साल बाद न्याय मिला है। चंदौली की जिला अदालत ने वर्ष 2005 में भिसौड़ी ग्राम निवासी राजीव कुमार यादव की हत्या के मामले में अभियुक्त अजय पटेल पुत्र रामदास पटेल, सुरेश पटेल पुत्र मेवालाल, राकेश उर्फ भोला पुत्र हरी पटेल, राम सिंह पटेल पुत्र श्रीराम पटेल, ब्रजकिशोर पटेल पुत्र खिचड़ी पटेल को जेल और अर्थदंड की सजा सुनाई है। एक अभियुक्त अजय पटेल की पहले ही मौत हो चुकी है। चंदौली जिले के अपर सत्र न्यायाधीश विनय कुमार सिंह की अदालत ने दिनांक : 5-2-2024 को धारा- 147, 304, 323, 325, 504, 506 के तहत अभियक्तों को जेल और अर्थदंड की सजा सुनाई है। ज्ञात हो कि विशाल सिंह यादव पुत्र तुलसी यादव, ग्राम भिसौड़ी ने मुगलसराय थाने में दिनांकः 14-08-2005 को तहरीर दी थी, जिसमें कहा गया था कि दिनांक 9-8-2005 को प्रार्थी के गांव के ही अजय पटेल, सुरेश पटेल, राकेश उर्फ भोला, राम सिंह पटेल, ब्रजकिशोर पटेल ने लाठी-उंडे से लैश प्रार्थी के घर पर हमला कर दिया। उस समय प्रार्थी व उसका छोटा भाई राजीव दरवाजे पर बैठे थे। इस हमले में राजीव गंभीर रूप से घायल हो गया। बेहोशी की हालत में राजीव को कबीर चौरा अस्पताल में भर्ती कराया गया। हालत गंभीर होने के कारण डॉक्टरों ने उसे बीएचयू रेफर कर दिया। इसके बाद परीजनों ने सिंह मेडिकल में भर्ती कराया, जहां दिनांक 24-08-2005 को राजीव कुमार यादव की मौत हो गयी। कोर्ट से फैसले पर राजीव के पिता तुलसी यादव ने कहा कि 19 साल बाद न्याय मिला है। देर से ही सही पर अंततः न्याय मिला। हालांकि उन्होंने कहा कि न्याय मिलने में इतना लंबा समय नहीं लगता तो और अच्छा होता।

हल्द्वानी की घटना पर साक्षी महाराज बोले-पहले था लव जेहाद, अब चल रहा लैंड जेहाद, जयंत को लेकर कही ये बात

बागपत , एजेंसी। उत्तर प्रदेश के बागपत जनपद में एक शादी समारोह में पहुंचे साक्षी महाराज ने जयंत चौधरी के भाजपा में जाने को लेकर कहा कि गठबंधन से जयंत चौधरी को अमृत मिलेगा।

उन्होंने कहा कि जनता राष्ट्रवाद के रास्ते पर चल पड़ी है। किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने से जाटों को हीं नहीं, बल्कि सम्पूर्ण किसानों पर प्रभाव होगा। इसका परिणाम ये होगा कि पश्चिम की सभी सीट दोनों गठबंधन जीतेंगे। हल्द्वानी की घटना पर साक्षी महाराज बोले कि जिस तरह पहले लव जेहाद चलता था।

उसी तरह अब लैंड जेहाद चल रहा है। कहा कि यह बीमारी बहुत पुरानी है। लैंड जेहाद के खिलाफ कार्रवाई करेंगे तो दर्द तो होगा ही लेकिन ऐसी घटनाओं से बचना चाहिए। इसे नियंत्रित करने के लिए सख्त कदम उठाने होंगे।

यौन उत्पीड़न प्रकरण: गोरखपुर विश्वविद्यालय की आंतरिक शिकायत समिति भंग, नई गठित

गोरखपुर , एजेंसी। विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर पर छात्रा के यौन शोषण के आरोप का मामला गरमा गया है। कुलपति प्रो. पूनम टंडन शुक्रवार को एक्शन में नजर आईं। उन्होंने आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) को तत्काल प्रभाव से भंग कर नई समिति गठित कर दी है। प्राचीन इतिहास विभाग की आचार्य प्रो. प्रज्ञा चतुर्वेदी की अध्यक्षता में सात सदस्यीय समिति गठित की गई है।

नई समिति के गठन के साथ ही जांच की प्रक्रिया भी तेज कर दी गई है। शुक्रवार को दोपहर में प्रशासनिक भवन के कमेटी हॉल में समिति ने दो घंटे तक बैठक कर छात्रा की शिकायत पर मंथन किया। सूत्रों के मुताबिक, इस दौरान आरोपी असिस्टेंट प्रोफेसर को भी बुलाया गया था। समिति ने आरोपी का बयान दर्ज कर लिया है। आरोप लगाने वाली छात्रा को भी बुलाकर बयान दर्ज किया गया है।

ये हैं आईसीसी में: प्राचीन इतिहास विभाग की प्रो. प्रज्ञा चतुर्वेदी को आईसीसी का अध्यक्ष बनाया गया है। अंग्रेजी विभाग के प्रो. अवनीश राय, मनोविज्ञान की डॉ. रश्मि रानी, विधि विभाग की डॉ. सुमनलता चौधरी, लेखा विभाग से मीनावती कन्नौजिया, भौतिक विज्ञान विभाग के पुनीत भारती सदस्य बनाए गए हैं। मानव सेवा संस्थान के निदेशक राजेश मणि बाहरी सदस्य के रूप में नामित किए गए हैं।

पीड़िता के परिजन बोले- विश्वविद्यालय प्रशासन पर है भरोसा: आंतरिक शिकायत समिति के समक्ष बयान दर्ज करने आई पीड़ित छात्रा के परिजनों ने कहा कि उनको विश्वविद्यालय की कुलपति और विश्वविद्यालय प्रशासन पर पूरा भरोसा है। उनको उम्मीद है कि उन्हें न्याय मिलेगा।

मीडिया सेल के जरिए ही भेजें खबरें: इस मामले के लगातार मीडिया की सुर्खियां बनने के कारण डीडीयू प्रशासन भी गंभीर है। विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए गाइडलाइन जारी किया गया है। कुलसचिव प्रो. शांतनु रस्तोगी की ओर से जारी आदेश के मुताबिक, शैक्षणिक, शोध और व्यक्तिगत उपलब्धि से संबंधित खबरों को मीडिया सेल को प्रेषित करें।

यहां सजेगी भीमनगरी, 18 बस्तियों में होंगे विकास कार्य; 14 करोड़ रुपये होगें खर्च

आगरा, एजेंसी। बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर की जयंती पर 15 से 17 अप्रैल तक देवरी रोड पर सजने वाली भीमनगरी के दौरान क्षेत्र की 18 बस्तियों में विकास कार्य कराए जाएंगे। शुक्रवार को मेयर हेमलता दिवाकर ने भीमनगरी आयोजन समिति के पदाधिकारियों के साथ देवरी रोड का निरीक्षण किया। कमेटी ने 14 करोड़ रुपये के विकास कार्यों के प्रस्ताव मेयर को सौंपे। देवरी रोड पर 15 साल बाद भीमनगरी का आयोजन होना है। भीम नगरी केंद्रीय कमेटी के महामंत्री धर्मेन्द्र सोनी ने बताया कि देवरी रोड से सटीं 18 मलिन बस्ती क्षेत्र के जर्जर पड़े नाली, खडंजा, पानी, लाइटिंग आदि का कार्य होना है। अध्यक्ष मुकेश कल्याण ने मेयर को क्षेत्र की गलियों, सड़कों को दिखाया और मंच के आसपास के क्षेत्र का निरीक्षण कराया। देवरी रोड से सटे क्षेत्रों में नगर निगम के वार्ड 2, वार्ड 5, 4, 19 और 14 का कुछ क्षेत्र आता है। इन क्षेत्रों की पार्षद पुष्पा मौर्य, बेबी, हेमलता चौहान, ममता कुशवाह ने मेयर से विकास कार्य चुनाव आचार संहिता लगने से पहले ही कराने की मांग की। मेयर ने आयोजन स्थल डॉ. आंबेडकर लाइब्रेरी नंदपुरा में बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

निरीक्षण में केंद्रीय कमेटी से धर्मेंद्र सोनी, स्थानीय कमेटी अध्यक्ष मुकेश कल्याण, महामंत्री मलखान सिंह व्यास, कोषाध्यक्ष संजय सिंह, नबाव सिंह, शिवसिंह, देवी सिंह, गजेंद्र पिपल, राजू पंडित, राकेश राज, मनीष निगम आदि मौजूद रहे।

इन बस्तियों में विकास कार्य की मांग: भीमनगरी कमेटी ने नन्दपुरा, शिवपुरी, टुण्डपुरा, दयानंद कॉलोनी, गुम्मट तख्त पहलवान, , गौतम नगर, कोटली बगीची, अनुपम नगर, गोपालपुरा, भीम नगर, नगला भवानी सिंह, नगला टेकचंद, नगला लटूरी सिंह, बुन्दू कटरा, श्याम नगर, डिफेंस एस्टेट, नगला जस्सा, नगला परसोती, मधुनगर, काशीनगर, सैनिक विहार, अमित नगर कॉलोनी, सेमरी, कस्तूरी विहार, कौलक्खा, ताल सेमरी, नगला कली, मायापुरी, सेवला में कार्य कराने के लिए प्रस्ताव सौंपे हैं।

मौलाना तौकीर बोले: अब छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं...

सीएम धामी की संपत्ति से हो हल्द्वानी के नुकसान की भरपाई

बरेली , एजेंसी। बरेली में आईएमसी (इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल) प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खां ने कहा कि जुल्म और ज्यादती की हद हो गई है। अगर हुकूमत दंगा-फसाद कराना चाहती है तो हम तैयार हैं। शुक्रवार को बिहारीपुर करोलान स्थित संगठन के एक पदाधिकारी के आवास पर मौलाना मीडिया से रूबरू हुए। उन्होंने कहा कि हमें बहुत छेड़ा गया है, अब छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं। उन्होंने विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल पर पाबंदी लगाने की मांग भी की।

मौलाना ने कहा कि प्रदर्शन में आ रहे उनके समर्थकों को जगह-जगह रोका गया। उनमें खौफ पैदा करने की कोशिश की गई। यह जुल्म और ज्यादती है। हम गिरफ्तारी का एलान कर हुकूमत को यह दिखाना चाहते थे कि हमें परेशान न करो। हमारे सब्र का लावा फटेगा तो ठीक नहीं होगा। यह प्रदर्शन भी इसीलिए था कि प्रेशर कुकर की तरह जो गैस भर चुकी है, उसे बाइपास कर दिया जाए। हमने सेफ्टी वॉल्व का काम किया है, क्योंकि हम अमन चाहते हैं।

मौलाना ने कहा कि मुसलमानों से नफरत क्यों करते हो। हिंदुस्तान की रग में मुसलमान बसा हुआ है। नसों से खून खींच दोगे तो बचेगा क्या? उन्होंने मुफ्ती सलमान अजहरी को रिहा करने की मांग भी उठाई।

धामी की संपत्ति से हो हल्द्वानी के नुकसान की भरपाई : मौलाना: मौलाना ने कहा कि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने देखा कि मुख्यमंत्री रहते नरेंद्र सिंह मोदी ने गुजरात में दंगा कराया, वह प्रधानमंत्री बन गए। इसी लिए धामी भी

सोच रहे हैं कि वह भी प्रधानमंत्री बन जाएं। वहां जिन लोगों का नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई धामी की संपत्ति से की जाए। सुप्रीम कोर्ट को बुलडोजर के खिलाफ स्वतः संज्ञान लेना चाहिए। देश में अमन बनाए रखना है तो बुलडोजर को रोकना जरूरी है।

आस्था है तो मानसरोवर को चीन से कराएं आजाद : मौलाना: मौलाना तौकीर ने कहा कि प्रशासन हुकूमत के दबाव में काम कर रहा है। बाबरी मस्जिद पर फैसला आस्था के आधार पर दिया गया। ज्ञानवापी में पूजा की इजाजत दी गई।

गोरखपुर विश्वविद्यालय: छात्रा के शोषण का आरोपी असिस्टेंट प्रोफेसर निलंबित, प्रवेश भी प्रतिबंधित

गोरखपुर , एजेंसी। गोरखपुर विश्वविद्यालय की छात्रा के यौन शोषण के आरोपी असिस्टेंट प्रोफेसर को निलंबित कर दिया गया है। कुलपति प्रो. पूनम टंडन के निर्देश पर शुक्रवार को कुलसचिव ने निलंबन का आदेश जारी कर दिया। निलंबन के दौरान शिक्षक का परिसर में प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। उसे कुलसचिव कार्यालय से संबद्ध किया गया है। उधर, इस मामले की जांच आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) ने शुरू कर दी है।

कुलसचिव प्रो. शांतनु रस्तोगी ने इस संबंध में जारी आदेश में कहा है कि अध्ययनरत छात्रा की ओर से लगाए गए यौन उत्पीड़न के आरोप की जांच के लिए अगले आदेश तक रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. जितेंद्र कुमार को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाता है। निलंबन अवधि में असिस्टेंट प्रोफेसर का विश्वविद्यालय शैक्षणिक परिसर में प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। इस दौरान वह कुलसचिव कार्यालय से संबद्ध रहेंगे।

संक्षिप्त समाचार

जेएनयू में छात्रसंघ चुनाव कराने को देर रात बैठक के दौरान बवाल, एबीवीपी-लेफ्ट सदस्यों में झड़प से कई चोटिल

नई दिल्ली, एजेंसी। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में शुक्रवार देर रात एक बार फिर छात्र गुटों में हिंसक झड़प होने का मामला सामने आया है। इस झड़प में दोनों ओर के कुछ लोगों के घायल होने की खबर है। हालांकि, एबीवीपी और लेफ्ट गुट के कार्यकर्ताओं ने हिंसक झड़प और हंगामे के लिए दूसरे पक्ष को जिम्मेदार ठहराया है, लेकिन जेएनयू प्रशासन की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। जानकारी के अनुसार, जेएनयू में छात्र संघ चुनाव कराने को लेकर हुई बैठक के दौरान आरएसएस से जुड़े एबीवीपी और लेफ्ट समर्थित कार्यकर्ताओं के बीच शुक्रवार देर रात झड़प हो गई, जिसमें दोनों पक्षों ने दावा किया कि उनके कुछ सदस्य घायल हो गए। 2024 के जेएनयूएसयू चुनावों के लिए चुनाव आयोग के सदस्यों का चुनाव करने के लिए परिसर में साबरमती ढाबा में विश्वविद्यालय की आम सभा की बैठक (यूजीबीएम) के दौरान छात्र समूह आपस में भिड़ गए।

गुरुग्राम में 12 और अवैध कॉलोनियों पर चले बुलडोजर, सैकड़ों निर्माणाधीन मकान तोड़े; 61 एकड़ जमीन कर

नई दिल्ली, एजेंसी। गुरुग्राम के नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग ने शुक्रवार को फर्रुखनगर ब्लॉक में अवैध रूप से पनप रही 12 कॉलोनियां बुलडोजर चलाकर ध्वस्त कर दीं। ये कॉलोनियां करीब 61 एकड़ भूमि पर विकसित हो रही थीं। इनमें 10 निर्माणाधीन और निर्मित मकान और दुकानों को मलबे में मिला दिया गया। इसके साथ ही 100 मकानों के निर्माण को लेकर की गई चारदीवारी को भी तोड़ा गया। डीटीपीई मनीष यादव के नेतृत्व में तोड़फोड़ दस्ता शुक्रवार सुबह 11 बजे फर्रुखनगर में पहुंच गया। उन्हें फर्रुखनगर गांव में 27 एकड़ भूमि पर अवैध रूप से 27 कॉलोनियां विकसित होती मिलीं। इनमें 4 निर्माणाधीन मकानों को तोड़ा गया। 73 मकानों के निर्माण को लेकर बनाई गई चारदीवारी को भी मलबे में मिला दिया गया। यहां बने प्रॉपर्टी डीलर के ऑफिस को भी जमींदोज कर दिया। इसके अलावा तीन निर्मित दुकानें भी तोड़ी गईं। इस दौरान करीब 1400 मीटर लंबी सड़क को उखाड़ दिया। इसके बाद तोड़फोड़ दस्ता गांव सुल्तानपुर में पहुंच गया। यहां करीब 11 एकड़ में 3 कॉलोनियां काटी जा रही थीं। इसमें 2 निर्माणाधीन मकान, 16 चारदीवारी को मलबे में मिलाया गया। 400 मीटर लंबी सड़क को उखाड़ दिया। गांव मुबारिकपुर में करीब 17 एकड़ में विकसित हो रही कॉलोनियों पर बुल्डोजर चला। इस गांव में 3 कॉलोनियां काटी जा रही थीं। मनीष यादव, डीटीपीई, नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग, लोगों से कई बार अपील कर चुके हैं कि वे अवैध रूप से काटी जा रही कॉलोनियों में अपनी जिंदगी की जमापूंजी नहीं लगाएं, लेकिन वे नहीं मान रहे।

कपल्स के वैलेंटाइन डे के प्लान पर पानी फेर सकता है मौसम, दिल्ली में 14 फरवरी को बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के मौसम में अब बदलाव आने लगा है। हालांकि, अभी सुबह और शाम की ठंड बनी रहेगी, जबकि दिनभर तेज धूप के चलते तापमान में इजाफा होगा। शुक्रवार को भी मानक वेधशाला सफदरजंग में न्यूनतम तापमान सामान्य से तीन डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया। राजधानी में सुबह हल्का कोहरा देखने को मिला, लेकिन दिन चढ़ने के साथ कोहरा साफ हो गया। सुबह आठ बजे के बाद धूप निकलने से अधिकतम तापमान में इजाफा हुआ। सफदरजंग में अधिकतम तापमान 24 और न्यूनतम तापमान 6.8 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम विभाग का अनुमान है कि धूप खिलने से अगले तीन दिन तापमान में इजाफा होगा, जबकि आसमान साफ रहने से न्यूनतम तापमान में गिरावट होगी। इस दौरान न्यूनतम तापमान दस डिग्री से नीचे रहने का अनुमान है। मौसम विभाग का अनुमान है कि अगले सप्ताह एक और पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा। इसके चलते खासतौर पर 14 फरवरी को राजधानी दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में बूंदाबांदी की संभावना है। इस कारण भी अभी तापमान में बहुत तेजी से इजाफा नहीं होगा। बीते दो दिन में चली तेज हवा और धूप के चलते दिल्ली की हवा साफ-सुथरी बनी हुई है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक, शुक्रवार को दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक 145 रहा। अगले दो दिन वायु गुणवत्ता ऐसी ही रहने का अनुमान है।

चिंटल सोसाइटी के पांच टावर होंगे ध्वस्त, नोएडा के ट्विन टावर गिराने वाली कंपनी को काम

नई दिल्ली, एजेंसी। आईआईटी दिल्ली की तरफ से गुरुग्राम के सेक्टर-109 स्थित चिंटल पैराडाइसो सोसाइटी के असुरक्षित डी, ई, एफ, जी और एच टावर इसी माह के अंत तक तोड़ने का काम शुरू कर दिया जाएगा। इसको लेकर एक कंपनी का चयन कर लिया गया है। चिंटल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने उपायुक्त निशांत कुमार यादव को पत्र लिखकर आग्रह किया है कि तोड़फोड़ की निगरानी के लिए तकनीकी शाखा के अधिकारियों की एक समिति बनाई जाए। वहीं, दूसरी तरफ इन रिहायशी टावर के फ्लैट मालिकों के साथ शनिवार सुबह चिंटल कंपनी के प्रबंध निदेशक अशोक सोलोमन मुलाकात करेंगे। बिल्डर ने इन टावर को तोड़ने के लिए एडीफिस इंजीनियरिंग कंपनी का चयन किया है। उपायुक्त को लिखे पत्र में कहा है कि ये कंपनी जल्द असुरक्षित घोषित टावर को तोड़ने का काम शुरू कर देगी। चिंटल पैराडाइसो में हुए हादसे को शनिवार को दो साल साल पूरे हो जाएंगे। यह हादसा 10 फरवरी, 2022 को हुआ था। डी टावर के कई फ्लैट की छत नीचे गिर गई थी।

हत्या और जानलेवा हमले के आरोपी होंगे तड़ीपार, 5000 से ज्यादा अपराधी चिह्नित

नई दिल्ली, एजेंसी। लुटेरों और स्नेचरों के बाद गाजियाबाद पुलिस ने अब हत्या, हत्या के प्रयास और बलवे के अपराधियों पर शिकंजा कसने की तैयारी शुरू कर दी है। इन अपराध में शामिल साढ़े पांच हजार हजार अपराधियों को चिह्नित किया है। जिन अपराधियों पर पिछले तीन साल के भीतर हत्या या हत्या के प्रयास या बलवे समेत तीन या तीन से अधिक मुकदमे होंगे, उन पर गुंडा एक्ट की कार्रवाई कर जिलाबदर किया जाएगा।

गाजियाबाद पुलिस द्वारा अपराधियों पर निरोधात्मक कार्रवाई लगातार जारी है। पिछले दिनों पुलिस ने लूट और छिनैती करने वाले अपराधियों पर गुंडा और गैंगस्टर एक्ट की कार्रवाई की थी। इसके अलावा माफियाओं की संपत्ति कुर्क करने के साथ-साथ हिस्ट्रीशीट खोली थी। इसी क्रम में पुलिस ने अब हत्या, हत्या के प्रयास तथा बलवे के अपराधियों पर गुंडा एक्ट लगाने की कार्रवाई की है। पुलिस आयुक्त के निर्देश पर तीनों जोन की पुलिस ने साढ़े पांच हजार अपराधियों को चिन्हित किया है। अब जिला अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो से उन पर दर्ज अन्य मुकदमों की डिटेल निकलवाई जा रही है। जिस पर हत्या या हत्या के प्रयास या बलवा के साथ-साथ तीन या उससे अधिक मुकदमे दर्ज मिलेंगे, उनके खिलाफ गुंडा एक्ट की कार्रवाई कर जिलाबदर किया जाएगा। पुलिस की ओर से इसके लिए सख्ती शुरू कर दी गई। कमिश्नरेट बनने के बाद दोगुने अपराधी जिलाबदर हुए गाजियाबाद। कमिश्नरेट बनने के बाद अपराधियों को जिलाबदर करने की कार्रवाई में दोगुना बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2021 में जहां पुलिस द्वारा 35 फीसदी अपराधियों पर जिला बदर की कार्रवाई की गई थी। वहीं, पुलिस कमिश्नरेट सिस्टम के दौरान वर्ष 2023 में यह दर 70 फीसदी रही। पुलिस के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2021 में जिला पुलिस ने 640 अभियुक्तों पर गुंडा एक्ट के तहत कार्रवाई की। जिसमें से 35 फीसद 229 अभियुक्तों को जिला बदर किया गया। जबकि वर्ष 2022 में पुलिस द्वारा 571 अभियुक्तों पर गुंडा एक्ट के तहत केस दर्ज किया गय, जिनमें से पुलिस ने 47 फीसद 270 अभियुक्तों को जिला बदर कर जिले से बाहर का रास्ता दिखाया। वहीं, गाजियाबाद में पुलिस कमिश्नरेट प्रणाली लागू होने के बाद वर्ष 2023 में पुलिस ने 732 अभियुक्तों पर गुंडा का केस दर्ज किया और 70 फीसदी 513 अभियुक्तों पर जिला बदर की कार्रवाई की। पुलिस कमिश्नरेट में यह कार्रवाई बीते सालों के मुकाबले में काफी ज्यादा है। पुलिस का कहना है कि इस वर्ष भी पुलिस अब तक 82 अभियुक्तों पर जिला बदर की कार्रवाई कर चुकी है।

ग्रामीण जोन में सबसे अधिक संख्या : गुंडा बनाने के लिए चिन्हित किए गए पांच हजार 461 अपराधियों में से 2918 अपराधी ग्रामीण जोन के हैं। दूसरे नंबर पर 1294 अपराधी सिटी जोन और तीसरे नंबर पर 426 अपराधी ट्रांस हिंडन जोन के हैं। इसके अलावा 813 अपराधी अन्य जनपदों के हैं। सूचीबद्ध किए गए सभी अपराधियों का आपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा है।

हत्या के 829 आरोपी : पुलिस ने जिन अपराधियों को चिह्नित किया है, उनमें 829 अपराधी हत्या के आरोपी हैं। इसके अलावा हत्या और हत्या के प्रयास के मामलों में शामिल 2110 अपराधी सूचीबद्ध किए गए हैं। 2522 अपराधी ऐसे हैं, जिन पर बलवे का मुकदमा दर्ज हुआ है। इनमें हत्या के 223 अपराधी, जानलेवा हमले के 334 अपराधी तथा बलवे के 256 अपराधी अन्य जिलों के हैं। अजय कुमार मिश्र, पुलिस आयुक्त, हत्या, हत्या के प्रयास और बलवे के मुकदमों के अपराधियों पर गुंडा एक्ट की कार्रवाई की जाएगी। ऐसे करीब साढ़े पांच हजार अपराधी चिह्नित किए गए हैं। जिन अपराधियों पर तीन या उससे अधिक मुकदमे दर्ज होंगे, गुंडा ऐक्ट का मुकदमा दर्ज कर उन्हें जिलाबदर किया जाएगा।

नोएडा-ग्रेटर नोएडा मेट्रो यात्रियों के अच्छी खबर, अब दिनभर वैलिड रहेगा टिकट

नई दिल्ली, एजेंसी। नोएडा-ग्रेनो मेट्रो लाइन पर टिकट इस्तेमाल करने की अवधि पूरे दिन कर दी गई है। अभी तक यह समय सीमा 30 मिनट थी। इससे लोगों को काफी दिक्कत हो रही थी। इसको देखते हुए नोएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (एनएमआरसी) ने यह निर्णय लिया। एनएमआरसी के प्रबंध निदेशक डॉ. लोकेश एम ने बताया कि नोएडा-ग्रेनो मेट्रो लाइन पर सफर करने के लिए दो तरह से टिकट लेने की सुविधा है। पहला, स्टेशन के काउंटर पर जाकर टिकट ले सकते हैं और दूसरा घर बैठे मोबाइल ऐप से टिकट को बुक कर सकते हैं। शर्त यह है कि टिकट बुक करने के बाद उसको 30 मिनट के अंदर इस्तेमाल करना जरूरी था। इसके बाद वह काम नहीं करता था। उसको काउंटर पर फिर से एक्टिव कराना पड़ता था अन्यथा वह टिकट मेट्रो स्टेशन पर लगे ऑटोमेटिक फेयर कलेक्शन गेट (एएफसी) पर काम नहीं करता था। इससे काउंटरों पर लोगों की लंबी लाइन लग रही थी। इन्हीं दिक्कतों को देखते हुए टिकट इस्तेमाल करने का समय बढ़ाने का निर्णय लिया गया। उन्होंने बताया कि हमारी कोशिश है कि स्टेशनों पर कम से कम भीड़ रहे और लोगों को कोई दिक्कत न हो। सवारियों की सहूलियत के लिए कई योजनाओं पर काम चल रहा है। गौरतलब है कि डीएमआरसी की तरफ से संचालित मेट्रो लाइनों के स्टेशनों पर टिकट इस्तेमाल करने की समय सीमा ढाई घंटे है। मेट्रो से सफर करने वाले प्रशांत कुमार, ओम झा, मीनाक्षी आदिन ने बताया कि यह सही फैसला है। इससे उन जैसे तमाम यात्रियों को काफी राहत मिलेगी। अमरेश ने बताया कि कई बार किसी के इंतजार में मेट्रो स्टेशन पर समय बिताना पड़ता था। ऐसे में दोबारा टिकट लेना पड़ता था।

दिल्ली फिर शर्मसार, डीयू के पास गर्ल्स हॉस्टल के अंदर वार्डन से गैंगरेप; मालिक के दोस्तों ने लूटी आबरू

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली यूनिवर्सिटी के नॉर्थ कैंपस के पास कमला नगर इलाके में स्थित एक गर्ल्स हॉस्टल में महिला वार्डन के साथ दो लोगों द्वारा गैंगरेप करने का मामला सामने आया है। रूप नगर थाना पुलिस ने घटना के तीन दिन बाद बुधवार को इसकी जानकारी मिलने पर हॉस्टल संचालक के दो दोस्तों पर गैंगरेप की धारा में मुकदमा दर्ज कर लिया है। हालांकि, अभी तक इस मामले में कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। जानकारी के अनुसार, 20 वर्षीय पीड़िता पिंकी (परिवर्तित नाम) रूप नगर इलाके में रहती है। वह लड़कियों के हॉस्टल में वार्डन और खाना पकाने का काम करती है। पीड़िता ने बताया कि उसकी ड्यूटी रात को हॉस्टल में रुकने की भी है। पीड़िता ने पुलिस को दी अपनी शिकायत में बताया कि वह रविवार रात को हॉस्टल पहुंची तो पीजी मालिक डिंपल अपने दोस्त राहुल और मोहित के साथ वहां आया। राहुल और मोहित उसके साथ छेड़छाड़ करने लगे। इस दौरान डिंपल फोन करने के बहाने बाहर चला गया। इसके बाद राहुल और मोहित ने उसके साथ गैंगरेप किया। वारदात के बाद आरोपी उसे जान से मारने की धमकी देते हुए डिंपल के साथ वहां से चले गए। पीड़िता ने बताया कि सोमवार रात को राहुल दोबारा आया और दुष्कर्म किया। वारदात के बाद से वह काफी डरी हुई परेशान थी।

दरारें...पानी रिसाव और ट्रैफिक जाम, 18 महीने में ही प्रगति मैदान टनल की हालत खराब; सुविधा की जगह बनी आफत

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रगति मैदान टनल का निर्माण वाहन चालकों जाम को राहत देने के लिए किया गया था, लेकिन पिछले कई दिन से इसकी हालत खराब है। यहां लगातार मरम्मत कार्य और पानी के रिसाव के चलते बीते एक सप्ताह से जाम लग रहा है। साथ ही, टनल में बनाई गईं लाखों की पेंटिंग भी खराब हो रही हैं। बिना किसी सूचना के टनल को बंद कर दिया जाता है। इस कारण नई दिल्ली से रिंग रोड होते हुए पूर्वी दिल्ली, नोएडा और दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे की तरफ जाने वाले लोगों को जाम से परेशान होना पड़ रहा है।

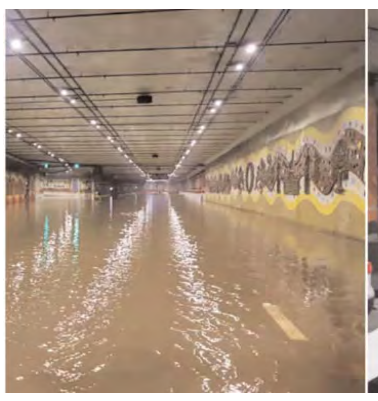

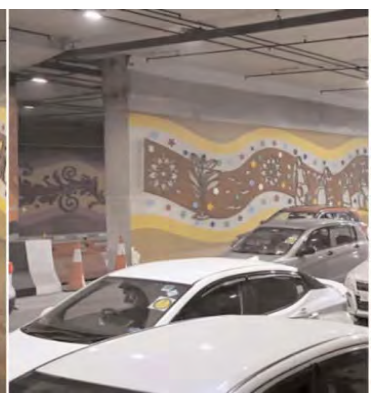

एक सप्ताह से बनी हुई है दिक्कत : 18 महीने पहले यातायात के लिए खोली गई 1.3 किलोमीटर लंबी टनल की सड़क में दरारें और पानी के रिसाव की समस्या खत्म होने का नाम नहीं ले रही। टनल के एक हिस्से में मरम्मत होती है तो कुछ दिन बाद दूसरे हिस्सों में कार्य शुरू हो जाता है। आलम यह है कि शाम के समय टनल से बाहर निकलने में कई बार 30-40 मिनट तक का समय लग जाता है, क्योंकि तीन लेन में से एक या दो को बंद कर देते हैं।

शुक्रवार शाम भी मरम्मत के चलते इंडिया गेट सर्किल से पटियाला हाउस कोर्ट रोड के सामने से पूरी टनल को कुछ देर के लिए बंद कर दिया गया, जबकि मथुरा रोड से टनल के अंदर प्रवेश करने वाला रास्ता करीब पांच दिन से बंद है। पहले से कोई सूचना न होने की वजह से नई दिल्ली से पूर्वी दिल्ली की तरफ जाने वाले अधिकांश वाहन आईटीओ की तरफ से निकलते हैं, जिससे आईटीओ पर भी जाम की स्थिति बन रही है।

रात को साढ़े नौ बजे तक ज्यादा परेशानी : नई दिल्ली से पूर्वी दिल्ली की तरफ जाने के लिए आईटीओ, प्रगति मैदान टनल और रिंग रोड पर शाम पांच से रात आठ बजे तक वाहनों का दबाव अधिक होने की वजह से जाम रहता था, लेकिन अब टनल बंद होने या फिर कुछ लेन बंद होने से वाहन लंबे समय तक जाम में फंस रहते हैं। बीते 10 दिन से इन हिस्सों में रात के करीब 9 से 9.30 बजे तक भारी जाम लग रहा है। मौजूदा समय में टनल के साथ पांच अंडरपास यातायात के लिए खुले हैं। इनमें चार मथुरा रोड पर स्थित है, जबकि पांचवां भैरों मार्ग से प्रगति मैदान को जोड़ता है। छठा अंडरपास भैरों मार्ग से रिंग रोड को जोड़ने के लिए बनाया जा रहा है, लेकिन इन सभी अंडरपास के अंदर भी सड़क टूटने और रिसाव की समस्या है। कई बार यहां पानी निकालने के लिए मशीन लगाई जाती है। यातायात शुरू होने के बाद टनल सवालों के घेरे में रही है। परियोजना के लिए बनी विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) में प्रवेश और निकासी के लिए तीन-तीन लेन (दोनों तरफ से) बनाने का सुझाव दिया गया।

गोकुलपुरी मेट्रो हादसे से सबक, पिंक लाइन स्टेशनों की दीवारों की होगी जांच

नई दिल्ली, एजेंसी। गोकुलपुरी मेट्रो स्टेशन पर गुरुवार को हुए हादसे के बाद पिंक लाइन पर बनी पूरी दीवार (चारदीवारी) का निरीक्षण किया जाएगा। अगर कहीं भी दीवार कमजोर मिली तो उसकी मरम्मत की जाएगी। आवश्यकता पड़ने पर नई दीवार बनाई जाएगी। यह निर्णय प्रबंध निदेशक डॉ. विकास कुमार द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों के साथ हुई बैठक में लिया गया है। दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (डीएमआरसी) के मुख्य प्रवक्ता अनुज दयाल के अनुसार, गोकुलपुरी हादसे को लेकर प्रबंध निदेशक ने विभिन्न विभागाध्यक्षों के साथ समीक्षा बैठक की है। इसमें यह तय किया गया है कि पिंक मेट्रो लाइन के एलिवेटिड हिस्से का बारीकी से निरीक्षण किया जाएगा, ताकि भविष्य में ऐसी घटना न हो। प्रबंध निदेशक ने निर्देश दिए हैं कि आवश्यकता पड़ने पर मरम्मत कार्य किया जाए। इस दौरान यह भी ध्यान रखा जाएगा कि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने अधिकारियों को सुरक्षा के सभी उपाय करने के निर्देश दिए हैं।

डीएमआरसी द्वारा अपने स्तर पर मामले की छानबीन की जा रही है। प्रबंध निदेशक गुरुवार शाम घटनास्थल पर पहुंचे और वहां का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने इस हादसे को लेकर जानकारी हासिल की। मजलिस पार्क से शिव विहार के बीच बनी पिंक लाइन मेट्रो की कुल लंबाई लगभग 59 किलोमीटर है। इस पर कुल 38 स्टेशन हैं, जिनमें से 26 एलिवेटिड और 12 भूमिगत हैं। अन्य विभागों को भी निरीक्षण के आदेश डीएमआरसी सूत्रों ने बताया कि मेट्रो में सफर के दौरान किसी प्रकार का हादसा न हो, इसके लिए सभी विभागाध्यक्षों को निरीक्षण करने के निर्देश दिए गए हैं। इसमें निर्माण के अलावा ट्रैक, सिग्नल, रॉलिंग स्टॉक आदि विभाग भी शामिल हैं।

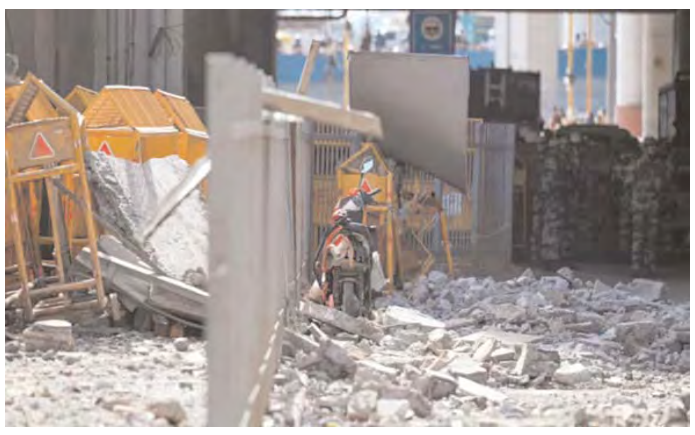

जनता से सहयोग मांगा : मेट्रो रेल संरक्षा आयुक्त जनक गर्ग ने शुक्रवार से जांच शुरू कर दी है। उन्होंने जनता से अपील की है कि अगर किसी के पास इस घटना से संबंधित कोई जानकारी या साक्ष्य हो तो वह शनिवार सुबह 11 बजे के बाद बाराखंभा रोड स्थित मेट्रो भवन के सम्मेलन कक्ष में दे सकता है।

दिल्ली आकर 62000 विदेशी नागरिक लापता, इमिग्रेशन विभाग ने पुलिस को सौंपी गायब लोगों की लिस्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली पुलिस अलग-अलग देशों से दिल्ली आए 62 हजार लापता विदेशी नागरिकों की तलाश कर रही है। इन विदेशी नागरिकों का भारत में वीजा समाप्त हो चुका है, लेकिन इनकी सरकार के पास कोई जानकारी नहीं है। यह जानकारी विदेश मंत्रालय ने पुलिस को दी है। वहीं, गृह मंत्रालय ने दिल्ली पुलिस को इनकी तलाश करने के निर्देश दिए हैं।

जानकारी के अनुसार, बीते कुछ वर्षों में भारत आए लाखों विदेशी नागरिक लापता हैं। यह विदेशी नागरिक, पढ़ने, इलाज कराने या घूमने के लिए भारत आए थे, लेकिन वीजा अवधि समाप्त होने के बाद से उनके बारे में कोई जानकारी नहीं है। सरकार को इस बात की भी स्पष्ट जानकारी नहीं है कि उन्होंने वीजा बढ़वाने के लिए आवेदन भी किया है या नहीं। इनमें ज्यादा संख्या नाइजीरिया और अफगानिस्तान से आए लोगों की है। इमिग्रेशन विभाग ने ऐसे लोगों की सूची तैयार कर दिल्ली पुलिस को सौंपी है। जानकारी उपलब्ध कराई सूत्रों ने बताया कि विदेश मंत्रालय की तरफ से लापता विदेशी नागरिकों की सभी जानकारी डोंगल के माध्यम से भेजी है। प्रत्येक जिले के अतिरिक्त उपायुक्त को डोंगल दिया गया है। उन्हें निर्देश दिया गया है कि उन विदेशी नागरिकों की तलाश करें, जिन्होंने उनके क्षेत्र का पता दिया हुआ है।

अपराध में लिप्त होने का शक : पुलिस को शक है कि अवैध तरीके से भारत में रह रहे विदेशी नागरिक अपराध में लिप्त हो सकते हैं। कई बार ड्रग्स तस्करी के मामले में विदेशी नागरिक पकड़े जा चुके हैं। ऐसे में उन्हें पकड़कर विदेश डिपोर्ट करने से अपराध में भी कमी आएगी। विदेशी नागरिक को भारत आने से पहले वीजा लेना होता है। अगर उसे अतिरिक्त समय लग रहा है तो वह वीजा समाप्त होने से पहले इसकी अवधि को बढ़ाने के लिए आवेदन करता है। अगर किसी शख्स ने वीजा बढ़वाने के लिए आवेदन भी कर रखा होते है तो उसे डिपोर्ट नहीं किया जाता। दिल्ली पुलिस की स्पेशल ब्रांच को इसके लिए नोडल एजेंसी बनाया गया है। स्पेशल ब्रांच की तरफ से प्रत्येक जिले की पुलिस को निर्देश दिए गए हैं कि वह उपलब्ध कराए गए पते पर जाकर विदेशी नागरिक का सत्यापन करें। अगर विदेशी नागरिक ने वीजा बढ़ाने के लिए आवेदन किया है तो इससे स्पेशल ब्रांच को अवगत कराएं।

चौधरी चरण सिंह ने गाजियाबाद से शुरू की थी वकालत, इस गांव से रहा लगाव; भारत रत्न पर लोगों ने जताई खुशी

नई दिल्ली, एजेंसी। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने से गाजियाबाद के लोगों में खुशी का माहौल है। चौधरी चरण सिंह को गाजियाबाद से विशेष लगाव था। उन्होंने सबसे पहले गाजियाबाद से वकालत शुरू की थी। वह यहां आर्य समाज के सचिव भी रहे। उनका परिवार कई साल तक भोजपुर ब्लॉक के भदोला गांव में रहा। चौधरी चरण सिंह ने वर्ष 1935 में गाजियाबाद से वकालत शुरू की। उस वक्त गाजियाबाद मेरठ जनपद की तहसील थी। लोग बताते हैं कि चौधरी चरण सिंह अधिवक्ताओं में बहुत लोकप्रिय थे।

आर्य समाज के कार्यक्रम में चौधरी चरण सिंह जब बोलते थे तो लोग उन्हें सुनने के बाद ही जाते थे। हापुड़ के नूरपुर गांव से उनका परिवार भदोला गांव आ गया था। इसके बाद परिवार मेरठ के जानी ब्लॉक के भूपगढ़ी चला गया। चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने पर गन्ना समिति के चेयरमैन अमरजीत सिंह बिड्डी के नेतृत्व में किसानों ने दिल्ली के कनॉट प्लेस जाकर गुड़ बांटा। इस अवसर पर दिलावर सिंह, हरेंद्र सिंह फौजी, सुशील कुमार, ऋषिपाल सिंह, युजवेंद्र सिंह, भीम सिंह आदि मौजूद रहे। रालोद के क्षेत्रीय महासचिव अरुण चौधरी भुल्लन के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने मेरठ रोड स्थित पार्टी कार्यालय पर चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर मिठाई बांटी। रालोद नेता रविंदर चौहान, भूपेंद्र सिंह बॉबी, तेजपाल सिंह और इंद्रजीत सिंह टीटू ने भी खुशी जाहिर की। रालोद विधायक मदन भैया ने कहा कि सरकार की घोषणा से खुशी का माहौल है। कस्बा पतला से रहा विशेष लगाव पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को कस्बा पतला से विशेष लगाव था। गृहमंत्री रहते हुए भी कस्बा पतला में आए। यहां पर उनके नाम पर आईटीआई और इंटर कॉलेज हैं। माल्यार्पण कर मिठाइयां बांटीं बार एसोसिएशन गाजियाबाद ने चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर मिठाइयां बांटीं। बार अध्यक्ष राकेश त्यागी कैली ने कहा कि चौधरी चरण सिंह बार के सदस्य रहे हैं। यह बार के लिए गर्व का विषय है। पूर्व अध्यक्ष अमर पाल सिंह तेवतिया ने कहा कि खुशी की लहर है। इस अवसर पर चौधरी अजय वीर सिंह, पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र राठी, नाहर सिंह राठी , सुनील त्यागी, जितेन्द्र चौहान आदि मौजूद रहे।

भारत रत्न मिलने पर खुशी जताई राष्ट्रीय जाट महासभा भारत ने खुशी जताई है। जिला अध्यक्ष आनंद चौधरी, उपाध्यक्ष सोहनवीर सिंह, मोहित मलिक ने मिठाइयां बांटीं। अखिल भारतीय जाट आरक्षण संघर्ष समिति ने चौधरी चरणसिंह को भारत रत्न देने के लिए सरकार का आभार जताया। बैठक कर अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दहिया, छोटूराम, रणधीर सिंह मौजूद रहे। रालोद के राष्ट्रीय महासचिव त्रिलोक त्यागी ने कहा, पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने भारतीय राजनीति को महलों से निकाल कर गांव की गलियों तक पहुंचाया। किसानों-मजदूरों को भरोसा दिया कि वे सरकारें पलट सकते हैं। ग्रामीण भारत को सशक्त बनाया। पूर्व सांसद केसी त्यागी ने कहा, चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलना खुशी की बात है। चौधरी चरण सिंह ने किसानों की खुशहाली के लिए जो योगदान दिया, उसे भुलाया नहीं जा सकता। मैंने खुद सरकार से भारत रत्न देने की मांग की थी।

संक्षिप्त समाचार

भारत सितंबर में विश्व ग्रुप मुकाबले में स्वीडन से खेलेगा

बेंगलुरु, एजेंसी। भारतीय डेविस कप टीम सितंबर में होने वाले डेविस कप विश्व ग्रुप ढ्ढ के रोमांचक मुकाबले में स्वीडन से भिड़ने के लिए तैयार है, गुरुवार को ड्रॉ की घोषणा की गई। विश्व ग्रुप ढ्ढ प्लेऑफ़ में पाकिस्तान पर 4-0 की हालिया जीत से उत्साहित भारतीय टीम स्वीडन का सामना करने के लिए तैयार है, जिसका लक्ष्य अपने स्कैंडिनेवियाई समकक्षों के खिलाफ अपनी पहली जीत हासिल करना है। डेविस कप में भारत और

डेविस कप

स्वीडन का पांच बार आमना-सामना हुआ है और स्वीडन हर बार विजयी रहा है। इसमें 1987 डेविस कप फाइनल में 0-5 की हार शामिल है, जो इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के फाइनल में भारत की आखिरी उपस्थिति थी। स्वीडन के साथ भारत की आखिरी भिड़ंत 2005 में हुई थी जब उन्होंने दिल्ली में स्वीडिश टीम की मेजबानी की थी, लेकिन अंततः उन्हें 1-3 से हार का सामना करना पड़ा था। हालाँकि, मौजूदा स्वीडिश लाइनअप में दुर्जेय एकल खिलाड़ियों की कमी के कारण, भारतीय दल को माहौल अपने पक्ष में करने का मौका मिल रहा है। प्रतिभाशाली रोहित राजपाल के नेतृत्व में, भारत का लक्ष्य स्वीडन की कथित कमजोरियों का फायदा उठाना और विजयी होना है।

भविष्य में कम से कम तीन मैचों की टेस्ट श्रृंखला की सिफारिश

केप टाउन, एजेंसी। मैरीलेबोन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) की विश्व क्रिकेट समिति (डब्ल्यूसीसी) ने कहा है कि वह 2028 से अगले आईसीसी फ्यूचर टूर्स प्रोग्राम (एफटीपी) में कम से कम तीन टेस्ट मैच खेलने की सिफारिश करती है। समिति की पिछले सप्ताह केप टाउन में बैठक हुई थी, जिसकी मेजबानी दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान ग्रीम स्मिथ ने की थी, जो एसए20 के कमिश्नर भी हैं।ऑस्ट्रेलिया ने हाल ही में वेस्टइंडीज के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला खेली, जो 1-1 से बराबरी पर समाप्त हुई और उसे न्यूजीलैंड में भी इसी

तरह की दो मैचों की श्रृंखला खेलनी है। इसके अलावा, भारत ने दिसंबर 2023-जनवरी 2024 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला भी खेली, जो दोनों टीमों के बीच सामान्य तीन मैचों की श्रृंखला से एक बदलाव था।डब्ल्यूसीसी ने अपने बयान में कहा, यह बैठक ब्रिस्बेन और हैदराबाद में खेले गए दो शानदार पुरुष टेस्ट मैचों के तुरंत बाद हुई, जिसने टेस्ट मैच प्रारूप के समर्थकों को उत्साहित किया, फिर भी उन्हें ऑस्ट्रेलिया बनाम वेस्ट इंडीज दो मैच श्रृंखला में संभावित तीसरे मैच के निर्णायक की अनुपस्थिति पर निराशा हुई।

लीडर के तौर पर प्लेयर्स का भरोसा जीतना जरूरी: धोनी

बोले- जब आप प्लेयर्स के वफादार बनेंगे, तब टीम की परफॉर्मेंस बेहतर होगी

नईदिल्ली। भारतीय टीम के पूर्व वर्ल्ड कप विनिंग कप्तान एमएस धोनी का कहना है कि लीडर के तौर पर आपको प्लेयर्स की रिस्पेक्ट करना जरूरी है, जब तक आप उन्हें नहीं समझेंगे, तब तक उनका भरोसा जीतना मुश्किल है। सिंगल आईडी कंपनी के एक प्रोग्राम में धोनी ने कहा, प्लेयर्स की रिस्पेक्ट आपकी पोजीशन से नहीं, बल्कि एक्शन से आती है। सम्मान पाने की कोशिश न करें बल्कि इसे अर्जित करें, क्योंकि यह बहुत स्वाभाविक है। एक बार आपमें वह निष्ठा आ गई तो टीम का प्रदर्शन भी वैसा ही होगा।

प्लेयर्स की स्ट्रैंथ और वीकनेस जानना जरूरी

धोनी ने कहा - पहला कदम ड्रेसिंग रूम में प्रत्येक खिलाड़ी की ताकत और कमजोरी को समझना है। कुछ लोगों को दबाव पसंद होता है और कुछ लोगों को दबाव पसंद नहीं होता। एक बार जब आप ऐसा कर लेते हैं, तो आप किसी खिलाड़ी की कमजोरी पर काम करना शुरू कर देंगे, बिना उसे बताए कि यह उसकी कमजोरी है। यह एक खिलाड़ी को कॉन्फिडेंट रखता है और खिलाड़ी को खुद पर संदेह करने से रोकता है। वे यह देखना पसंद करते हैं कि यह कैसे काम करता है। कप्तान या कोच का काम यह पता लगाना है कि किसके लिए क्या काम कर रहा है।

कई बार आप खुद पर विश्वास नहीं करते - धोनी

धोनी ने कहा- मुझे हमेशा लगता था कि लीडर के तौर पर सम्मान अर्जित करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह कुर्सी या पद के साथ नहीं आता है। यह आपके एक्शन के साथ आता है। कभी-कभी, भले ही टीम आप पर विश्वास करती हो, आप वास्तव में पहले व्यक्ति हैं जो खुद पर भरोसा नहीं करेंगे।

90 टेस्ट, 350 वनडे और 98 टी-20 खेले

धोनी ने भारत के लिए 90 टेस्ट, 350 वनडे और 98 टी-20 खेले हैं। इनमें उन्होंने 4,876 टेस्ट, 10,773 वनडे और 1,617 टी-20 रन बनाए हैं। धोनी ने ढ्ढक्र में अब तक 190 मैच में 4,432 रन बनाए हैं। उनकी कप्तानी में ष्टस्थ्य ने पांच बार ढ्ढक्र का खिताब जीता है। उन्हीं की कप्तानी में टीम ने 2023 में भी ढ्ढक्र जीता।

अब आखिरी 3 टेस्ट से भी विराट कोहली ने लिया नाम वापसी

विराट कोहली टेस्ट सीरीज से ही बाहर

नईदिल्ली, एजेंसी। बीसीसीआई यानी भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने इंग्लैंड के खिलाफ अंतिम 3 टेस्ट मैच के लिए भारतीय दल का ऐलान कर दिया है। टीम में चोटिल रविंद्र जडेजा और केएल राहुल की वापसी हुई है। हालांकि पहले उन्हें अपना फिटनेस टेस्ट क्लियर करना पड़ेगा। शुरुआती दो टेस्ट की तरह भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने अंतिम 3 टेस्ट से भी अपना नाम वापिस ले लिया है। वह 13 साल में पहली बार पूरी टेस्ट सीरीज स्किप कर रहे हैं। आखिर विराट कोहली की यह सीरीज स्किप करने की वजह क्या है? आइये जानते हैं।

विराट कोहली ने आखिरी 3 टेस्ट से नाम क्यों लिया वापस?

भारतीय टीम के पूर्व कप्तान और दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली ने पहले दो टेस्ट में निजी कारणों की वजह से अपना नाम वापिस लिया था। हालांकि अगले 3 टेस्ट में भी उनके ना खेलने की वजह सामने नहीं आई है। वह प्रसनल रीजन की वजह से ही इंग्लैंड के खिलाफ अंतिम 3 टेस्ट भी नहीं खेलेंगे। बीसीसीआई ने कोहली के टेस्ट सीरीज से नाम वापसी लेने पर कहा, विराट कोहली व्यक्तिगत कारणों से बची सीरीज के लिए चयन के लिए अनुपलब्ध रहेंगे। बोर्ड कोहली के फैसले का पूरा सम्मान और समर्थन करता है। बता दें कि विराट कोहली ने 2011 से अब तक अपने करियर में कुल 113 टेस्ट मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 49 की औसत से 8848 रन बनाए हैं। इस दौरान किंग कोहली के बल्ले से 29 शतक और 50 अर्धशतक देखने को मिले हैं। टेस्ट में उनका बेस्ट स्कोर नाबाद 254 रन है।

अंतिम 3 टेस्ट के लिए इंग्लैंड के खिलाफ भारत का स्ा ाड

रोहित शर्मा (कप्तान), जसप्रीत बुमराह (उपकप्तान), यशस्वी जयसवाल, शुभमन गिल, केएल राहुल*, रजत पाटीदार, सरफराज खान, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), केएस भरत (विकेटकीपर), आर अश्विन, रविंद्र जडेजा*, अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, मुकेश कुमार, आकाश दीप।

तरन्नुम पठान गुजरात जायंट्स में आदर्श मिताली राज और नूशिन अल खादीर के साथ काम करने की इच्छुक

अहमदाबाद, एजेंसी। अनुभवी ऑफ-ब्रेक गेंदबाज तरन्नुम पठान ने कहा कि वह 23 फरवरी से डब्ल्यूपीएल 2024 सीज़न शुरू होने पर गुजरात जायंट्स में अपनी आदर्श मिताली राज और नूशिन अल खादीर के तहत काम करने की इच्छुक हैं। जबकि नूशिन, जिनकी कोचिंग में भारत ने 2023 में उद्घाटन अंडर19 महिला टी20 विश्व कप में खिताब जीता था, जायंट्स की गेंदबाजी कोच हैं। भारत की महान बल्लेबाज मिताली, संरक्षक और सलाहकार हैं। मैं नूशिन अल खादीर के साथ काम करने के लिए उत्सुक हूं। वह भी मेरी तरह ऑफ स्पिनर हैं लेकिन मुझे कभी उनके साथ काम करने का मौका नहीं मिला। मैं मिताली राज और नूशिन अल खादीर के साथ ड्रेसिंग रूम साझा करने के लिए उत्सुक हूं। तरन्नुम ने फ्रेंचाइजी द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में कहा, मैं उनसे बहुत कुछ सीख सकती हूं।

तरन्नुम भारत ए के लिए खेल चुकी हैं और उन्हें 2010 में राष्ट्रीय शिविर के लिए चुना गया था, लेकिन वह घरेलू सर्किट में एक प्रमुख गेंदबाज रही हैं, जिनके नाम सभी प्रारूपों में 200 से अधिक विकेट हैं। वह लगभग 16 वर्षों तक अपनी घरेलू टीम बड़ौदा के लिए खेलीं और उनकी कप्तानी भी की, लेकिन अब वह गोवा का प्रतिनिधित्व कर रही हैं, जहां वह मौजूदा घरेलू सत्र की शुरुआत से पहले स्थानांतरित हो गई थीं। वह हाल ही में वडोदरा में इंटर-जोनल एकदिवसीय खेलों के लिए दक्षिण क्षेत्र की टीम में थीं।

सिकंदर आखिरी गेंद पर छक्का लगाकर बने हीरो

जिताई हारी हुई बाजी

नई दिल्ली। सिकंदर रजा शुक्रवार की रातआईएलटी-20 में उस समय हीरो बने जब उन्होंने अपनी टीम दुबई कैपिटल्स को आखिरी गेंद पर छक्का लगाकर महत्वपूर्ण जीत दिलाई। यह मैच दुबई कैपिटल्स के लिए जीतना काफी जरूरी था, अगर टीम यह मैच हार जीती तो वह प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो जाती।

मगर सिकंदर की रजा कुछ और ही थी, 172 रनों के टारगेट का पीछा करते हुए जब टीम को आखिरी गेंद पर 6 रन की जरूरत थी तो उन्होंने छक्के के साथ टीम को सांसे रोक देने वाले मैच में जीत दिलाई। सिकंदर रजा ने इस मैच में 60 रनों की नाबाद पारी के खेली और उन्हें इस पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच के अवॉर्ड से नवाजा गया।

फूड सप्लीमेंट की टेस्टिंग करा सकेंगे खिलाड़ी

खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने सीओई का किया उद्घाटन

गांधीनगर, एजेंसी। खिलाड़ियों के न्यूट्रीशनल सप्लीमेंट की टेस्टिंग के लिए यह सेंटर ऑफ एक्सिलेंस गांधीनगर के राष्ट्रीय फॉरेंसिक साइंसेज यूनिवर्सिटी में स्थापित किया गया है। पेरिस ओलंपिक से पहले खिलाड़ियों को मिलावट वाले सप्लीमेंट के सेवन से बचाने के लिए मंत्रालय और नाडा ने इसकी स्थापना की है। प्रतिबंधित शक्तिवर्धक दवाओं के मिलावट वाले फूड सप्लीमेंट के सेवन से खिलाडियों के डोपिंग में फंसने के मामलों को रोकने के लिए खेल मंत्रालय और राष्ट्रीय डोप रोधी एजेंसी (नाडा) ने बड़ा कदम उठाया है।

अब खिलाड़ी फूड सप्लीमेंट का सेवन करने से पहले इनकी टेस्टिंग करा सकेंगे, जिससे यह पता लग जाएगा कि सप्लीमेंट सेवन योग्य है या नहीं। खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने शुक्रवार को फूड सप्लीमेंट की टेस्टिंग के लिए गांधीनगर (गुजरात) में स्थापित सेंटर ऑफ एक्सिलेंस (सीओई-एनएसटीएस) का वर्चुअली उद्घाटन किया।

सप्लीमेंट की टेस्टिंग के लिए नहीं थी सुविधा

खिलाड़ियों के न्यूट्रीशनल सप्लीमेंट की टेस्टिंग के लिए यह सेंटर ऑफ एक्सिलेंस गांधीनगर के राष्ट्रीय फॉरेंसिक साइंसेज यूनिवर्सिटी में स्थापित किया गया है। पेरिस ओलंपिक से पहले खिलाड़ियों को मिलावट वाले सप्लीमेंट के सेवन से बचाने के लिए मंत्रालय और नाडा ने इसकी स्थापना की है। खेल मंत्री ने कहा कि अभी तक न्यूट्रीशनल सप्लीमेंट की टेस्टिंग के लिए कोई सुविधा उपलब्ध नहीं थी। अब हम यह सुविधा दे रहे हैं। खिलाड़ियों के अलावा जिम में सप्लीमेंट का सेवन करने वाले अब इनकी टेस्टिंग करा सकते हैं।

सप्लीमेंट पर शोध भी होगा

खेल मंत्री ने कहा कि खिलाड़ी टेस्टिंग के बाद अच्छे सप्लीमेंट का सेवन कर अपने प्रदर्शन को अच्छा कर सकते हैं। जब हम पेरिस ओलंपिक की बात करते हैं तो सुरक्षित, साफ और सुथरे खेल की भी बात करते हैं। सीओई में खिला[ड़ियों के न्यूट्रीशनल सप्लीमेंट को लेकर शोध होगा, जिससे उन्हें इसके बारे में अधिक से अधिक जानकारी मिल सकेगी।

संक्षिप्त समाचार

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर इंडिया ने अपने सड़क सुरक्षा जागरुकता अभियान को भोपाल में विस्तारित किया

भोपाल, एजेंसी। एचएमएसआई सड़क सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। सड़कों पर ज़िम्मेदाराना व्यवहार को सुनिश्चित करने तथा अधिक कर्तव्यनिष्ठ एवं सुरक्षा-उन्मुख समाज के निर्माण में सहयोग प्रदान करने के लिए कंपनी नियमित रूप से देश के विभिन्न क्षेत्रों में नियमित रूप से सड़क सुरक्षा जागरुकता अभियानों का संचालन करती है। एचएमएसआई का मानना है कि इस तरह के अभियान लोगों को वाहन चलाने की सुरक्षित प्रथाएं अपनाने और सड़क पर ऐहतियात बरतने के लिए प्रेरित करते हैं। इसी तरह के एक अभियान का आयोजन हाल ही में भोपाल शहर में किया गया, जिसने प्रतिभागियों पर उल्लेखनीय छाप छोड़ी। आर्मी पब्लिक स्कूल के परिसर में आयोजित इस अभियान में 2700 से अधिक स्कूली छात्रों एवं स्टाफ के सदस्यों ने हिस्सा लिया। एचएमएसआई का मानना है कि सड़क सुरक्षा जागरुकता कम उम्र में ही दी जानी चाहिए और इसीलिए कंपनी स्कूल एवं कॉलेज स्तर पर सड़क सुरक्षा शैक्षणिक पाठ्यक्रम के समावेशन को बढ़ावा देती है। कम उम्र में युवा चीज़ों को जल्दी सीखते हैं, इसी दृष्टिकोण के साथ कंपनी का उद्देश्य नई पीढ़ी को सड़क के ज़िम्मेदाराना इस्तेमाल के लिए ज़रूरी ज्ञान एवं कौशल प्रदान करना है।

हेल्दी डेज़र्ट ग्लूटेन- फ्री बादाम केक रेसिपी का आनंद लें

मुंबई, एजेंसी। चीनी आपके स्वास्थ्य के लिए समस्याएँ पैदा कर सकती है, जिसका आपके संपूर्ण स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए चीनी के सेवन पर नियंत्रण रखना जरूरी है। इसे ध्यान में रखते हुए, आपके स्वास्थ्य पर कम से कम प्रभाव डालकर आपकी मीठे खाने की इच्छा को पूरा करने का, एक तरीका है ग्लूटेन- फ्री बादाम केक। बादाम खाने के कई स्वास्थ्य लाभ हैं जिनके बारे में हर कोई जानता है। बादाम में विटामिन ई, मैग्नीशियम, प्रोटीन, राइबोफ्लेविन और जिंक सहित 15 आवश्यक पोषक तत्व होते हैं। बादाम में मौजूद प्रोटीन की प्रचुर मात्रा मांसपेशियों की वृद्धि और रखरखाव में मदद करती है और विटामिन बी2, विटामिन ई, मैग्नीशियम और फास्फोरस जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व भी प्रदान करती है, जो भोजन से ऊर्जा निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, अपने आहार में मुट्ठी भर बादाम शामिल करने से भोजन के बीच तृप्ति की भावना को बढ़ाकर वजन नियंत्रित करने में मदद मिलती है। इसके अलावा, बादाम में कुल और एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को कम करने की क्षमता होती है, जो हृदय स्वास्थ्य में योगदान देता है और सूजन को कम करता है। बादाम के ऊर्जा बढ़ाने वाले गुण उन्हें एक पौष्टिक स्नैक विकल्प बनाते हैं।

श्री केशव सीमेंट एंड इंफ्रा का वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही में शुद्ध लाभ 186 प्रतिशत बढ़ा

मुंबई, एजेंसी। श्री केशव सीमेंट एंड इंफ्रा लिमिटेड कर्नाटक राज्य में सीमेंट के निर्माण और सोलर पावर जनरेशन तथा वितरण में लगी हुई ने वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही के अपने अनऑडिटेड वित्तीय परिणामों की घोषणा की है. प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए, श्री केशव सीमेंट एंड इंफ्रा लिमिटेड के चेयरमैन, श्री वेंकटेश कटवा ने कहा, मानसून सीजन के निष्कर्ष का अनुकरण करते हुए हम आम तौर पर अनुकूल अवधि का अनुभव करते हैं, जैसा कि वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही का हमारा सुधारित प्रदर्शन जिसका प्रमाण है. जिससे दोनों ऑपरेटिंग और शुद्ध स्तरों पर लाभप्रदता में उल्लेखनीय सुधार दिखाई दिया है. हमारा सुधारित प्रदर्शन का श्रेय मुख्य रूप से प्रभावी लागत व्यवस्थापन और कच्चे माल की कीमतों में नरमी के चलते हो सकता है. हम यह रुझान बरकरार रहने का अनुमान लगा रहे हैं जिससे हम वित्त वर्ष की शेष अवधि में हमारा मार्जिन प्रोफाइल बरकरार रखने में समर्थ होंगे. तिमाही के दौरान हम अन्य सकारात्मक डेवलपमेंट के गवाह रहे ।

700 से टूटकर 2 पर आया यह शेयर, अब खरीदने की लूट

नई दिल्ली, एजेंसी। अनिल अंबानी की दिवालिया कंपनी रिलायंस कम्युनिकेशंस के शेयरों में शुक्रवार को रॉकेट जैसी तेजी देखने को मिली। कंपनी के शेयर में यह पॉजिटिव हलचल कंपनी से जुड़ी कुछ खबरों की वजह से आई है। इसमें भी केंद्र सरकार की ओर से एक अहम फैसले का प्रभाव शेयर पर दिखा है।

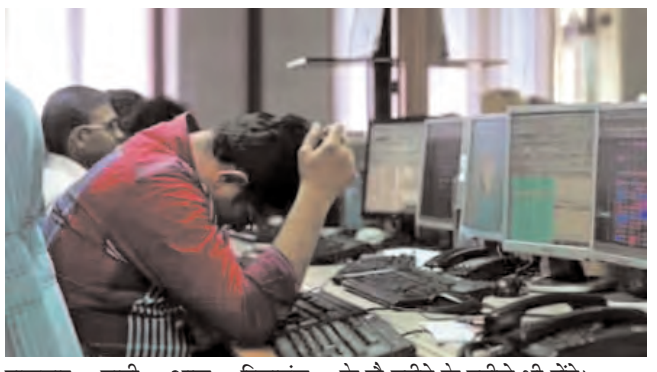

या है सरकार का फैसला

दरअसल, सरकार ने 96,317.65 करोड़ रुपये के आधार मूल्य पर मोबाइल फोन सेवाओं के लिए आठ स्पेक्ट्रम बैंड में नीलामी को मंजूरी दी है। अहम बात ये है कि दिवाला प्रक्रिया से गुजर रही कुछ दूरसंचार कंपनियों के पास मौजूद स्पेक्ट्रम को भी इस नीलामी में बिक्री के लिए रखा जाएगा। इन स्पेक्ट्रम की अवधि इसी साल खत्म हो रही है। इस बीच, शुक्रवार यानी आज रिलायंस कम्युनिकेशंस के ऋणदाताओं की समिति (सीओसी) की बैठक हुई है। कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक सीओसी की यह 45वीं बैठक है।बीते दिनों रिलायंस कम्युनिकेशंस लिमिटेड ने बीएसई को सूचित किया था कि कंपनी के निदेशक मंडल की बैठक 10 फरवरी 2024 को होने वाली है। इस बैठक में अन्य बातों के साथ-साथ कंपनी के दिसंबर तिमाही के नतीजे जारी किए जाएंगे। इसमें चालू वित्त वर्ष के नौ महीने के नतीजे भी होंगे।

सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन रिलायंस कम्युनिकेशंस के शेयर 4.70 प्रतिशत चढ़कर 2.45 रुपये पर बंद हुए। इस हफ्ते शेयर ने निवेशकों को लगातार मुनाफा दिया है और बीएसई सेंसेक्स के मुकाबले 25 फीसदी से ज्यादा चढ़ा है। 13 दिसंबर 2023 को शेयर की कीमत 2.49 रुपये थी, जो 52 वीक हाई है। हालांकि, साल 2008 में यह शेयर 700 रुपये के पार कारोबार कर रहा था।

एक हफ्ते में शेयर 15 फीसदी से ज्यादा चुढ़ा

बोर्ड मीटिंग से पहले नॉन-बैंकिंग फाइनेंस कंपनी पैनाफिक इंडस्ट्रियल्स लिमिटेड के शेयरों ने शुक्रवार को चौंकाने वाला रिटर्न दिया। इस पेनी शेयर की कीमत में 10 फीसदी की तेजी आई। ट्रेडिंग के दौरान शेयर की कीमत 1.68 रुपये तक पहुंची और इसी के साथ शेयर अपने 52 वीक हाई से मामूली अंतर से रह गया। इसी साल जनवरी महीने में 1.70 रुपये तक शेयर की कीमत गई जो इसका 52 वीक हाई भी है। बीएसई सेंसेक्स के मुकाबले एनबीएफसी के शेयर ने इस साल 55 फीसदी की रिकवरी देखी है। बीते एक हफ्ते में शेयर 15 फीसदी से ज्यादा चुढ़ चुका है।

शेयरहोल्डिंग पैटर्न

इस पेनी शेयर में प्रमोटर्स की हिस्सेदारी 1.82 फीसदी की रह गई है तो पब्लिक शेयरहोल्डिंग 98.18 फीसदी की है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही यानी जून 2023 तक प्रमोटर की हिस्सेदारी 14.50 फीसदी थी। इसके बाद सितंबर तिमाही में बड़ी कटौती देखने को मिली और 1.82 फीसदी पर अब तक बरकरार है। प्रमोटर्स में चार इंडिविजुअल्स- सरिता गुप्ता, सरोज गुप्ता, अनिल और राजीव गुप्ता शामिल हैं। इनके पास कुल 14,98,294 शेयर हैं।

होने वाली है बोर्ड मीटिंगः

बीते दिनों पैनाफिक इंडस्ट्रियल्स लिमिटेड ने शेयर बाजार को बताया कि कंपनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की मीटिंग 13 फरवरी को होने वाली है। इस बैठक में कंपनी के दिसंबर तिमाही के नतीजे जारी और मंजूर किए जाएंगे। इसके अलावा अन्य फैसले भी हो सकते हैं।

शेयर बाजार का हाल

इस बीच, सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को शेयर बाजार में रौनक लौट आई। बीते गुरुवार को बड़ी गिरावट के बाद सेंसेक्स और निफ्टी, दोनों ही हरे निशान पर बंद हुए।

होम लोन की ईएमआई होगी कम! इस साल इंटरेस्ट में कमी संभव

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय रिजर्व बैंक की मॉनिटरी पॉलिसी में इस बार भी रेपो रेट में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इससे होम लोन, कार लोन समेत तमाम तरह के लोन लेने वाले लोगों को निराशा हाथ लगी है। हालांकि, आरबीआई ने कहा है कि महंगाई कम हो रही है। इससे संकेत मिले हैं कि आने वाली मौद्रिक पॉलिसी में ब्याज दरों में कमी होगी। एक रिपोर्ट के मुताबिक, आने वाले महीनों में आरबीआई रेपो दर में 50-75 आधार अंकों की कटौती करेगा, जिससे 18 महीनों के भीतर दरें 5.75 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच जाएंगी। इससे होम लोन की ईएमआई का बोझ कम होगा। एक अनुमान के मुताबिक, इस साल होम लोन की ईएमआई 3.5 प्रतिशत गिर सकती है। अगर आपने 50 लाख रुपए का होम लोन 20 साल के लिया है और उस पर ब्याज की दर 9 फीसदी से घटकर 8.5 फीसदी हो जाती है, तो आपके होम लोन की ब्याज दर में 0.5 फीसदी की गिरावट से आप 3.83 लाख रुपए की बचत होगी। एक्सपर्ट का कहना है कि आने वाले महीनों में ब्याज दर में कमी की पूरी उम्मीद है। इसका तुरंत फायदा लेने के लिए आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आपकी ऋण व्यवस्था बाहरी बेंचमार्क-लिंक्ड उधार दर (ईबीएलआर) से लिंक हो।

टाटा एआईए ने वेंकटचलम एच को मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक नियुक्त किया

मुंबई, एजेंसी। भारत की सबसे तेज़ी से बढ़ती जीवन बीमा कंपनियों में से एक, टाटा एआईए लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के बोर्ड ने वेंकटचलम एच को नया मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक नियुक्त किया है। यह नियुक्ति आईआरडीएआई से नियामक अनुमोदन के अधीन है। वेंकटचलम एच वर्तमान मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक, नवीन ताहिलयानी का स्थान लेंगे, जो टाटा समूह में एक दूसरा पद संभालेंगे और उन्हें टाटा एआईए लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के गैर-कार्यकारी निदेशक के रूप में पदोन्नत किया गया है। वेंकटचलम एच को सभी प्यार से वेंकी कहते हैं। जीवन बीमा, संपत्ति प्रबंधन और कस्टोडियल सेवाओं में 27 वर्षों से अधिक अनुभव के साथ वेंकी ने बिक्री और वितरण, रणनीति, व्यवसाय और प्रक्रिया विकास और मुख्य खाता प्रबंधन में विशेषज्ञता हासिल है। वह 2016 में टाटा एआईए में शामिल हुए और इसके पहले अध्यक्ष और मुख्य वितरण अधिकारी थे। वेंकी ने मार्केटिंग, स्ट्रैटेजी, विश्लेषण और प्रत्यक्ष डिजिटल व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में भी कई पहलों का नेतृत्व किया है।

स्काई ने वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही के जोरदार वित्तीय परिणामों की घोषणा की

मुंबई, एजेंसी। स्काई इंडस्ट्रीज लिमिटेड, टेक्निकल टैक्सटाइल्स, विशेष रूप से हूक और लूप फास्टनर्स के निर्माण में लगी हुई, ने अपने वित्त वर्ष 24 के 9 महीने और तीसरी तिमाही के अनऑडिटेड वित्तीय परिणामों की घोषणा की है. स्काई इंडस्ट्रीज लिमिटेड के पूर्णकालिक निदेशक और सीएफओ, श्री माइकल रावरानी ने कहा, हम हमारे वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही के परिणाम घोषित कर हर्षित है, जिसमें हमारा फोकस लागत कार्य कुशलता और व्यूहात्मक पहल पर रहा जिसके चलते हमारे लाभप्रदता रेशियो में उल्लेखनीय रूप से वृद्धि हुई. मौजूद चुनौतियों के बावजूद, हमने चपलता और दृढ़ संकल्प प्रदर्शित किया जिससे उद्योग में हमारे टिके रहने की फिर से पुष्टि हुई.

बिरला कॉर्पोरेशन ने फ्लाई ऐश के परिवहन के लिए दूसरा टैंक वैगन रैक शामिल किया

कोलकाता, एजेंसी। बिरला कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने मध्य प्रदेश में अपने परिचालन में फ्लाई ऐश के परिवहन के लिए दूसरा बीटीएपी (एल्यूमिना पाउडर के लिए बोगी टैंक वैगन) रैक शामिल किया है। यह कंपनी के संचालन की दक्षता में सुधार करते हुए कंपनी की सस्टेनेबिलिटी पहल से जुड़ा है, जो कि सभी हितधारकों के लिए सस्टेनेबल संचालन के लिए एक निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बिरला कॉर्पोरेशन देश का एकमात्र आर्गेनाइजेशन है जिसके पास फ्लाई ऐश परिवहन के लिए बीटीएपी अनलोडिंग सुविधा है।

प्रत्येक बीटीएपी रैक में लगभग 3,000 टन फ्लाई ऐश परिवहन करने की क्षमता होती है जो प्रति माह 600 से अधिक रोड़ बल्कर गतिविधियों को अंजाम देती है, जिससे न केवल प्रदूषण कम होता है बल्कि ईंधन-कुशल तरीके से फ्लाई ऐश का परिवहन भी होता है।

फ्लाई ऐश को एक पर्यावरणीय खतरा माना जाता है, लेकिन जब पोर्टलैंड सीमेंट के साथ मिक्स के तौर पर एक पूरक

सीमेंट सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता है, तो यह हाइड्रोलिक या पॉजोलानिक एक्टिविटी या दोनों के माध्यम से कठोर कंक्रीट की क्वालिटीज में योगदान देता है। इस तरह यह कंक्रीट के कार्बन फुटप्रिंट को कम कर सकता है, जबकि इसकी ताकत और कार्यकुशलता को बढ़ा सकता है। आमतौर पर सीमेंट फैक्ट्रियों में फ्लाई ऐश को खुली जगह पर फेंक दिया जाता है। पर्यावरणीय खतरों को कम करने के लिए मध्य प्रदेश में कंपनी के मैहर यूनिट में एक समर्पित अनलोडिंग सुविधा स्थापित की गई है, जो भारत में अपनी तरह की पहली है। यह कंपनी के एसडीजी लक्ष्यों के साथ-साथ दिल और ताकत के उसके वर्ककल्चर को ध्यान में रखते हुए है।

बिरला कॉर्पोरेशन लिमिटेड, एमपी बिरला समूह की प्रमुख कंपनी है। 1919 में बिरला जूट मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लिमिटेड के रूप में शामिल, इसे श्री एमपी बिरला द्वारा आकार दिया गया था। कंपनी के हित सीमेंट और जूट उत्पादों में हैं। इसकी बिरला जूट मिल किसी भारतीय उद्यमी द्वारा शुरू की गई पहली जूट मिल है। कंपनी और उसकी सहायक कंपनी आरसीसीपीएल प्राइवेट लिमिटेड के देश भर में आठ स्थानों पर 11 सीमेंट प्लांट हैं, जिनकी वार्षिक स्थापित क्षमता 20 मिलियन टन है। कंपनी एमपी बिरला सीमेंट ब्रांड के तहत सीमेंट उत्पादों की एक सीरीज का उत्पादन करती है, जो विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के साथ-साथ उपभोक्ता क्षेत्रों के अनुकूल है। कंपनी कंस्ट्रक्शन कैमिकल और वॉल पुट्टी भी बेचती है।

Government of Jharkhand
Urban Development & Housing Department
Office of the Gumla Nagar Parishad, Gumla

Very Short Term E-procurement Tender Notice

NIT No.- GML/NP/04/2023-24 (Urban Transportation & Civic Amenities)

Sl No/ Group No	Name of work	BOQ value of work in Rs	Earnest Money	Cost of Documents Online (In Rs) Non-Refundable	Period of completion in months
1	Construction of Pcc road and others work in Ward No : 13 from Puliya to Ashok Pandey house.	2193384.00	43900.00	5000.00	01 Month
2	Construction of RCC Drain and construction of Slab and other work in Ward no 14 from Nasim Khan house to Late Saukat Ali house.	1478741.00	29600.00	5000.00	01 Month
3	Construction of Drain and other works in the campus of Lalit Oraon Bus Stand near Newley constructed Rest House in Ward No 15 .	1332475.00	26700.00	5000.00	01 Month
4	Construction of PCC road and others work in Ward No 17 from Harilal Sahu house to Shambhu house and Asha house to Oraon G house.	1253467.00	25100.00	5000.00	01 Month
5	Construction of RCC Drain and Others work in ward no 18 from Jagarnath Soni house to late Medha Ashur house.	1648470.00	33000.00	5000.00	01 Month
6	Repairing of Drain in Ward No 19 from Ramesh Sharma house to Niraj Soni house.	1911432.00	38300.00	5000.00	01 Month
7	Repairing of Drain in Ward No 19 from Bairagi Oraon Ex MLA house/Shop to Royal Dhaba.	1062802.00	21300.00	5000.00	01 Month
8	Repairing of Drain and Construction of Slab and others work in Ward no 20 from Ramesh Chini house to Dharti Dhan shop via Raghav Wakil house, From Rajan Gupta house to Umakant kasera house, Sachidanand house to Jitu Bhokta and Mohan Gupta House to Rajesh Gupta House.	1108779.00	22200.00	5000.00	01 Month
9	Construction of PCC road and others Work in Ward No 21 from Gopal Chobe house to Santu Das house.	1154922.00	23100.00	5000.00	01 Month
10	Repairing of Drain in Ward no 22 From Devcharan Gope house to nadi .	1856744.00	37200.00	5000.00	01 Month
11	Construction of PCC Road and Drain in Ward No 22 from Manju Oraon house to Jaypal Oraon house.	1045690.00	21000.00	5000.00	01 Month
		16046902.00			

1	Procurement Officer	Administrator, Nagar Parishad, Gumla.
2	Date of tender published on website	16.02.2024
3	Place of opening tender	Nagar Parishad, Gumla.
4	Availability of tender online biding	16.02.2024 (at 11:00 AM) to 22.02.2024 (at 05:00 PM)
5	Date & time of opening bid	23.02.2024 (at 05:00 PM)
6	Mode of Submission of bid	E-tendering (http://jharkhandtenders.gov.in)

नोट :-
(1) केवल ई–निविदा स्वीकार की जायेगी।
(2) निविदा की शर्तें व अन्य जानकारी http://jharkhandtenders.gov.in एवं कार्यालय नोटिस बोर्ड पर देखा जा सकता है।

प्रशासक
PR 318624 (District) 23-24 (D) गुमला नगर परिषद्, गुमला।

GOVERNMENT OF JHARKHAND
OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
NATIONAL HIGHWAYS DIVISION, GUMLA.
E-mail: eenhgumlajhr@gmail.com / eenhgumla-jhr@nic.in

(NIT)

TENDER NOTICE No: NH/GUMLA/03/2023-24Dated:-10/02/2024

Application in the prescribed format form eligible contractors for Notice inviting tender F2 mode are invited for following project in one bid systems.

Sl. No.	Name of Work	Approximate value of work (Rs)	Bid Security/EMD Amount (Rs)	Cost Of Document (Rs)	Time of Completion	Category of Bidder
1.	Floor Protection of Bridge at KM 7/1 of NH-78 (New NH-43) in the year 2023-24 under contingency provision of the work. "Strengthening from km 97.00 to 136.00 and one time improvement from km 88.00 to 97.00 on NH-23 (New NH-43) under Gumla in the state of Jharkhand on EPC mode [Job No. NH-23/AP-JHR-2021-22-306]".	**18,11,382.00 F2 Form**	**36, 500.00**	**5,000/-**	**2 Months**	**3**

Important Dates.

1.	Date of Issue of Notice Inviting Tender	**10.02.2024**
2.	Period of Sale of Bid Document	From 19. 02.2024 up to 10:00 HRS to 04.03.2024 upto 17:00 HRS Through official portal of: [https:// eprocure.gov.in]
3	BID Due Date	Date 04.03.2024 Up to 17:00 HRS Through official portal of: [https:// eprocure.gov.in]
4.	Last date of physical submission of bid security, POA and other documents in original	06.03.2024, up to 15.00 HRS
5.	Time and Date of Opening Bid	Date 06.03.2024 up to 15:30 HRS Through official portal of: [https:// eprocure.gov.in]
6.	Place of Opening of Bids	Office of the Chief Engineer, NH Wing, Jharkhand, Ranchi Through official portal of: [https:// eprocure.gov.in/]
7.	Bid Validity	90 Days from the Bid Due Date.
8.	Officer Inviting Bids	Executive Engineer NH Division, Gumla.

(a). Bid Document Fee (Cost of NIT document) which Rs. 5,000/-(Rupees Five thousand only) shall be paid only through NTRP (Non –Tax Receipt Portal) Portal https://bharatkosh.gov.in to Pay & Accounts Officer (PAO: 034756 in "Regional Pay Accounts Officer [RPAO(NH), Kolkata code No. 034756 and DDO Code No. 202122 Purpose: Sale of Tender Documents.]. The GST of Rs. 1800/- (Rs. One Thousand Eight hundred only) applicable on the sale of tender document shall be submitted in the form of Demand Draft favoring "Regional Pay & Accounts Officer (NH), MORTH, Kolkata", payable at Kolkata.

(b). Bid Security "Bid Security of Rs. **36,500.00** (Rupees Thirty Six Thousand Five Hundred only) in the form Original Band Guarantee in the format as mentioned in NIT from a scheduled Bank in favor of Executive Engineer, National Highway Division, Gumla. Bid Security in the form of B.G. only will have to be deposited in any office of the (i) Executive Engineer, National Highway Division, Gumla (ii) Superintending Engineer, National Highway Circle, Ranchi (iii) Chief Engineer, National Highway Wing, Ranchi, Jharkhand Ranchi on before 17:00 HRS on **04.03.2024** failing which the bid will be rejected.

(c). Tender of work will be opened at office of the Chief Engineer, N.H. Wing, Jharkhand, Ranchi on dated **06.03.2024 at 3:00 PM**. Bidders are requested to submit the evaluation statement as per sequence and in order to tender documents & submit one set of Hard Copy of Documents office of the Chief Engineer, NH Wing, RCD, Jharkhand, Ranchi-834004.

(d). Bidders please note that 'Bid Security' has to be submitted in prescribed Performa only.For further details visit us on above mentioned web site. Any Amendment/Corrigendum will be published on portal of https://eprocure.gov.in/eprocure/app only. Bidders will be bound to follow all Amendment/Corrigendum and requested to check portalhttps://eprocure.gov.in/eprocure/app on regular basis before the date and time of Submission.

Sd/-
Executive Engineer
PR 318567 (Road) 23-24 (D) **National Highway Division, Gumla**

एक्सकवर7 लॉन्च किया; मिलिट्री-ग्रेड की ड्यूरेबिलिटी, काम करने की निरंतरता और उत्पादकता का बेजोड़

गुरुग्राम, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने आज अपने पहले एंटरप्राइज केंद्रित स्मार्टफोन - गैलेक्सी एक्सकवर7 को लॉन्च किया। यह एक जबरदस्त और मजबूत डिवाइस है, जो असाधारण इस्तेमाल योग्य क्षमता से लैस है। बेहद प्रतिकूल स्थितियों में काम करने के लिहाज से इंजीनियर किए गए गैलेक्सी एक्सकवर7 का उद्देश्य पेशेवरों के जीवन को आसान बनाना, तेज कनेक्टिविटी, व काम करने की निरंतरता देना और बाहरी कारकों की वजह से पैदा होने वाली रुकावटों के जोखिम को कम करना है, ताकि वे तेज गति और स्मार्ट तरीके से काम कर सकें।

गैलेक्सी एक्सकवर7 5जी कनेक्टिविटी, अपग्रेडेड मोबाइल प्रोसेसर परफॉर्मेंस और बढ़ी हुई मेमोरी के साथ मजबूत मोबिलिटी प्रदान करेगा। साथ ही गैलेक्सी एक्सकवर7 सिंगल और मल्टीपल बारकोड/क्यूआर कोड स्कैनिंग और विस्तारित डिस्प्ले आकार और रिजॉल्यूशन के लिए ऑप्टिमाइज्ड नए शक्तिशाली रियर कैमरे के साथ आता है, जो यूजर्स को विभिन्न सेटिंग्स में काम करने की क्षमता प्रदान करता है। किसी भी सेटिंग में सुविधाजनक रिचार्जिंग के लिए आसान पीओजीओ चार्जिंग पिन, और दस्ताने पहनकर इस्तेमाल किए जाने की क्षमता से युक्त टच सेंसेटिविटी गैलेक्सी एक्सकवर7 को एक विश्वसनीय और उपयोग में आसान डिवाइस

बनाती है। अपनी ड्यूरैबिलिटी और अत्याधुनिक विशेषताओं के लिए मशहूर, गैलेक्सी एक्सकवर7 निरंतरता और बढ़ी हुई उत्पादकता सुनिश्चित करता है जो यूजर्स को दुनिया में कहीं से भी काम करने की सुविधा देता है। यह स्मार्टफोन सीरीज इमर्सिव, वाइड-स्क्रीन डिस्प्ले के साथ आती है, जो विजुअल क्लैरिटी को बढ़ाती है, जिसमें यूजर्स मैदानी इलाकों में भी अधिक कुशलता से काम कर सकते हैं। गैलेक्सी एक्सकवर7 में नॉक्स वॉल्ट इन उपकरणों पर लॉक स्क्रीन जानकारी जैसे पिन कोड, पासवर्ड और पैटर्न समेत सर्वाधिक महत्वपूर्ण डेटा को सुरक्षित रखने में मदद करता है।

सैमसंग इंडिया, उद्यम व्यवसाय, के वाइस प्रेसिडेंट आकाश सक्सेना ने कहा, सैमसंग में हमारा उद्देश्य अपने प्रॉडक्ट्स की पेशकश के माध्यम से यूजर्स को सुविधा और ड्यूरैबिलिटी प्रदान करना है। हमने गैलेक्सी एक्सकवर7 सीरीज को दो वैरिएंट्स, गैलेक्सी एक्सकवर 7 एंटरप्राइज एडिशन और स्टैंडर्ड एडिशन में पेश किया है। दोनों डिवाइसेज को अत्याधुनिक तकनीकी के साथ तैयार किया गया है जो उन्हें बेहद शक्तिशाली और कठिन मौसम में काम करने वाला बनाता है। नॉक्स संचालित, हम अपने कॉर्पोरेट ग्राहकों के लिए भारत में निर्मित इन क्रांतिकारी उत्पादों को लाने के लिए उत्साहित हैं। हमें उम्मीद है कि यह कर्मचारी उत्पादकता को बढ़ाएंगा और डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करेगा। मजबूत केस और फोर्टिफाइड ग्लास डिस्प्ले के साथ, गैलेक्सी एक्सकवर7 सैन्य-ग्रेड की मजबूती मानकों का पालन करता है। यह अत्यधिक तापमान और बारिश सहित गंभीर मौसम की स्थिति का सामना करने में भी पूरी तरह से सक्षम है।

आईपी68-रेटेड1 स्मार्टफोन न केवल पानी और धूल-प्रतिरोधी है, बल्कि 1.5 मीटर3 तक की बूंदों का सामना करने के लिए भी बनाया गया है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि किसी भी तरह की हैंडलिंग या दुर्घटना से संचालन प्रभावित न हो।

तीसरी तिमाही में एयरटेल पेमेंट्स बैंक का राजस्व 47 प्रतिशत बढ़कर 469 करोड़ रु. तक पहुँचा

मुंबई, एजेंसी। बैंकिंग लाइसेंस के साथ विशाल स्तर पर काम करने वाले भारत के एकमात्र लाभदायक मल्टी-सेगमेंट फिनटेक, एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने आज 31 दिसंबर, 2023 को समाप्त हुई तीसरी तिमाही के लिए अपने कॉन्सोलिडेटेड परिणाम जारी किए। साल-दर-साल 47 प्रतिशत ज्यादा, 469 करोड़ रु. के राजस्व, एवं साल-दर-साल 120.0 प्रतिशत ज़्यादा, 11 करोड़ रु. के शुद्ध लाभ के साथ बैंक मज़बूत वृद्धि करता रहा। बैंक के मासिक लेन-देन करने वाले उपयोगकर्ता बढ़कर 5.9 करोड़ हो गए, जिससे ग्राहक जमा राशि को बढ़ावा मिला, जो 50 प्रतिशत की साल-दर-साल वृद्धि के साथ इस तिमाही में 2,339 करोड़ रु. रहा। बैंक का वार्षिक सकल मर्चैंडाइज़ मूल्य (जीएमवी) 2,628 अरब रुपये से अधिक रहा। डेबिट कार्ड और बचत बैंक खाते सहित नए लॉन्च किए गए उत्पादों की मदद से बैंक की मुफ्त आय में भी वृद्धि हुई। इन परिणामों के बारे में एयरटेल पेमेंट्स बैंक के एमडी और सीईओ, अनुब्रत बिस्वास ने कहा, बचत बैंक खाते, डेबिट कार्ड और फ़ास्टैग जैसी अन्य पेशकशों के साथ हमारे सुरक्षित डिजिटल उत्पादों की ग्राहकों के बीच बढ़ती मांग ह्यद्द हमने एक और तिमाही में लगातार और प्रतिस्पर्धी विकास किया है।

NEWS IN Gallery

तमिलनाडु में एनआईए ने 20 स्थानों पर मारा छापा

चेन्नई : राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की अलग-अलग टीमों ने शनिवार को राज्य के 20 स्थानों पर तलाशी अभियान चलाया। आतंकी संगठन आईएसआईएस से संपर्कों के संदेह में तिरुचिरापल्ली, मदुरै, कोयंबटूर जिले में यह कार्रवाई की गई है। एनआईए अधिकारियों ने कोयंबटूर शहर में 11 लोगों के आवासों और ओथकलमंडपम में एक घर पर तलाशी ली। उल्लेखनीय है कि अक्टूबर 2022 में कोयंबटूर शहर के कोट्टईमेडु में संगमेश्वर मंदिर के सामने हुए कार विस्फोट के बाद एनआईए अधिकारियों को पता चला कि इस्लामिक क्षेत्रीय अध्ययन केंद्रों का इस्तेमाल भोले-भाले युवाओं को कट्टरपंथी बनाने के लिए किया गया था और पिछले साल मामला दर्ज किया गया था। एनआईए ने 16 सितंबर, 2023 को कोयंबटूर, चेन्नई और हैदराबाद सहित 31 स्थानों पर एक साथ तलाशी ली थी। इस दौरान मोबाइल फोन, लैपटॉप और हार्ड डिस्क जब्त किए गए थे। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की गहनता से जांच में पता चला कि कोयंबटूर के युवाओं के एक वर्ग का आईएसआईएस समर्थकों से संबंध थे।

महाराष्ट्र में राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये : उद्धव ठाकरे

मुंबई : शिवसेना-उद्धव बालासाहेब ठाकरे (यूबीटी) के प्रमुख उद्धव ठाकरे ने राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति को लेकर मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार पर शनिवार को निशाना साधा और उसे बर्खास्त किए जाने की मांग की। ठाकरे ने एक संवाददाता सम्मेलन में मांग की कि राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये और नये सिरे से चुनाव कराये जायें। ठाकरे ने दहिसर में उनकी पार्टी के एक नेता की गोली मारकर हत्या किये जाने की घटना के मद्देनजर राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति का हवाला देते हुए कहा कि हम महाराष्ट्र सरकार को बर्खास्त करने की मांग करते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार पर गुंडों को बचाने का भी आरोप लगाया। शिवसेना (यूबीटी) नेता विनोद घोसालकर के बेटे एवं पूर्व पार्षद अभिषेक घोसालकर (40) की बृहस्पतिवार शाम उत्तरी उपनगर बोरीवली (पश्चिम) में एक सामाजिक कार्यकर्ता ने फेसबुक लाइव सत्र के दौरान गोली मारकर हत्या कर दी थी।

समीर वानखेड़े के खिलाफ ईडी का एक्शन

मुंबई : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मुंबई के नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) के पूर्व जोनल डायरेक्टर समीर वानखेड़े के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज किया है। इस बीच वानखेड़े के अलावा तीन अतिरिक्त एनसीबी अधिकारियों को चल रही जांच के तहत पूछताछ के लिए बुलाया गया है। सीबीआई ने मई 2023 में समीर वानखेड़े और चार अन्य लोगों के खिलाफ ड्रग्स मामले में आर्यन खान को फंसाने के एवज में कथित रूप से 25 करोड़ रुपये की रिश्वत मांगने के आरोप में एफआईआर दर्ज की थी। इन सभी लोगों पर आरोप था कि इन्होंने रिश्वत की पहली किस्त के तौर पर 50 लाख रुपये लिये थे।

धर्मेंद्र प्रधान ने नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का किया शुभारंभ

केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी की लॉन्च

स्वदेश समाचार सेवा

नई दिल्ली : केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को प्रगति मैदान के भारत मंडपम में 52वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला (एनडीडब्ल्यूबीएफ) का शुभारंभ किया। इस बार मेले की थीम 'बहुभाषी भारतः एक जीवंत परंपरा' है। उन्होंने इस मौके पर नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी का भी उद्घाटन किया। केंद्रीय मंत्री प्रधान ने इस मौके पर कहा कि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के 52वें संस्करण के शुभारंभ की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। उन्होंने कहा कि भारत की भाषाई विविधता और वैश्विक साहित्यिक परंपराओं का जश्न मनाते हुए, एनडीडब्ल्यूबीएफ 2024 साहित्य, विविध संस्कृतियों, कलात्मक अभिव्यक्तियों और ज्ञान का एक सामंजस्यपूर्ण सम्मेलन है।
इस बार ई-लर्निंग के प्रति उत्साह को देखते हुए नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी की शुरुआत की गयी है। नेशनल ई-लाइब्रेरी विभिन्न प्रकार की गैर-शैक्षणिक पुस्तकों तक पहुंचने के लिए अपनी तरह की पहली डिजिटल लाइब्रेरी है। बच्चों और किशोरों के लिए पुस्तकें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण कथन, जब नागरिक पढ़ते हैं, तो देश आगे बढ़ता है, पर आधारित हैं। राष्ट्रीय ई-लाइब्रेरी छात्रों के बीच जीवन भर पढ़ने की आदत को बढ़ावा देगी। छात्र अपनी पसंद की भाषा में विभिन्न प्रकार के साहित्य का अध्ययन कर सकेंगे। यह भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं के साहित्य को उजागर करेगी और वसुधैव कुटुंबकम को साकार करने के इरादे से सांस्कृतिक जागरूकता, देशभक्ति और सहानुभूति के भाव को बढ़ावा देगी। राष्ट्रीय ई-लाइब्रेरी में किताबें युवा भारतीयों में गर्व की भावना विकसित करने के लिए भारत के इतिहास, संस्कृति, वैज्ञानिक और अन्य उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करेंगी।

ई-लाइब्रेरी में अंग्रेजी के अलावा 23 भाषाओं की किताबें होंगी शामिल

राष्ट्रीय ई-लाइब्रेरी में अंग्रेजी के अलावा भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची के तहत सभी 23 भाषाओं की किताबें शामिल होंगी। आज तक 30 से अधिक प्रतिष्ठित प्रकाशक मंच से जुड़ चुके हैं, और 1000 से अधिक पुस्तकें अपलोड की जा चुकी हैं। नौ दिवसीय पुस्तक मेले में एक हजार से अधिक प्रकाशक हिस्सा ले रहे हैं। 40 से ज्यादा देशों के प्रकाशक एवं प्रतिनिधि विश्व पुस्तक मेले में हैं। यह बी2सी स्तर का सबसे बड़ा पुस्तक मेला है। विश्व की लगभग सभी भाषाओं के प्रतिनिधि यहां पाठकों के लिए उपलब्ध हैं। प्रगति मैदान के हॉल संख्या 1 से 5 में आयोजित इस पुस्तक मेले में पाठकों को हॉल 1 में विज्ञान, मानविकी और दर्शन की पुस्तकें हैं।

जम्मू-कश्मीर में 15 स्थानों पर एनआईए की छापेमारी

एजेंसी

जम्मू : राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने आतंकी फंडिंग मामले में गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम के तहत गैरकानूनी संगठन जमात-ए-इस्लामी (जेईआई) पर कार्रवाई के तहत शनिवार को जम्मू-कश्मीर में 15 स्थानों पर छापेमारी की। एक आधिकारिक बयान में बताया गया है कि एनआईए की टीमों ने श्रीनगर में पांच, बडगाम में तीन, कुलगाम में दो, अनंतनाग में एक और जम्मू में चार स्थानों पर विभिन्न संदिग्धों के परिसरों पर छापेमारी की। जम्मू-कश्मीर में जेईआई और उससे संबंधित ट्रस्टों की गतिविधियों से जुड़े आपत्तिजनक दस्तावेज और डिजिटल उपकरण व्यापक तलाशी के दौरान जब्त किए गए तथा 20 लाख रुपये से अधिक नकदी भी बरामद हुई। 5 फरवरी 2021 को दर्ज मामले में एनआईए की जांच से अब तक पता चला है कि जेईआई और उसके सदस्यों ने फरवरी 2019 में संगठन पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद भी जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी और अलगाववादी गतिविधियों को बढ़ावा देना जारी रखा। एनआईए ने कहा प्रतिबंधित संगठन के संचालक भारत और विदेशों से दान के माध्यम से धन इकट्ठा कर रहे थे। जेईआई द्वारा जुटाये गये धन को जेईआई कैडरों के संगठित नेटवर्क के माध्यम से अन्य प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों हिज्ब-उल-मुजाहिदीन, लश्कर-ए-तैयबा आदि को भी भेजा जा रहा था। जेईआई अपनी नापाक और अलगाववादी गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए जम्मू-कश्मीर में युवाओं को बरगलाकर नये सदस्यों की भर्ती में लगा हुआ था। एनआईए ने पहले इस मामले में चार आरोपितों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था, जिसमें जांच जारी है।

राम मंदिर पर चली संघर्ष से भक्ति की यात्रा पूरे देश को आगे ले जाने वाली है : शाह

एजेंसी

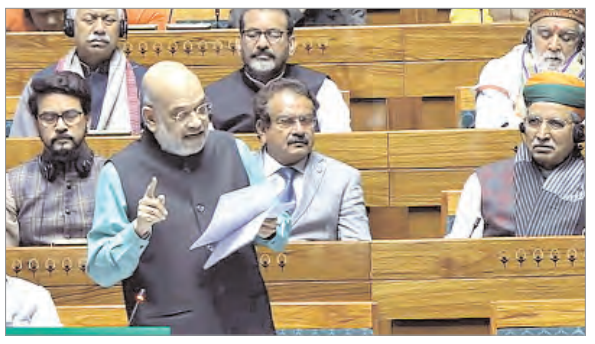

नई दिल्ली : गृहमंत्री अमित शाह ने शनिवार को लोकसभा में कहा कि राम मंदिर दुनिया का एक मात्र ऐसा आंदोलन है जहां बहुसंख्यकों ने धैर्य रखते हुए संवैधानिक प्रावधानों के तहत अपना संघर्ष पूरा किया। उन्होंने कहा कि संघर्ष चला तो देश में जय श्रीराम के नारे लगे और जब मंदिर बन गया तो जय सीयाराम के नारे लगे। राम मंदिर पर चली संघर्ष से भक्ति यह यात्रा देश को आगे ले जाने वाली है।
केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि मोदी सरकार ने न्यायसंगत तरीके से राम मंदिर निर्माण का कार्य पूर्ण कर अपना वादा निभाया है। मोदी सरकार जो कहती है उसे करके दिखाती है। 22 जनवरी का दिन करोड़ों भक्तों की आशा, आकांक्षा और सिद्धि का दिन बन गया। शाह ने शनिवार को लोकसभा में राम मंदिर निर्माण पर आयोजित चर्चा के दौरान कहा कि राम मंदिर आंदोलन से अनभिज्ञ होकर कोई भी इस देश के इतिहास को पढ़ ही नहीं सकता। वर्ष 1528 से हर पीढ़ी ने इस आंदोलन को किसी न किसी रूप में देखा है। ये मामला लंबे समय तक अटका रहा, भटका रहा। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के समय में ही इस स्वप्न को सिद्ध होना था और आज देश ये सिद्ध होता देख रहा है। शाह ने कहा कि वर्ष 1990 में जब ये आंदोलन ने गति पकड़ी उससे पहले से ही ये भाजपा का देश के लोगों से वादा था। हमने पालमपुर कार्यकारिणी में प्रस्ताव पारित करके कहा था कि राम मंदिर निर्माण को धर्म के साथ नहीं जोड़ना चाहिए, ये देश की चेतना के पुनर्जागरण का आंदोलन है। इसलिए हम राम जन्मभूमि को कानूनी रूप से मुक्त कराकर वहां पर राम मंदिर की स्थापना करेंगे। अनेक राजाओं, संतों, निहंगों, अलग-अलग संगठनों और कानून विशेषज्ञों ने इस लड़ाई में योगदान दिया है। शाह ने कहा कि वह आज 1528 से 22 जनवरी, 2024 तक इस लड़ाई में भाग लेने वाले सभी योद्धाओं को विनम्रता के साथ स्मरण करते हुए उन्हें नमन करते हैं।

यूएई में पहले हिन्दू मंदिर का उद्घाटन करेंगे पीएम मोदी

- दो दिवयीय यात्रा पर जायेंगे यूएई

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी 13 से 14 फरवरी तक संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की आधिकारिक यात्रा करेंगे जहां वे अबू धाबी में पहले हिंदू मंदिर बीएपीएस मंदिर का उद्घाटन करेंगे। वे विश्व सरकार शिखर सम्मेलन 2024 में सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लेंगे और शिखर सम्मेलन में एक विशेष मुख्य भाषण देंगे। विदेश मंत्रालय ने शनिवार को उनकी यात्रा की जानकारी दी। मंत्रालय के अनुसार, 2015 के बाद से यह प्रधान मंत्री मोदी की संयुक्त अरब अमीरात की सातवीं यात्रा और पिछले आठ महीनों में तीसरी यात्रा होगी। यात्रा के दौरान प्रधान मंत्री मोदी संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के साथ द्विपक्षीय बैठकें करेंगे। मंत्रालय ने कहा कि दोनों नेता देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को और गहरा, विस्तारित और मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा करेंगे और आपसी हित के क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। प्रधानमंत्री यूएई के उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री और रक्षा मंत्री शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम से भी मुलाकात करेंगे। वह अबू धाबी के जायद स्पोर्ट्स सिटी में एक कार्यक्रम में संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय समुदाय को भी संबोधित करेंगे।
उल्लेखनीय है कि लगभग 35 लाख मजबूत और जीवंत भारतीय समुदाय संयुक्त अरब अमीरात में सबसे बड़ा प्रवासी समूह है। मेजबान देश के विकास में उनका सकारात्मक और सराहनीय योगदान यूएई के साथ दोनों देशो के बीच उत्कृष्ट द्विपक्षीय जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण आधार रहा है। यह मंदिर 27 एकड़ में फैला है और इसकी ऊंचाई 108 फीट है। इसके निर्माण में 18 लाख ईंटों का इस्तेमाल किया गया है। दुनिया भर के अन्य सभी बीएपीएस मंदिरों की तरह यह मंदिर हर किसी के लिए खुला है। पारंपरिक नागर शैली में बना यह मंदिर सार्वभौमिक मूल्यों, विभिन्न संस्कृतियों के सद्भाव की कहानियों, अवतारों और हिंदू आध्यात्मिक नेताओं का प्रतिनिधित्व करता है।
मंदिर के बाहरी हिस्से में राजस्थान के गुलाबी बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया है। मंदिर के आंतरिक भाग में इटालियन मार्बल का उपयोग किया गया है। मंदिर में केंद्रीय गुंबद - 'सद्भाव का गुंबद' और 'शांति का गुंबद' हैं। सात शिखर, 12 समरन शिखर जिसको घुम्मट कहते हैं। सात शिखर संयुक्त अरब अमीरात के सात अमीरातों के प्रतिनिधि है। इसमें 402 खंभे, 25,000 पत्थर के टुकड़े, मंदिर तक जाने वाले रास्ते के चारों ओर 96 घंटियां और गौमुख स्थापित हैं। इसमें नैनो टाइल्स का इस्तेमाल किया गया है, जो गर्मी की मौसम में भी पर्यटकों के लिए चलने में आरामदायक होगी।

राज्यसभा में विपक्षी सदस्यों पर धनखड़ ने जतायी नाराजगी

एजेंसी

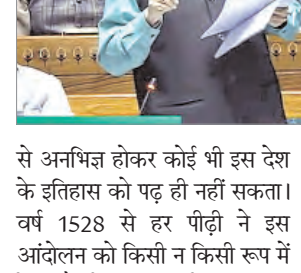

नई दिल्ली : राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि सदन में जिस तरह से रालोद सदस्य जयंत चौधरी को कांग्रेस के कुछ सदस्यों ने बोलने से रोका वह कतई सही नहीं है। यह बेहद दुखद है कि जब जयंत पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह पर बोल रहे थे तभी नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे खड़े हो गये और जयंत को बोलने से रोकने की कोशिश की और आसन पर भी सवाल खड़े किये। धनखड़ ने शनिवार को राज्यसभा में सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि वह सदन में संसदीय आचरण करें और राजनेताओं का दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सम्मान करें। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज वह आसन पर थे, सदन में चौधरी चरण सिंह पर जयंत को बोलने से रोका गया। आज वह इतने आहत हैं कि उनके मन में पद त्याग देने का भी विचार आया। चौधरी चरण सिंह को किसी दल से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। वह देश के किसानों, युवाओं और गरीबों के मसीहा थे।

पाकिस्तान की साजिश फिर हुई नाकाम बीएसएफ ने फायरिंग कर गिराया ड्रोन

एजेंसी

नई दिल्ली : पड़ोसी देश पाकिस्तानी अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। वह सीमा पार से लगातार घुसपैठ की कोशिश करता रहता है। हर बार सीमा सुरक्षा बल उसको मुंह तोड़ जवाब दे रहा है। बीएसएफ ने एक बार फिर ने गुरदासपुर सीमा पर एक पाकिस्तानी ड्रोन को मार गिराया। बीएसएफ के प्रवक्ता ने शनिवार को कहा कि शुक्रवार की रात के समय, ड्यूटी पर तैनात सतर्क बीएसएफ जवानों ने गुरदासपुर जिले के गांव रॉसी के पास सीमा पर एक संदिग्ध ड्रोन की गतिविधि को रोका। सैनिकों ने त्वरित प्रतिक्रिया दिखाते हुए उस पर गोलीबारी की और उसे सफलतापूर्वक मार गिराया। यह पहली बार नहीं है इससे पहले भी कई बार पाकिस्तान ऐसी हरकते कर चुका है। बीएसएफ ने एक बयान जारी कर बताया कि फायरिंग के बाद क्षतिग्रस्त ड्रोन नियंत्रण खोकर एक खेत में गिर गया। सेना प्रवक्ता ने बताया कि

धर्मेंद्र ने 88 साल की उम्र में उठाया बड़ा कदम, फैंस हैरान

बॉलीवुड के सीनियर एक्टर धर्मेंद्र सोशल मीडिया पर एक्टिव रहते हैं। वह सोशल मीडिया के जरिए भी फैंस से संवाद करते हैं। 88 साल की उम्र में भी धर्मेंद्र फिल्मों में काम कर रहे हैं। बॉलीवुड में डेब्यू के 64 साल बाद धर्मेंद्र ने एक बड़ा फैसला लिया है। धर्मेंद्र ने अपना ऑनस्क्रीन नाम बदल लिया है। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' में धर्मेंद्र एक खास किरदार निभा रहे हैं। फिल्म 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' में अभिनेता शाहिद कपूर और कृति सेनन मुख्य भूमिका में हैं। इस फिल्म में धर्मेंद्र शाहिद कपूर के दादा की भूमिका में नजर आ रहे हैं। 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' के जरिये धर्मेंद्र ने अपने फैंस को सरप्राइज दिया है। धर्मेंद्र ने अपना ऑनस्क्रीन नाम बदल लिया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले 64 सालों से धर्मेंद्र के नाम पर क्रेडिट दिया जा रहा है लेकिन इस फिल्म में उन्हें धर्मेंद्र सिंह देओल के रूप में श्रेय दिया गया है। धर्मेंद्र का नाम धरम सिंह देयोल है। हालांकि, फिल्म इंडस्ट्री में उन्होंने अपना ऑनस्क्रीन नाम बदलकर धर्मेंद्र रख लिया। उन्होंने कभी भी अपना पूरा नाम इस्तेमाल नहीं किया। वह हमेशा धर्मेंद्र नाम का इस्तेमाल करते थे।

दर्शकों के लिए सतीश कौशिक की आखिरी फिल्म का ट्रेलर रिलीज

कुछ महीने पहले अभिनेता सतीश कौशिक का निधन हो गया। इस बीच फिल्म 'कागज 2' सतीश कौशिक की आखिरी फिल्म बन गई है। फिल्म के ट्रेलर में लड़की की दिल दहला देने वाली मौत का कारण दिखाया गया है। एक्टर अनुपम खेर ने इस फिल्म का ट्रेलर शेयर किया है। अनुपम खेर ने फिल्म का ट्रेलर शेयर कर कौशिक को श्रद्धांजलि दी है। ट्रेलर देखने के बाद समझ आता है कि राजनीतिक विवाद में अगर किसी की मौत भी हो जाए तो इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। निजी रैलियों और चुनाव प्रचार में हर किसी की दिलचस्पी होती है। कैसे एक पिता अपनी बेटी के लिए लड़ता है। इसमें दिखाया गया है कि वह कोर्ट में जाकर लड़की के लिए गुहार लगाता है। ये फिल्म बेहद गंभीर मुद्दे पर बनी है। फिल्म में अनुपम खेर सतीश कौशल के वकील बने हैं। उन्हीं की वजह से फिल्म में क्लाइमेक्स क्रिएट होता है। दर्शकों के लिए यह देखना दिलचस्प होगा कि अनुपम खेर जज के सामने बहस करके अपने मुवक्किल को कैसे न्याय दिलाते हैं। इस फिल्म में दर्शन कुमार मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। यह सतीश कौशल की आखिरी फिल्म होगी। कौशिक का 09 मार्च, 2023 को निधन हो गया था। उस वक्त उनकी उम्र 67 साल थी।

बॉक्स ऑफिस पर 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' को मिला अच्छा रिस्पॉन्स

शाहिद कपूर और कृति सेनन की फिल्म तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया शुक्रवार, 9 फरवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। फिल्म ने पहले दिन बॉक्स ऑफिस पर अच्छी शुरुआत की है। ऐसे में अनुमान लगाया जा रहा है कि वैलेंटाइन वीक में आई ये रोमांटिक ड्रामा फिल्म वीकेंड पर अच्छी कमाई कर सकती है। फिल्म ने पहले दिन 6.5 करोड़ रुपये की कमाई की है। फिल्म की कहानी यह है कि शाहिद कपूर को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग करके बनाए गए रोबोट से प्यार हो जाता है। रोबोट की भूमिका कृति सेनन ने निभाई है। उनके किरदार का नाम सिफरा है। शाहिद कपूर के किरदार का नाम आर्यन अग्निहोत्री है और वह एक इंजीनियर हैं। आर्यन को न सिर्फ रोबोट से प्यार हो जाता है बल्कि वह उससे शादी भी कर लेता है। सैकनिल्क की रिपोर्ट के मुताबिक यह फिल्म लगभग 50 करोड़ रुपये के बजट पर बनाई गई है। फिल्म ने पहले दिन अच्छी शुरूआत की है, इसलिए ऐसा लग रहा है कि वीकेंड पर फिल्म बॉक्स ऑफिस कलेक्शन में इजाफा करेगा।

उत्तराखंड

हल्द्वानी में हिंसा के बाद नियंत्रण में है स्थिति, मजिस्ट्रेटी जांच के आदेश

नैनीताल पुलिस ने पांच उपद्रवियों को किया गिरफ्तार

एजेंसी

देहरादून/नैनीताल : उत्तराखंड के नैनीताल जिला स्थित हल्द्वानी के बनभूलपूरा में हिंसा के बाद वहां की स्थिति नियंत्रण में है। यह पूरा क्षेत्र पुलिस और आईटीबीपी के हवाले है। कर्फ्यू के क्षेत्र की सीमा में शनिवार सुबह से संशोधन किया गया है। अब बनभूलपुरा क्षेत्र को छोड़कर जहां अन्य क्षेत्रों में कर्फ्यू हटा दिया गया है वहीं हल्द्वानी के बनभूलपुरा मामले में नैनीताल पुलिस ने पांच उपद्रवी गिरफ्तार किये हैं। अति आवश्यक सामग्री की आपूर्ति सामान्य चल रही है। साथ ही शासन ने कुमाऊं आयुक्त को हल्द्वानी के बनभूलपुरा में हुई घटना की मजिस्ट्रेटी जांच के आदेश दिये हैं।
एसएसपी प्रह्लाद नारायण मीणा ने बताया कि हल्द्वानी के बनभूलपुरा क्षेत्र में गत 8 फरवरी को घटित हिंसा की घटना के मामले में नैनीताल पुलिस ने तीन अभियोग पंजीकृत किये हैं। इनमें से एक अभियोग नगर निगम और दो पुलिस की तहरीर पर पंजीकृत किये गये हैं। सीसीटीवी एवं अन्य साक्ष्यों के आधार पर पांच अभियुक्तों की गिरफ्तारी की गई है। अन्य आरोपितों की गिरफ्तारी हेतु टीमें गठित की गयी हैं जो गिरफ्तारी के लिए कार्य कर रही हैं।
नैनीताल पुलिस ने 19 नामजद सहित हजारों अज्ञात लोगों पर मुकदमा दर्ज किया है। इस घटना में शामिल उपद्रवियों को चिन्हित कर राज्य सरकार राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (रासुका) के तहत कार्रवाई करेगी। घटना के बाद से राज्य भर में हाई अलर्ट जारी कर दिया किया गया है। नैनीताल की जिलाधिकारी वंदना की ओर से जारी आदेश में क्षेत्र की वर्तमान परिस्थितियों का संज्ञान लेते हुए उक्त कर्फ्यू के क्षेत्र की सीमा में संशोधन करते हुए सीमित किया गया है।

हल्द्वानी में कर्फ्यू क्षेत्र छोड़कर अन्य स्थानों में गैस आपूर्ति सुचारु

हल्द्वानी में कर्फ्यू क्षेत्र छोड़कर अन्य स्थानों में गैस आपूर्ति सुचारू है। इंटरनेट बंद होने के चलते उपभोक्ता मोबाइल काल से गैस बुकिंग कर सकते हैं। कुमाऊं मंडल विकास निगम के महाप्रबंधक एपी वाजपेई ने बताया है कि हल्द्वानी में कर्फ्यू क्षेत्र छोड़कर अन्य स्थानों में गैस आपूर्ति सुचारु है। इंटरनेट बंद होने के चलते उपभोक्ता गैस एजेंसी में सीधे संपर्क कर गैस बुकिंग कर सकते हैं। उन्होंने ऑनलाइन गैस बुकिंग इंटरनेट बंद होने के चलते प्रभावित है, जब तक यह व्यवस्था लागू रहेगी तब तक उपभोक्ता मोबाइल काल के माध्यम से वह एजेंसी से संपर्क कर गैस बुकिंग कर सकते हैं।